संडे स्कूल पाठ्य पुस्तक

7

प्रकाशक :

ब्रदरन संडे स्कूल समिति

- **Brethren Sunday School**
  Text Book-7 (Hindi)

- **All Rights Reserved**

- *Original Text Books Published in Malayalam and English by :*
  The Brethren Sunday School Committee, Kerala

- *Project Co-Ordinator :*
  Jacob Mathen (New York)
  athmamanna@yahoo.com

- *Language Consultant :*
  Dr. Johnson C. Philip

- *Translated by :*
  Dora Alex (Delhi)

- *Copies Available From :*
  *** SBS Camp Centre, Puthencavu,**
  Chengannur, Kerala

  *** Brethren Sunday School Committee**
  P.B. No. 46, Pathanmthitta, Kerala

- *Printed, Published and Distributed By :*
  The Brethren Sunday School Committee

परिचय

बालकों को परमेश्वर के वचन की शिक्षा देने का सामान्य रूप से स्वीकृत तरीका संडे-स्कूल के द्वारा है। यह सुसमाचार के कार्य का एक अभिन्न भाग है। लगभग सभी मसीही समूह अपने सिद्धान्तों की शिक्षा संडे-स्कूल के द्वारा ही देते हैं। व्यवस्थित रूप से तैयार की गई पुस्तकें इसमें विशेष सहायक होती हैं।

परमेश्वर की इच्छानुसार 1966 में कुछ कलीसियाओं के प्राचीनों और संडे-स्कूल के अध्यापकों ने मिलकर इस विषय पर चर्चा की और यह निर्णय लिया गया कि पाठ्य पुस्तकें लिखी जाएं और छापी जाएं। इस कार्य के लिए एक समिति बनाई गई। इनमें 15 सदस्य पाठ्यक्रम समिति के और 12 सदस्य सम्पादकीय समिति के अंग बने। 1967 में पाठ्यक्रम प्रकाशित किया गया। विभिन्न कलीसियाओं के 24 भाइयों ने पाठों को लिखने का उत्तरदायित्व उठाया। समिति उन सबके प्रति अपना आभार प्रकट करती है। जिन्होंने इस कार्य में प्रार्थना और आर्थिक सहायता प्रदान की उनके प्रति भी समिति अत्यंत आभारी है।

हम परमेश्वर पिता का भी धन्यवाद करते हैं और चाहते हैं कि इस कार्य के द्वारा परमेश्वर की महिमा हो और आने वाले पीढ़ियाँ इसके द्वारा आशीष प्राप्त करें।

संडे-स्कूल समिति के लिए

K.K. John B.A.L.T. Kottarakara (President)

P.M. Daniel, Mahopadhyaya, Mylapra (Secretary)

Pathanamthilla

August 1972.

अध्याय विवरण

कक्षा 7 के लिए संडे-स्कूल की पाठ्य पुस्तक को संशोधन के पश्चात् प्रस्तुत करने में हम हर्षित हैं।

ये पाठ मलयालम भाषा में निम्नलिखित भाइयों के द्वारा लिखे गए हैं :

पाठ 1-7	Sri C.V. George, Kulanada
पाठ 8-13	Sri P.M. Daniel, Mylapra
पाठ 14-20	Sri P.I. Kurian, Angamaly
पाठ 21-29	Sri V.P. Jacob, Banglore
पाठ 30-40	Sri V.T. Mathai, Kottayam

संपादक समिति के लिए
S.S. David, President
Dr. O.M. Samuel, Vice President
K.A. Philip, Secretary
M.T. George, Secretary

Pathanamthilla
28 June 2006

प्रस्तावना

आरंभकाल से ही ब्रदरन विश्वासी लोग अपने बच्चों को परमेश्वर का वचन सिखाने को काफी महत्व देते आये हैं। जैसे ही कोई बच्चा 'मम्मी' या 'पापा' बोलने लगता है वैसे ही उसे घर वाले ''यहोवा मेरा चरवाहा है'' जैसी छोटी बाइबल आयतें सिखाना शुरू कर देते हैं, जैसे ही वह नर्सरी में जाने लगता है वैसे ही उसे संडे स्कूल भी भेजना शुरू हो जाता है।

भारत में ब्रदरन मंडलियों की संख्या जब बढ़ने लगी तब कई भाईयों को लगा कि सभी मंडलियों के लिये उपयोगी एक संडे स्कूल पाठ्यक्रम बनाया जाना चाहिये। इस विषय में तत्पर काफी सारे भाईयों ने कई साल पहले **पत्तनमथिट्टा** नामक स्थान पर गॉस्पल हॉल में एकत्रित होकर **''ब्रदरन संडे स्कूल पाठ्यक्रम''** की नींव डाली। अगले कुछ सालों में उन लोगों ने कुल दस कक्षाओं का पाठ्यक्रम मलयालम भाषा में तैयार किया और तब से मलयालमभाषी मंडलियों में इनका व्यापक उपयोग होता आया है।

इस बीच कई भाई-बहनों, मंडलियों एवं **SBS India** की मदद से इन पुस्तकों का अनुवाद अंग्रेजी एवं कई भारतीय भाषाओं में हुआ जिसके कारण इन पाठ्यपुस्तकों का उपयोग और भी व्यापक हो गया। हिंदीभाषी मंडलियों की व्यापकता के कारण हिन्दी संस्करण का सारे भारत में स्वागत हुआ। इस बीच हर जगह से मांग आने लगी कि जल्दबाजी में किये गये हिंदी अनुवाद को अब संशोधित किया जाये। इस मामले में भाई **जेकब मात्तन** ने काफी व्यक्तिगत दिल्चस्पी लेकर यह कार्य बहिन **डोरा एलेक्स** को सौंपा। पुराने अनुवाद का संशोधन करने के बदले यह बहिन सारे दसों पाठ्य पुस्तकों का नया एवं आधुनिक बोलचाल की हिंदी में अनुवाद कर रही हैं। इस कार्य को **ब्रदरन संडे स्कूल समिति**

एवं **SBS India** का पूर्ण अनुमोदन प्राप्त है। बहिन **डोरा एलेक्स** ने अभी तक जितने पुस्तकों का अनुवाद किया है उन सबका मैंने अवलोकन किया एवं उनको बहुत ही सरल, सुलभ एवं सटीक पाया है, मैं इस कार्य के लिये उनका एवं भाई **जेकब मात्तन** का अभिनंदन करता हूँ।

मनुष्य जन्म से ही पापी होता है, नया जन्म पाने के बाद उसे कई साल तक परमेश्वर का वचन सिखाया जाना जरूरी है जिससे कि उसका मन रूपांतर पाकर (रोमियों 12:1, 2) वह सही रीति से सोचने लगे। मुझे पूरा यकीन है कि इस महान कार्य के लिये **ब्रदरन संडे स्कूल पाठ्यक्रम** एकदम उचित माध्यम है। हिंदी के नये संस्करण के छपने से हिंदीभाषी मंडलियों को बच्चों एवं नये विश्वासियों के प्रति अपनी आत्मिक जिम्मेदारी निभाने के लिये 10 अति उत्तम पुस्तकें उपलब्ध हो जायेंगी।

विनीत

शास्त्री जानसन सी फिलिप

विषय सूची

पाठ **पृष्ठ संख्या**

1. शाऊल–1 1
2. शाऊल–2 6
3. दाऊद–1 11
4. दाऊद–2 18
5. दाऊद और अबशालोम 22
6. सुलैमान 27
7. सुलैमान का मंदिर 32
8. यहूदा के राजा–1 36
9. यहूदा के राजा–2 43
10. यहूदा के राजा–3 51
11. यहूदा के राजा–4 57
12. इस्राएल के राजा–1 59
13. इस्राएल के राजा–2 65
14. परमेश्वर का जन 71
15. मीकायाह और सिदकिय्याह 74
16. एलिय्याह–1 77
17. एलिय्याह–2 80
18. एलीशा–1 85
19. एलीशा–2 88

20. गुलामी में जाना, वापसी और मंदिर का पुनर्निर्माण..................... 92
21. तरसुस का शाऊल... 95
22. पौलुस की पहली मिश्नरी यात्रा 99
23. पौलुस की दूसरी मिश्नरी यात्रा 104
24. पौलुस की दूसरी मिश्नरी यात्रा (जारी)................................... 106
25. पौलुस की दूसरी मिश्नरी यात्रा (जारी)................................... 110
26. पौलुस की तीसरी मिश्नरी यात्रा 114
27. पौलुस कैद में.. 118
28. पौलुस की समुद्री यात्रा.. 124
29. पौलुस – रोम में.. 127
30. नए नियम की पत्रियाँ... 130
31. गलातियों, 1, 2 थिस्सलुनीकियों – एक अवलोकन................. 133
32. 1, 2 कुरिन्थियों – एक अवलोकन... 139
33. रोमियों – एक अवलोकन.. 144
34. इफिसियों और कुलुस्सियों – एक अवलोकन.......................... 148
35. फिलेमोन और फिलिप्पियों – एक अवलोकन 152
36. 1-2 तीमुथियुस व तीतुस – एक अवलोकन............................ 157
37. 1-2 पतरस – एक अवलोकन 162
38. याकूब और यहूदा – एक अवलोकन....................................... 167
39. 1, 2, 3 यूहन्ना – एक अवलोकन.. 172
40. इब्रानियों – एक अवलोकन 178

पाठ–1

शाऊल–1

(1 शमूएल 9)

तब सब इस्राएली वृद्ध इकट्ठा होकर रामा में शमूएल के पास जाकर उससे कहने लगे, ''सुन, तू तो अब बूढ़ा हो गया, और तेरे पुत्र तेरी राह पर नहीं चलते, अब हम पर न्याय करने के लिए सब जातियों की रीति के अनुसार हमारे लिए एक राजा नियुक्त कर दे।'' (1 शमू. 8:5)

और यहोवा ने शमूएल से कहा, ''वे लोग जो कुछ तुझ से कहें उसे मान ले, क्योंकि उन्होंने तुझ को नहीं, परन्तु मुझी को निकम्मा जाना है कि मैं उनका राजा न रहूँ।'' (1 शमू. 8:7)

मूसा ने इस्राएलियों को मिस्र देश से निकालने में अगुआई की और यहोशू उन्हें वायदे के देश तक लेकर गया। स्वयं परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था और चुने हुए अगुओं के द्वारा उन पर राज्य किया। परन्तु इस्राएली खुश नहीं थे। वे अपने चारों ओर की जातियों की तरह अपने ऊपर शासन करने के लिए एक राजा को चाहते थे। उनका अगुआ शमूएल बूढ़ा हो चुका था, और उसके पुत्र परमेश्वर का भय नहीं मानते थे। अत: इस्राएल के वृद्ध लोगों ने शमूएल से एक राजा की माँग की। शमूएल इस बात से दु:खी हुआ और परमेश्वर के पास गया।

बिन्यामीन के गोत्र का कीश एक धनी और प्रभावशाली पुरुष था। उसका पुत्र शाऊल पूरे इस्राएल में सबसे लंबा और सबसे सुंदर था। एक दिन कीश के गदहे खो गए और उसने शाऊल से कहा, ''एक सेवक को अपने साथ ले जा, और गदहियों को ढूँढ़ ला।'' तब वह अपने सेवक के साथ कई देशों में हो आया परन्तु गदहियाँ न मिलीं। तब शाऊल ने अपने सेवक से कहा, ''आ, हम लौट चलें, ऐसा न हो कि मेरा पिता गदहियों की चिन्ता छोड़कर हमारी चिन्ता करने लगे।'' सेवक ने उससे कहा, ''सुन, इस नगर में परमेश्वर का एक जन है,

वह हमें हमारा मार्ग बताएगा।'' तब शाऊल और उसका सेवक भेंट लेकर परमेश्वर के जन से मिलने चले। (पूर्वकाल में, इस्राएल में जब कोई परमेश्वर से कुछ पूछने जाता था, तब कहता था, ''चलो, हम दर्शी के पास चलें।'') तब वे जाकर शमूएल से मिले।

शाऊल के आने से एक दिन पहले यहोवा ने शमूएल को यह बिता दिया था और कहा था, ''कल इसी समय मैं तेरे पास बिन्यामीन के देश से एक पुरुष को भेजूंगा, उसी को तू मेरी इस्राएली प्रजा के ऊपर प्रधान होने के लिए अभिषेक करना।'' शाऊल को देखकर शमूएल समझ गया कि यह वही है जिसे परमेश्वर ने राजा होने के लिए चुना है। अतः शमूएल ने उसकी बात का उत्तर दिए बगैर ही उसे एक भोज में ले गया और आमंत्रित लोगों के बीच मुख्य स्थान पर बैठा दिया। फिर शमूएल ने रसोइये से कहा, ''जो टुकड़ा मैं ने तुझे रखने के लिए दिया था उसे ले आ।'' तब रसोइये ने वह लाकर शाऊल के आगे रख दिया। शाऊल ने उस दिन शमूएल के साथ भोजन किया और फिर उन्होंने आपस में बातें कीं।

अगले दिन पौ फटते ही शमूएल ने शाऊल से कहा, ''उठ, मैं तुझ को विदा करूँगा।'' तब वे निकल चले और नगर के सिरे की उतराई पर चलते-चलते शमूएल ने शाऊल से कहा, ''अपने सेवक को हम से आगे बढ़ने की आज्ञा दे, परन्तु तू अभी खड़ा रह कि मैं तुझे परमेश्वर का वचन सुनाऊँ।'' तब शमूएल ने एक कुप्पी तेल लेकर उसके सिर पर उंडेला, और उसे चूमकर कहा, ''यहोवा ने अपनी प्रजा के ऊपर प्रधान होने को तेरा अभिषेक किया है।'' परमेश्वर के इस वचन की पुष्टि करने के लिए शाऊल को तीन चिह्न दिए गए।

पहला, राहेल की कब्र के पास उसे दो पुरुष मिलेंगे और कहेंगे कि उसके पिता की गदहियाँ मिल गई हैं। दूसरा, ताबोर के बांजवृक्ष के पास तीन पुरुष मिलेंगे जो उसे दो रोटी देंगे। तीसरा, जब वह ''परमेश्वर के पहाड़'' पर पहुँचेगा तब नबियों का एक दल नबूवत करते हुए मिलेगा, और परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरेगा और वह भी नबूवत करेगा।

ये तीनों चिह्न उसी दिन पूरे हो गए। तब शमूएल ने प्रजा के लोगों को मिस्पा में यहोवा के पास बुलवाया और उनसे कहा ''यहोवा परमेश्वर यों कहता है, ''मैं तो इस्राएल को मिस्र से निकाल लाया, और तुम को मिस्रियों के हाथ से और सब अन्धेर करने वाले राज्यों के हाथ से तुमको छुड़ाया है, परन्तु तुमने आज अपने परमेश्वर को तुच्छ जाना है। अत: अब तुम गोत्र-गोत्र करके यहोवा के सामने खड़े हो जाओ। तब शमूएल सारे गोत्रों को समीप लाया और चिट्ठी बिन्यामीन के नाम पर निकली। बिन्यामीन के गोत्र को समीप लाने पर चिट्ठी मत्री के कुल के नाम पर निकली। फिर चिट्ठी कीश के पुत्र शाऊल के नाम पर निकली। और जब वह ढूँढ़ा गया, तब न मिला। यहोवा ने उन्हें बताया कि वह सामान के बीच में छिपा हुआ है। तब वे लोग शाऊल को वहाँ से लाए और वह लोगों के बीच में खड़ा हुआ, और वह कंधे से सिर तक सब लोगों से लम्बा था। शमूएल ने लोगों से कहा, ''क्या तुम ने यहोवा के चुने हुए को देखा है कि सारे लोगों में उसके बराबर कोई भी नहीं है?'' तब सब लोग ललकार उठे, ''राजा चिरंजीव रहे।'' तब शमूएल ने लोगों से राजनीति का वर्णन किया और उसे पुस्तक में लिखकर यहोवा के आगे रख दिया।

तब शाऊल गिबा को अपने घर चला गया और उसके साथ एक दल भी गया, जिनके मन को परमेश्वर ने उभारा था। परन्तु कई लुच्चे लोगों ने उसको तुच्छ जाना, परन्तु शाऊल सुनी अनसुनी करके चुप रहा।

तब अम्मोनी नाहाश ने याबेश पर चढ़ाई की, और याबेश के पुरुषों ने नाहाश से कहा, ''हम से वाचा बाँध, और हम तेरी अधीनता मान लेंगे।'' अम्मोनी नाहाश ने उनसे कहा, ''मैं तुम से वाचा इस शर्त पर बाँधूँगा कि मैं तुम सब की दाहिनी आँख फोड़ दूँगा।'' याबेश के वृद्ध लोगों ने उस से कहा, ''हमें सात दिन का समय दे। और यदि हमें कोई बचाने वाला नहीं मिलेगा तो हम तेरे पास आ जाएँगे।'' दूतों ने शाऊल वाले गिबा में आकर लोगों को यह संदेश सुनाया, और सब लोग चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे। जब शाऊल ने यह संदेश सुना, तब परमेश्वर का आत्मा उस पर बल से उतरा। और वह क्रोधित हो गया। उसने एक

जोड़ी बैल लेकर उसके टुकड़े टुकड़े काटे और यह कहकर दूतों के हाथ से इस्राएल के सारे देश में कहला भेजा, ''जो कोई आकर शाऊल और शमूएल के पीछे न हो लेगा, उसके बैलों से ऐसा ही किया जाएगा।'' तब यहोवा का भय लोगों में ऐसा समाया कि वे एक मन होकर निकल आए। इस्राएलियों में से तीन लाख और यहूदियों में से तीस हज़ार पुरुष इकट्ठे हो गए। शाऊल ने लोगों के तीन दल किए, और उन्होंने रात के अंतिम पहर में अम्मोनियों को मारा और विजय प्राप्त की। तब सब लोग गिलगाल को चले और वहाँ राज्य को पुनर्स्थापित किया और यहोवा को मेलबलि चढ़ाए और अत्यंत आनंद मनाया।

शाऊल 30 वर्ष का था जब वह राजा बना। उसने 42 वर्षो तक राज्य किया। परन्तु अपने शासन काल में उसने अनेक गलत कार्य किए।

पलिश्ती इस्राएल से युद्ध करने के लिए इकट्ठे हो गए, और इस्राएली बड़े संकट में पड़ गए। शाऊल सात दिनों तक शमूएल की प्रतीक्षा करता रहा, परन्तु शमूएल गिलगाल में न आया, और लोग उसको छोड़कर जाने लगे। तब शाऊल ने स्वयं होमबलि चढ़ाया। शाऊल याजक नहीं था, और उसे वह कार्य नहीं करना चाहिए था। ज्योंही वह होमबील चढ़ा चुका, तभी शमूएल वहाँ पहुँच गया। शमूएल ने शाऊल से कहा, ''तू ने मूर्खता का काम किया है, तू ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को नहीं माना इसलिए अब तेरा राज्य बना न रहेगा। यहोवा ने अपने लिए एक ऐसे पुरुष को ढूँढ़ लिया है, जो उसके मन के अनुसार है। और उसको अपनी प्रजा पर प्रधान होने को ठहराया है।''

परमेश्वर ने शाऊल को एक और अवसर दिया परन्तु वह विश्वस्त नहीं रहा। शमूएल ने शाऊल से कहा, ''यहोवा ने अपनी प्रजा इस्राएल पर राज्य करने के लिए तेरा अभिषेक किया, इसलिए अब यहोवा की बातें सुन ले। सेनाओं का यहोवा यों कहता है, ''मुझे स्मरण है कि अमालेकियों ने इस्रालियों से क्या किया, जब वे मिस्र से आ रहे थे, तब उन्होंने मार्ग में उनका सामना किया। इसलिए अब तू जाकर अमालेकियों को मार और जो कुछ उनका है, क्या मनुष्य क्या पशु, सब को मार डाल।'' तब शाऊल ने लोगों को इकट्ठा किया और अमालेकियों पर

चढ़ाई कर दी। उनके राजा अगाग को जीवित पकड़ा और अच्छे-अच्छे पशुओं, गाय-बैलों और भेड़-बकरियों को जीवित रहने दिया। तब यहोवा का यह वचन शमूएल के पास पहुँचा, ''मैं शाऊल को राजा बना के पछताता हूँ, क्योंकि उस ने मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं किया।'' तब शमूएल का क्रोध भड़क उठा। और वह शाऊल से मिलने गया। शमूएल ने शाऊल से कहा, ''क्या यहोवा होमबलियों और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से और काम लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। तूने जो यहोवा की बात का तुच्छ जाना, इसलिए उसने तुझे राजा होने के लिए तुच्छ जाना है।''

शाऊल ने शमूएल से कहा, ''मैं ने पाप किया है, मैं ने तो अपनी प्रजा के लोगों का भय मानकर और उनकी बात सुनकर यहोवा की आज्ञा और तेरी बातों का उल्लंघन किया है। परन्तु अब मेरे पाप को क्षमा कर और मेरे साथ लौट आ कि मैं यहोवा को दण्डवत् करूँ। शमूएल शाऊल के साथ जाना न चाहता था इसलिए वह जाने के लिए घूमा। तब शाऊल ने उसके बागे की छोर को पकड़ा और वह फट गया। तब शमूएल ने उससे कहा, ''आज यहोवा ने इस्राएल के राज्य को फाड़कर तुझ से छीन लिया और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझ से अच्छा है, दे दिया है।

प्रश्न :

1. इस्रालियों ने अपने लिए एक राजा की माँग की और यह परमेश्वर की दृष्टि में गलत कार्य था। क्यों?
2. शमूएल, शाऊल से कैसे मिला?
3. शाऊल को इस्राएल का राजा कैसे बनाया गया?
4. राजा शाऊल के जीवन में पहली गलती क्या थी?
5. शाऊल से उसका राज्य क्यों छीना गया?

पाठ–2

शाऊल–2

(1 शमूएल 16, 17)

तब शमूएल ने उससे कहा, ''आज यहोवा ने इस्राएल के राज्य को फाड़कर तुझ से छीन लिया, और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझ से अच्छा है, दे दिया है। और जो इस्राएल का बलमूल है वह न तो झूठ बोलता और न पछताता है, क्योंकि वह मनुष्य नहीं है कि पछताए।'' उसने कहा, ''मैं ने तो पाप किया है, तौभी मेरी प्रजा के पुरनियों और इस्राएल के सामने मेरा आदर कर, और मेरे साथ लौट कि मैं तेरे परमेश्वर यहोवा को दण्डवत् करूँ।'' (1 शमूएल 15:28–30)

''क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है। मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।'' (1 शमूएल 16:7)

शाऊल के विद्रोह और परमेश्वर के द्वारा उसे तज दिए जाने के बाद परमेश्वर ने शमूएल को अगले राजा का अभिषेक करने का उत्तरदायित्व सौंप दिया। यहोवा ने शमूएल से कहा, ''अपने सींग में तेल भरकर चल, मैं तुझ को बैतलहमवासी यिशै के पास भेजता हूँ, क्योंकि मैं ने उसके पुत्रों में एक को राजा होने के लिए चुना है।''

परमेश्वर ने दाऊद को चुना और शमूएल ने उसका अभिषेक किया। उस दिन से लेकर भविष्य को यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा।

यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया, और एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा। तब शाऊल ने किसी अच्छे वीणा–वादक को ढूँढ़ा और किसी ने उसे दाऊद के बारे में बताया कि वह बहुत निपुण वीणा–वादक है। शाऊल ने दाऊद को बुलवा लिया। और जब–जब शाऊल

उस दुष्टात्मा से ग्रसित होता था, तब-तब दाऊद वीणा बजाता और वह दुष्ट आत्मा शाऊल पर से हट जाता और उसे चैन मिलता था। शाऊल ने दाऊद से प्रसन्न होकर उसे अपना हथियार ढोने वाला नियुक्त कर दिया।

अब पलिश्तियों ने इस्राएल से युद्ध करने के लिए अपनी सेनाओं को इकट्ठा किया। शाऊल और इस्राएली पुरुषों ने भी एला नामक तराई में डेरे डाले और युद्ध की तैयारी की। तब पलिश्तियों की छावनी में से गोलियत नामक एक वीर निकला जो 9 फुट 9 इंच लंबा था और भारी भरकम शस्त्रों से लैस था। वह खड़ा होकर इस्राएलियों को ललकार रहा था। दाऊद ने भी उस ललकार को सुना। वह अपने भाइयों के लिए भोजन वस्तु लेकर वहाँ गया था क्योंकि वे शाऊल की सेना में थे। दाऊद ने लोगों से पूछा, ''जो उस पलिश्ती को मार डालेगा उसे क्या पुरस्कार मिलेगा?'' यह सुनकर दाऊद के बड़े भाई एलीआब ने उसे डाँटा। परन्तु दाऊद की बातों की चर्चा शाऊल तक पहुँच गई और शाऊल ने उसे बुलवा लिया। तब दाऊद ने शाऊल से कहा, ''किसी मनुष्य को उस पलिश्ती से डरने की आवश्यकता नहीं है। तेरा दास जाकर उससे लड़ेगा।'' दाऊद अपने भीतर परमेश्वर की सामर्थ को जान चुका था अतः उसने कहा, ''यहोवा, जिसने मुझे सिंह और भालू के पंजे से बचाया है, वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से भी बचाएगा।'' शाऊल की आज्ञा पाकर दाऊद गया और उसने उस पलिश्ती को मार डाला।

इस विजय के बाद शाऊल दाऊद को अपने राजमहल में ले आया। तब शाऊल के बड़े पुत्र योनातान और दाऊद के बीच बहुत गहरी दोस्ती हो गई। योनातान ने अपने राजसी वस्त्र और हथियार भी दाऊद को दे दिए। तब सब इस्राएली नगरों से स्त्रियाँ डफ और बाजे लेकर आनन्द से गाती और नाचती हुई शाऊल राजा के स्वागत् के लिए निकलीं और वे यह गाती गईं : ''शाऊल ने तो हज़ारों को परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा है।''

यह सुनकर शाऊल जलन से भर गया और बहुत क्रोधित हो गया।

उसने तीन बार दाऊद को मार डालने का प्रयत्न किया, परन्तु परमेश्वर ने उसे शाऊल के हाथ से बचा लिया। शाऊल की बेटी मीकल जो दाऊद की पत्नी थी, उसने दाऊद को भाग जाने में उसकी सहायता की।

दाऊद, शमूएल से मिलने रामा को चला गया। शाऊल ने दाऊद को मार डालने के लिए तीन बार लोगों को भेजा, परन्तु वे असफल रहे।

योनातान ने अपने पिता शाऊल और दाऊद के बीच मेल करवाने का प्रयत्न किया, परन्तु शाऊल ने योनातान से क्रोधित होकर उसको मार डालना चाहा। योनातान ने दाऊद को अपने पिता शाऊल की योजना के बारे में बताया कि वह दाऊद को मार डालना चाहता है तब दाऊद भागा और नोब देश के अहीमेलेक याजक के पास आया। याजक ने उसे यहोवा के सम्मुख से उठाई, भेंट की पवित्र रोटी दी। उस दिन वहाँ दोएग नामक शाऊल का एक कर्मचारी यहोवा के आगे रुका हुआ था। उसने यह खबर शाऊल तक पहुँचा दी। शाऊल ने याजकों के नगर नोब के स्त्रियों, पुरुषों, बालकों और पशुओं को मार डाला, और सनीवाला एपोद पहने हुए पचासी याजकों को भी मरवा डाला। अहीमेलेक का एक पुत्र एब्यातार बच कर भागा और उसने दाऊद को बताया कि शाऊल ने यहोवा के याजकों का वध किया है। दाऊद अपने छः सौ योद्धाओं के साथ जंगल में रहने लगा और शाऊल उसे प्रतिदिन ढूँढ़ता रहा। परन्तु परमेश्वर ने उसे उसके हाथ में न पड़ने दिया।

तब शाऊल अपने साथ तीन हज़ार लोगों को छाँटकर दाऊद और उसके जनों को बनैले बकरों की चट्टान पर खोजने गया। मार्ग में एक गुफा थी, और शाऊल दिशा फिरने को उसके भीतर गया। उसी गुफा के कोनों में दाऊद और उसके जन बैठे हुए थे। दाऊद ने शाऊल को कोई हानि नहीं पहुँचाई क्योंकि वह शाऊल को परमेश्वर का अभिषिक्त मानता था। परन्तु दाऊद ने शाऊल के बागे की छोर को छिपकर काट लिया। जब शाऊल को यह बात पता चली तब वह चिल्लाकर रोने लगा और उसने दाऊद से कहा, ''तू मुझ से अधिक धर्मी है। तू ने तो मेरे साथ भलाई की है, परन्तु मैं ने तेरे साथ बुराई की। और अब मुझे मालूम

हुआ है कि तू निश्चय राजा हो जाएगा, और इस्राएल का राज्य तेरे हाथ में स्थिर होगा।'' (24:20)।

पलिश्तियों ने फिर इस्राएल के विरुद्ध शूनेम में छावनी डाली। शाऊल अत्यंत भयभीत हो गया। शमूएल की मृत्यु हो चुकी थी। शाऊल ने परमेश्वर से पूछा, तब परमेश्वर ने उसे कोई उत्तर न दिया। तब शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, ''मेरे लिए किसी भूत-सिद्धि करने वाली को ढूँढ़ो, कि मैं उसके पास जाकर उस से पूछूँ।'' उसके कर्मचारियों ने उससे कहा, ''एन्दोर में एक भूत-सिद्धि करने वाली रहती है।'' तब शाऊल ने अपना भेष बदला और दो मनुष्यों को संग लेकर उस स्त्री के पास पहुँचा और उस से कहा, ''शमूएल को मेरे लिए बुला।'' शमूएल ने शाऊल से कहा, ''जब यहोवा तुझे छोड़कर तेरा शत्रु बन गया, तब तू मुझसे क्यों पूछता है? यहोवा ने तेरे हाथ से राज्य छीनकर तेरे पड़ोसी दाऊद को दे दिया है।'' तू ने जो यहोवा की बात न मानी और न अमालेकियों को उसके भड़के हुए कोप के अनुसार दण्ड दिया था, इस कारण यहोवा ने तुझसे आज ऐसा बर्ताव किया। फिर यहोवा तुझ समेत इस्राएलियों को पलिश्तियों के हाथ में कर देगा। और तू अपने बेटों समेत कल मेरे साथ होगा।

शमूएल की भविष्यद्वाणी के अनुसार ही पलिश्तियों ने बड़ी आसानी से इस्राएलियों को युद्ध में पराजित कर दिया। पलिश्तियों ने गिलबो नाम पहाड़ पर शाऊल के चार पुत्रों में से तीन को मार डाला। धनुर्धारियों ने शाऊल को बुरी तरह घायल कर दिया। तब शाऊल ने अपने हथियार ढोने वाले से कहा, ''अपनी तलवार निकाल कर मुझे भोंक दे।'' परन्तु जब उसने इन्कार कर दिया तब शाऊल ने अपनी तलवार खड़ी की और उस पर गिर पड़ा और आत्महत्या कर ली। यह देखकर उसके हथियार ढोने वाले ने भी वैसा ही किया और मर गया। अपने राजा की मौत का समाचार सुनकर इस्राएली लोग अपने-अपने नगरों को छोड़कर जंगलों में भाग गए। पलिश्तियों ने आकर शाऊल का सिर काटा और उसके हथियारों को अश्तोरेत नाम देवियों के मंदिर में रख दिए और

उसकी लाश को बेतशान की शहरपनाह में जड़ दिया।

जब गिलादवाले याबेश के निवासियों ने यह सुना तब उनके शूरवीरों ने रातोंरात जाकर शाऊल और उसके पुत्रों की मृत देहों को बेतशान की शहरपनाह से निकालकर याबेश में ले आए और आदर के साथ उनका अंतिम संस्कार कर दिया और सात दिन तक उपवास किया।

शाऊल के जीवन के अंतिम दिन बड़े निराशापूर्ण और पछतावे से भरे हुए थे। और अंत में उसने आत्महत्या कर ली। उसके जीवन में पराजय के जो कारण थे वही आज अनेकों के जीवन में लागू होते हैं। वह अपनी परिस्थितियों के सामने झुका, वह अपने स्वयं के आगे झुका, वह दूसरों के सामने भी झुका, परन्तु उसने परमेश्वर के सामने झुकने से इनकार कर दिया।

प्रश्न :

1. दाऊद नायक कैसे बना?
2. शाऊल क्यों दाऊद के प्रति ईर्ष्यालु हो गया?
3. दाऊद ने शाऊल को हानि क्यों नहीं पहुँचाई, यद्यपि उसका शत्रु उसकी पहुँच में ही था?
4. सनीवाला एपोद पहने हुए पचासी याजकों को शाऊल ने क्यों मार डाला?
5. शाऊल के जीवन का अंत कैसे हुआ?
6. शाऊल के जीवन की असफलताएँ क्या-क्या थीं?

पाठ-3

दाऊद-1

(1 शमूएल 16)

''और यह समस्त मंडली जान लेगी कि यहोवा तलवार वा भाले के द्वारा जयवन्त नहीं करता, इसलिए कि संग्राम तो यहोवा का है, और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा।'' (1 शमूएल 17:47)

और यहोवा ने शमूएल से कहा, ''मैं ने शाऊल को इस्राएल पर राज्य करने के लिए तुच्छ जाना है, तू कब तक उसके विषय विलाप करता रहेगा? अपने सींग में तेल भर के चल, मैं तुझ को बेतलेहेमी यिशै के पास भेजता हूँ, क्योंकि मैं ने उसके पुत्रों में से एक को राजा होने के लिए चुना है।'' (1 शमूएल 16:1)

धर्मशास्त्र में केवल दाऊद ही वह व्यक्ति है जिसका स्मृति लेख कहता है-''एक पुरुष, जो परमेश्वर के मन के अनुसार है'' जिससे यह प्रतीत होता है कि वह अलौकिक गुणों से भरा हुआ था। परन्तु ऐसा नहीं था। परमेश्वर अपने दासों का चुनाव उनके असामान्य गुणों के कारण नहीं करते। परमेश्वर के मार्ग मनुष्यों के तर्क के विपरीत हैं। जैसे कि एक चरवाहे बालक का राजा बनने के लिए चुना जाना। यह परमेश्वर का चुनाव था जो मनुष्यों के तर्कों पर नहीं, परन्तु दाऊद के हृदय के तीन महत्वपूर्ण और आवश्यक योग्यताओं पर आधारित था-आत्मिकता, नम्रता और सत्यनिष्ठा।

जब शाऊल की असफलताओं ने शमूएल को दुःखी कर दिया तब परमेश्वर ने शमूएल को झिड़का और अपनी योजना बताई-''मैं ने शाऊल को इस्राएल पर राज्य करने के लिए तुच्छ जाना है, तू कब तक उसके विषय विलाप करता रहेगा? अपने सींग में तेल भर के चल; मैं तुझ को बेतलेहेमी यिशै के पास भेजता हूँ, क्योंकि मैंने उसके पुत्रों में से एक को राजा होने के लिए चुना है।''

एक विरोधी राजा का चुनाव करने के विचार से ही शमूएल भय से

काँप उठा। परन्तु आज्ञाकारी शमूएल ने वही किया जो परमेश्वर ने उससे कहा, और वह बेतलेहेम पहुँच गया। उस नगर के पुरनिए थरथराते हुए उस से मिलने को गए और कहने लगे कि तू मित्रभाव से आया है कि नहीं। शमूएल ने उन से कहा, ''मैं यहोवा के लिए यज्ञ करने को आया हूँ, तुम अपने अपने को पवित्र करके मेरे साथ यज्ञ में आओ।'' तब शमूएल ने यिशै और उसके पुत्रों को पवित्र करके यज्ञ में आने का न्योता दिया—जहाँ परमेश्वर अपने चुने हुए व्यक्ति को दिखाने वाले थे। जब वे आए तब शमूएल ने एलीआब को देखकर सोचा कि यही वह व्यक्ति होगा जिसे परमेश्वर ने चुना है। फिर यिशै का दूसरा पुत्र अबीनादाब आया। फिर अगला आया। और इस प्रकार यिशै के सात बेटे आए परन्तु शमूएल ने कहा कि परमेश्वर ने उन्हें नहीं चुना। तब शमूएल ने यिशै से पूछा, ''क्या सब लड़के आ गए?'' यिशै ने कहा, ''सबसे छोटा रह गया है, वह भेड़-बकरियों को चरा रहा है।'' शमूएल के कहने पर उसे बुलवाया गया। शमूएल ने देखा कि दाऊद का रूप सुडौल था। उसके लाली झलकती थी और उसकी आँखें सुंदर थीं। परमेश्वर ने शमूएल से कहा, ''उठकर इसका अभिषेक कर। यही है। तब शमूएल ने अपना तेल का सींग लेकर उसके भाइयों के मध्य में उसका अभिषेक किया। फिर दाऊद तब तक भेड़-बकरियाँ चराता रहा जब तक कि यहोवा ने उसे राजगद्दी न दी।

यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया और एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा। शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, एक उत्तम बजवैया देखो और उसे मेरे पास लाओ। तब एक जवान ने राजा को दाऊद के बारे में बताया जो अच्छा वीणा वादक था। तब शाऊल ने दाऊद को बुलवाया। दाऊद शाऊल के पास जाकर उसके सामने उपस्थित रहने लगा। और शाऊल उससे बहुत प्रीति करने लगा, और वह राजा का हथियार ढोने वाला हो गया। एक ईमानदार चरवाहा अब राजा का एक नम्र और विश्वस्त सेवक बन गया था।

दाऊद और गोलियत :

अब पलिश्तियों ने युद्ध के लिए अपनी सेनाओं को इकट्ठा किया

और इस्राएलियों ने भी उनके विरुद्ध डेरे डाले। पलिश्ती एक तरफ के पहाड़ पर और इस्राएली दूसरी ओर के पहाड़ पर खड़े रहे, और दोनों के बीच तराई थी। तब पलिश्तियों की छावनी में से एक वीर गोलियत नाम निकला जो नौ फुट नौ इंच लंबा था। उसके शस्त्र भी बहुत भारी थे। वह खड़ा होकर इस्राएली पांतियों को ललकार के बोला, ''अपने में से एक पुरुष चुनो, कि वह मेरे पास उतर आए। यदि वह मुझसे लड़कर मुझे मार सके, तब तो हम तुम्हारे अधीन हो जाएँगे, परन्तु यदि मैं उस पर प्रबल होकर मारूँ, तो तुम को हमारे अधीन होकर हमारी सेवा करनी पड़ेगी।'' उस पलिश्ती की इन बातों को सुनकर शाऊल और समस्त इस्राएलियों का मन कच्चा हो गया, और वे अत्यंत डर गए।

यिशै ने अपने पुत्र दाऊद से कहा कि भोजन लेकर अपने भाइयों के पास छावनी में दौड़ जा और उनका हाल चाल पूछ कर आ। दाऊद ने पड़ाव में पहुँचकर अपनी सामग्री को सामान के रखवाले को दे दिया और रणभूमि में दौड़ गया। वहाँ पहुँचकर उसने अपने भाइयों का कुशल क्षेम पूछा। तभी उसने देखा कि गोलियत इस्राएली सेना को ललकार रहा था। दाऊद ने अपने पास खड़े लोगों से पूछा, कि जो उस पलिश्ती को मार डालेगा उसे क्या मिलेगा। वह खतनारहित पलिश्ती तो क्या है कि जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारे? उसकी बातें सुनकर उसके बड़े भाई एलीआब ने उसे बहुत डाँटा। तब दाऊद की बातें शाऊल को बताई गई और शाऊल ने दाऊद को बुलवाया। तब दाऊद ने शाऊल से कहा, ''तेरा दास जाकर उस पलिश्ती से लड़ेगा। तेरा दास अपने पिता की भेड़-बकरियाँ चराता था और जब कोई सिंह वा भालू झुंड में से मेम्ना उठा ले गया, तब मैंने उसका पीछा करके उसे मारा और मेम्ने को उसके मुँह से छुड़ाया, और जब उसने मुझ पर चढ़ाई की, तब मैंने उसके केश पकड़कर उसे मार डाला। तेरे दास ने सिंह और भालू दोनों को मार डाला, और वह खतनारहित पलिश्ती उनके समान हो जाएगा, क्योंकि उसने जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारा है। यहोवा जिसने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजों से बचाया है, वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से भी बचाएगा।'' शाऊल ने दाऊद से कहा, ''जा, यहोवा तेरे

साथ रहे।'' तब दाऊद ने अपनी लाठी हाथ में ले नाले में से पाँच चिकने पत्थर छाँटकर अपनी चरवाही की थैली में रखे, और अपना गोफन हाथ में लेकर पलिश्ती के निकट चला। जब पलिश्ती ने दाऊद को देखा तो उसे तुच्छ जाना और अपने देवताओं के नाम लेकर दाऊद को कोसने लगा। दाऊद ने पलिश्ती से कहा, ''तू तो तलवार और भाला लेकर आता है, परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूँ। संग्राम तो यहोवा का है, और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा।'' फिर दाऊद ने अपनी थैली में से एक पत्थर निकाला, और उसे गोफन में रखकर पलिश्ती के माथे पर ऐसा मारा कि पत्थर उसके माथे के भीतर घुस गया, और वह भूमि पर गिर पड़ा। तब दाऊद दौड़कर उस पलिश्ती के ऊपर खड़ा हुआ और उसकी तलवार निकालकर उसका सिर काटा डाला। ये देखकर सारे पलिश्ती भाग गए।

इस घटना ने दाऊद के जीवन को पूरी तरह से बदल दिया। अचानक वह चरवाहे से नायक बन गया था। परमेश्वर उसे अपने जन के रूप में तराश रहे थे। इस विजय के बाद शाऊल ने दाऊद को अपनी सेना का सेनापति बना दिया। दाऊद ने पूरी तन्मयता और ईमानदारी के साथ अपना कार्य किया। परमेश्वर ने उसे एक अच्छा मित्र दिया जो शाऊल का पुत्र योनातन था। लोगों की दृष्टि में दाऊद एक नायक था। वे उसकी अगुआई में प्रसन्न थे। स्त्रियों ने भी उसकी प्रशंसा में गाया–''शाऊल ने तो हज़ारों को, परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा है।''

तथापि दाऊद की कीर्ति से शाऊल अप्रसन्न हो गया। उसने कहा, ''उन्होंने दाऊद के लिए तो लाखों और मेरे लिए हज़ारों ही ठहराया, इसलिए अब राज्य को छोड़कर उसको अब क्या मिलना बाकी है?'' तब उस दिन से वह दाऊद को मार डालने की ताक में लगा रहा। दो बार शाऊल ने दाऊद पर भाला चलाया परन्तु दाऊद बच गया क्योंकि यहोवा उसके साथ था। दाऊद वहाँ से निकलकर चला और अदुल्लाम की गुफा में पहुँचकर बच गया। (वहाँ पर दाऊद ने क्या किया? भजन 34 और उसका परिचय पढ़ें।) तब जितने लोग संकट में थे, और जितने ऋणी थे, जितने उदास थे वे सब उसके पास इकट्ठे हुए, और वह

उनका प्रधान बन गया। लगभग चार सौ लोग दाऊद के पीछे हो लिए।

एक बार दाऊद एनगदी के जंगल में छिपा हुआ था तब उसे शाऊल को मार डालने का एक सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। परन्तु उसने निश्चय किया कि वह परमेश्वर के अभिषिक्त पर हाथ नहीं उठाएगा। अपने साथियों को भी दाऊद ने घुड़का और शाऊल की हानि करने न दिया। दाऊद के इस निर्णय के कारण परमेश्वर ने उसे आशीष दी। उन्हीं दिनों में शमूएल की मृत्यु हो गई और इस्राएलियों ने उसके घर ही में जो रामा में था, उसको मिट्टी दी। दुःखी और थका हुआ दाऊद अपने लोगों के साथ पारान नाम जंगल को चला गया। वहाँ रहकर वे आसपास के स्थानीय लोगों की धन संपत्ति और पशुओं की उनके शत्रुओं से रक्षा करते रहे। उसके बदले में उसे और उसके साथियों को भोजन वस्तु प्राप्त होता था।

माओन में एक धनी पुरुष रहता था। उसके तीन हज़ार भेड़ें और एक हज़ार बकरियाँ थीं। और वह अपनी भेड़ों का ऊन कतर रहा था। उस पुरुष का नाम नाबाल था। वह कठोर और बुरे-बुरे काम करने वाला था। उसके नाम का अर्थ है–'मूर्ख'। परन्तु उसकी पत्नी अबीगैल बुद्धिमान और रूपवती थी। उसके नाम का अर्थ है–'जिसका पिता आनंद है'। अपने पति के स्वभाव के विपरीत, वह अच्छी, दयालु और दानी थी। जब दाऊद ने सुना कि नाबाल अपनी भेड़ों का ऊन कतर रहा है, तब दाऊद ने दस जवानों को वहाँ भेज दिया और उन से कहा, ''नाबाल से कहो कि तेरा कल्याण हो। मैंने सुना है कि तू ऊन कतर रहा है। तेरे चरवाहे हम लोगों के पास रहे और न तो हम ने उनकी कुछ हानि की और न उनका कुछ खोया गया। सो इन जवानों पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो। हम तो आनंद के समय में आए हैं, इसलिए जो कुछ तेरे हाथ लगे वह अपने दासों को और अपने बेटे दाऊद को दे।'' जवानों ने नाबाल के पास जाकर ये बातें कहीं, परन्तु नाबाल ने उन्हें उत्तर दिया, ''दाऊद कौन है? यिशै का पुत्र कौन है? आजकल बहुत से दास अपने स्वामी के पास से भाग जाते हैं। क्या मैं अपनी रोटी-पानी ऐसे लोगों को दे दूँ जिन्हें मैं नहीं जानता?'' जब जवानों ने लौटकर दाऊद को नाबाल का

उत्तर सुनाया तब उसने उनसे कहा, ''अपनी-अपनी तलवार बाँध लो'' लगभग चार सौ पुरुष अपनी तलवार बाँधकर दाऊद के पीछे चले।

परन्तु एक सेवक ने नाबाल की पत्नी अबीगैल को बताया कि दाऊद ने जंगल से हमारे स्वामी को आशीर्वाद देने के लिए दूत भेजे थे, और उसने उन्हें ललकार दिया। परन्तु वे मनुष्य हम से बहुत अच्छा बर्ताव रखते थे, और जब तक हम मैदान में रहते हुए उनके पास आया जाया करते थे, तब तक न तो हमारी कुछ हानि हुई और न हमारा कुछ खोया गया। वे रात-दिन हमारी आड़ बने रहे। इसलिए अब सोच-विचार कर कि क्या करना चाहिए। तब अबीगैल ने फुर्ती से ढेर सारी रोटी, दाखमधु, अनाज, माँस, किशमिश और अंजीरों की टिकियाँ लेकर गदहों पर लदवाई। और जवानों सहित दाऊद के पास पहुँच गई। दाऊद को देखकर वह गदहे पर से उतर गई और बड़े आदर के साथ उसके पाँवों पर गिरके उससे अपने पति के लिए क्षमा माँगी। दाऊद का क्रोध दूर हो गया और उसने वह सब ग्रहण किया जो वह दाऊद और उसके साथियों के लिए लायी थी। अबीगैल वापस अपने घर लौट गई। दस दिन पश्चात् यहोवा ने नाबाल को ऐसा मारा कि वह मर गया। नाबाल के मरने का हाल सुनकर दाऊद ने लोगों को अबीगैल के पास भेजा कि वे उससे दाऊद की पत्नी होने के लिए बातचीत करें। तब अबीगैल उठी और दाऊद के दूतों के संग गई और दाऊद की पत्नी बन गई।

1 शमूएल 31 में हम शाऊल की मृत्यु के विषय में पढ़ते हैं। जब दाऊद ने शाऊल की मृत्यु की बात सुनी तब वह बहुत दुःखी हुआ। शाऊल के साथ ही अपने प्रिय मित्र योनातन की मृत्यु का भी दाऊद ने शोक मनाया। तब वह अगुआई के लिए परमेश्वर के पास गया और पूछा, ''क्या मैं यहूदा के किसी नगर में जाऊँ?'' यहोवा ने उससे कहा, ''हेब्रोन में जा।'' तब दाऊद और उसके साथी अपने-अपने घराने समेत वहाँ गए और हेब्रोन के गाँवों में रहने लगे। और यहूदी लोग गए और वहाँ राजा होने के लिए दाऊद का अभिषेक किया।

परमेश्वर ने दाऊद के विषय में कहा, ''मुझे एक मनुष्य मेरे मन के

अनुसार मिल गया है।'' प्रेरितों. 13:22। हम देखते हैं कि दाऊद का हृदय भी परमेश्वर से लगा हुआ था। उसका प्राण परमेश्वर की अभिलाषा करता था। उसका प्राण परमेश्वर के कारण ही संतुष्ट होता था।

दाऊद अक्सर पलिश्तियों से युद्ध करने के लिए अपनी सेना की अगुआई करते हुए युद्धभूमि में ही रहता था। परन्तु वह परमेश्वर से इतना प्रेम करता था कि एक मंदिर बनाना चाहता था। परमेश्वर ने उससे कहा कि वह नहीं बल्कि उसका पुत्र ही परमेश्वर के नाम का भवन भवन बनवाएगा। परन्तु परमेश्वर ने उसे अनुमति दी कि वह मंदिर बनवाने के लिए आवश्यक वस्तुओं का प्रबंध करे। मंदिर बनाने के विषय में दाऊद परमेश्वर के नियमों को समझ गया। यह बात हमें सिखाती है कि हमें किस प्रकार जीवित परमेश्वर की कलीसिया में व्यवहार करना चाहिए क्योंकि वह 'परमेश्वर का भवन' है और जो सत्य का खंभा और नेव है।'' 1 तीमुथियुस 3:15

प्रश्न :

1. उन परिस्थितियों का वर्णन करें जिनमें राजा के रूप में दाऊद का अभिषेक किया गया?
2. जब दाऊद चरवाहा था तब उसने कौन से महान कार्य किए?
3. दाऊद और गोलियत के बीच हुए युद्ध का वर्णन करें।
4. अबीगैल दाऊद की पत्नी कैसे बनी?
5. परमेश्वर का भवन बनाने के लिए दाऊद की इच्छा पूरी न हो सकी। उसका कारण बताएँ।

पाठ–4

दाऊद–2

(1 शमूएल 18:1–5; 20:1–23; 23:16–18; 31:2)

''इसी कारण, यीशु ने भी उन लोगों को अपने ही लोहू के द्वारा पवित्र करने के लिए फाटक के बाहर दु:ख उठाया। सो आओ, उसकी निंदा अपने ऊपर लिए हुए छावनी के बाहर उसके पास निकल चलें।'' (इब्रानियों 13:12–13)

''यह बात सच है, कि यदि हम उसके साथ मर गए हैं, तो उसके साथ जीएँगे भी।'' (2 तीमुथियुस 2:11)

दाऊद और योनातन :

योनातन शाऊल का पुत्र था। योनातन नाम का अर्थ है–''परमेश्वर ने दिया''। परमेश्वर ने दाऊद को एक अच्छा मित्र दिया–योनातन। (1 शमूएल 18:1) इन जवान पुरुषों की मित्रता की चार विशेषताएँ थीं।

1. त्याग की भावना : दाऊद से उम्र में अधिक होने और स्वयं एक महान योद्धा होने के बावजूद भी योनातन ने दाऊद को अपनी बराबरी का मानकर उसके साथ पीढ़ियों तक की मित्रता की वाचा बाँधी। और उसके प्रति अपनी लगन के रूप में योनातन ने दाऊद को अपना बागा, अपनी तलवार, धनुष और कटिबंध भी दे दिए। उसने दाऊद में उन दिव्य आशीषों और राजसी गुणों को देखा जो उसके पिता शाऊल ने खो दिए थे।

2. विश्वस्त सुरक्षा : शाऊल ने अनेक बार दाऊद को मार डालने का प्रयत्न किया, परन्तु योनातन ने हिम्मत के साथ अपने मित्र की सुरक्षा की। उसका जीवन हमें सिखाता है कि एक सच्चा मित्र प्रेम और ईमानदारी के कारण हमारी सुरक्षा करता है।

3. सच्चा प्रेम : शाऊल दाऊद को मार डालना चाहता था, इस कारण दाऊद वहाँ से भाग जाना चाहता था। अपने दोस्त से अलग होना

दाऊद को बहुत दुखी कर गया। वे एक दूसरे को चूमकर बहुत रोए, परन्तु दाऊद का रोना अधिक था। उन्होंने यहोवा के नाम से एक दूसरे के साथ वाचा बाँधी।

4. निरंतर प्रोत्साहन : शाऊल के भय से जब दाऊद भागता और छिपता फिर रहा था, तब योनातन ने उसके पास जाकर उसे प्रोत्साहन दिया। योनातन ने दाऊद से कहा, ''मत डर, क्योंकि तू मेरे पिता शाऊल के हाथ में न पड़ेगा, और तू ही इस्राएल का राजा होगा, और मैं तेरे नीचे हूँगा। और इस बात को मेरा पिता शाऊल भी जानता है।'' तब उन दोनों ने यहोवा की शपथ खाकर आपस में वाचा बाँधी। तब दाऊद होरेश में रह गया और योनातन अपने घर चला गया।

दाऊद और मपीबोशेत : इस कहानी के पीछे दाऊद के दो वायदे हैं। एक जो उसने अपने प्रिय मित्र से किया और दूसरा जो उसने अपने शत्रु से किया। पहला वायदा दाऊद और योनातन के बीच था। योनातन जानता था कि उसका मित्र दाऊद एक दिन राजा बनेगा। अत: उसने दाऊद से कहा, ''मेरे घराने पर से अपनी कृपा दृष्टि कभी न हटाना। वरन् जब यहोवा दाऊद के हर एक शत्रु को पृथ्वी पर से नष्ट कर चुकेगा, तब भी ऐसा न करना।'' दाऊद ने योनातन को इस बात का वचन दिया।

दूसरा वायदा दाऊद और शाऊल के बीच में था। शाऊल भी अपने हृदय में इस बात को जानता था कि किसी दिन दाऊद राजा बन जाएगा। अत: उसने दाऊद से कहा, ''अब मुझ से यहोवा की शपथ खा, कि मैं तेरे वंश को तेरे बाद नष्ट न करूँगा, और तेरे पिता के घराने में से तेरा नाम मिटा न डालूँगा।'' तब दाऊद ने शाऊल से ऐसी ही शपथ खाई।

फिर शाऊल और योनातन युद्ध में मारे गए। दाऊद इस्राएल का राजा बन गया। परन्तु दाऊद ने पूछा, ''क्या शाऊल के घराने में से कोई अब तक बचा है, जिसको मैं योनातन के कारण प्रीति दिखाऊँ?'' तब सीबा ने, जो पहले शाऊल के घराने का कर्मचारी था, दाऊद को उत्तर दिया, ''हाँ, योनातन का एक बेटा है जो लंगड़ा है।'' दाऊद ने उससे पूछा कि

वह कहाँ है। तब सीबा ने दाऊद को उत्तर दिया कि वह लोदबार नगर में, अम्मीएल के पुत्र माकीर के घर में रहता है। तब राजा दाऊद ने मपीबोशेन को बुलवा लिया और उससे कहा, ''मत डर, तेरे पिता योनातन के कारण मैं निश्चय तुझ को प्रीति दिखाऊँगा। तेरे दादा शाऊल की सारी भूमि तुझे दे दूँगा, और तू मेरी मेज़ पर नित्य भोजन किया कर।'' मपीबोशेत ने राजा को दण्डवत करके कहा, ''तेरा दास क्या है, कि तू मुझ ऐसे मरे कुत्ते की ओर दृष्टि करे?''

तब राजा ने शाऊल के कर्मचारी सीबा को बुलवाकर उससे कहा, ''जो कुछ शाऊल और उसके समस्त घराने का था, वह मैंने तेरे स्वामी के पोते को दे दिया है। अब से तू अपने बेटों और सेवकों समेत उसकी भूमि पर खेती करके उसकी उपज ले आया करना, कि तेरे स्वामी के पोते को भोजन मिला करे। परन्तु तेरे स्वामी का पोता मपीबोशेत मेरी मेज़ पर नित्य भोजन किया करेगा।'' सीबा के तो पंद्रह पुत्र और बीस सेवक थे। सीबा ने राजा से कहा, ''मेरा प्रभु राजा अपने दास को जो जो आज्ञा दे, उन सभों के अनुसार तेरा दास करेगा।'' दाऊद ने कहा, ''मपीबोशेत राजकुमारों के समान मेरी मेज़ पर भोजन किया करे।''

मपीबोशेत के भी मीका नामक एक छोटा बेटा था। सीबा के घर में जितने रहते थे वे सब मपीबोशेत की सेवा करते थे। मपीबोशेत यरूशलेम में रहता था, क्योंकि वह राजा की मेज़ पर नित्य भोजन करता था। वह दोनों पाँवों का पंगुला था।

इस प्रकार दया का पात्र होने के लिए मपीबोशेत ने क्या किया था? कुछ भी नहीं! दाऊद ने मपीबोशेत के प्रति जो अनुग्रह और करुणा दिखाई उसकी तुलना हम उस अनुग्रह और करुणा से कर सकते हैं जो परमेश्वर ने हम पर की।

हे यहोवा, तेरी करुणा स्वर्ग में है,
तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुँची है।
तेरा धर्म ऊँचे पर्वतों के समान है,
तेरे नियम अथाह सागर ठहरे हैं।

हे यहोवा तू मनुष्य और पशु
दोनों की रक्षा करता है।
हे परमेश्वर, तेरी करुणा कैसी अनमोल है,
मनुष्य तेरे पंखों के तले शरण लेते हैं।
वे तेरे भवन के चिकने भोजन से तृप्त होंगे,
और तू अपनी सुख की नदी में से उन्हें पिलाएगा।
क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है,
तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएँगे।

भजन संहिता 36:5-9

प्रश्न :

1. जब योनातन पहली बार दाऊद से मिला, तब किस प्रकार उसका सम्मान किया?
2. योनातान ने क्या किया जब उसके पिता शाऊल ने दाऊद को मार डालने की योजना बनाई?
3. मपीबोशेत कौन था, और दाऊद राजा ने उसे क्यों बुलवाया?
4. मपीबोशेत के दास सीबा को राजा ने क्या दिया?

पाठ–5

दाऊद और अबशालोम

(2 शमूएल अध्याय 13–18)

''एक वर मैंने यहोवा से माँगा है, उसी के यत्न में लगा रहूँगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊँ, जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूँ। और उसके मंदिर में ध्यान किया करूँ।'' (भजन 27:4)

''फिर दाऊद ने अबीशै और अपने सब कर्मचारियों से कहा, 'जब मेरा निज पुत्र भी मेरे प्राण का खोजी है, तो यह बिन्यामीनी अब ऐसा क्यों न करे? उसको रहने दो और शाप देने दो, क्योंकि यहोवा ने उससे कहा है। कदाचित् यहोवा इस उपद्रव पर, जो मुझ पर हो रहा है, दृष्टि करके आज के शाप के बदले मुझे भला बदला दे'।'' (2 शमूएल 16:11–12)

दाऊद ने शाऊल और अपने प्रिय मित्र योनातन की मृत्यु का शोक मनाया। फिर वह अगुआई के लिए परमेश्वर की तरफ मुड़ा। परमेश्वर ने उसे हेब्रोन भेजा जहाँ यहूदा के लोगों ने अपना राजा होने के लिए उसको अभिषेक किया। उसी समय शाऊल का एक पुत्र ईशबोशेत इस्राएल पर राज्य करने लगा। दाऊद ने साढ़े सात वर्ष यहूदा पर राज्य किया, परन्तु ईशबोशेत की हत्या हो जाने पर इस्राएल के सब गोत्र दाऊद के पास गए कि उसे अपना राजा बनाएँ और अपना राजा होने के लिए हेब्रोन में उन्होंने दाऊद का अभिषेक किया।

फिर दाऊद ने अगले तैंतीस वर्ष यरूशलेम में समस्त इस्राएल और यहूदा पर राज्य किया।

दाऊद की उपलब्धियाँ प्रभावशाली थीं, परन्तु उसके जीवन में असफलताओं और निराशा के अवसर भी आए। जब उसकी सेना अम्मोनियों से युद्ध कर रही थी, तब दाऊद अपने राजमहल में ही रह गया। अपने

महल की छत से उसने बतशेबा नाम की एक स्त्री को नहाते हुए देखा और उसके मोह में पड़कर उसे अपना बना लिया और उसके पति ऊरिय्याह को मरवा डाला। दाऊद के इस कार्य से परमेश्वर बहुत क्रोधित थे। परन्तु यह चाहते थे कि दाऊद अपने पाप से पश्चाताप करके परमेश्वर के पास लौट आए। अत: परमेश्वर ने नातान नबी को उसके पास भेजा कि उसका पाप उसे बताए।

दाऊद ने नातान से कहा, ''मैंने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।'' दाऊद ने अपने पाप का अंगीकार किया और परमेश्वर ने उस पर अनुग्रह किया। दाऊद ने भजन संहिता 51 लिखा जिसमें उसका सच्चे दिल से किया गया पश्चाताप हम देख सकते हैं। दाऊद का सच्चा पश्चाताप उसे वास्तव में परमेश्वर के पास वापस ले आया। परन्तु उसके उस वासना और हत्या के पाप के दुखद परिणाम हुए। यदि हम पाप बोते हैं, और पश्चाताप करके परमेश्वर से क्षमा प्राप्त करते हैं, तौभी हमें उसका परिणाम भोगना होगा। परन्तु इस परिणाम को भोगते समय परमेश्वर हमारे साथ रहते हैं और अक्सर उनके द्वारा हमारे जीवनों को बदलते और पुन:स्थापित करते हैं।

दाऊद के जीवन में हम इसे देख सकते हैं। नातान नबी ने दाऊद से कहा, ''तू ने जो इस काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है, इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है वह अवश्य ही मरेगा।'' और ऐसा ही हुआ।

दाऊद का पुत्र अबशालोम अपनी सुन्दरता के कारण बहुत प्रशंसा के योग्य था। नख से सिख तक उसमें कोई दोष न था। वह वर्ष के अंत में अपना सिर मुंडवाता था क्योंकि उसके बाल बहुत भारी हो जाते थे। उसने अपने मन में ठान लिया था कि वह अपने पिता का राज्य उससे छीन लेगा। अत: अबशालोम ने रथ और घोड़े और अपने आगे-आगे दौड़नेवाले पचास पुरुष रख लिए। अबशालोम सवेरे उठकर फाटक के मार्ग के पास खड़ा हो जाता था और जो कोई न्याय के लिए राजा के पास आता उससे सहानुभूति दिखाया करता था। फिर जब कोई दण्डवत्

करने को निकट आता, तब वह हाथ बढ़ाकर उसको पकड़ के चूम लेता था। इस प्रकार अबशालोम ने इस्राएलियों के मन को जीत लिया।

चार वर्ष के बीतने पर अबशालोम ने राजा से कहा, ''मुझे हेब्रोन जाकर अपनी उस मन्नत को पूरी करने दे, जो मैंने यहोवा की मानी है।'' राजा ने उससे कहा, ''कुशल क्षेम से जा।'' तब अबशालोम हेब्रोन को गया। फिर अबशालोम ने इस्राएल के समस्त गोत्रों में यह कहने के लिए भेदिए भेजे, ''जब नरसिंगे का शब्द तुम को सुनाई पड़े, तब कहना, ''अबशालोम हेब्रोन में राजा हुआ!'' अबशालोम के संग दो सौ निमंत्रित व्यक्ति भी यरूशलेम से गए, परन्तु वे सीधे मन से उसका भेद बिना जाने गए। फिर जब अबशालोम का यज्ञ हुआ, तब उसने गीलोवासी अहीतोपेल को, जो दाऊद का मंत्री था, बुलवा भेजा कि वह अपने नगर गीलो से आए। इस प्रकार राजद्रोह की गोष्ठी ने बल पकड़ा, क्योंकि अबशालोम के पक्ष के लोग बराबर बढ़ते गए।

तब किसी ने दाऊद के पास जाकर यह समाचार दिया, ''इस्राएली मनुष्यों के मन अबशालोम की ओर हो गए हैं।'' तब दाऊद राजा अपने राजमहल से भागा। यही वह समय था जब उसने भजन 3 लिखा। वह जैतून के पहाड़ की चढ़ाई पर सिर ढाँके, नंगे पाँव, रोता हुआ चढ़ने लगा, और जितने लोग उसके संग थे, वे भी सिर ढाँके रोते हुए चढ़ गए। जब दाऊद को यह समाचार मिला, कि अबशालोम के संगी राजद्रोहियों के साथ अहीतोपेल है। तब दाऊद ने प्रार्थना की ''हे यहोवा, अहीतोपेल की सम्मति को मूर्खता बना दे।''

जब दाऊद चोटी तक पहुँचा, जहाँ परमेश्वर की आराधना की जाती थी, तब एरेकी हूशै अंगरखा फाड़े, सिर पर मिट्टी डाले हुए उससे मिलने को आया। दाऊद ने हूशै से कहा, ''यदि तू नगर को लौटकर अबशालोम से कहे, कि हे राजा, जैसा मैं बहुत दिन तेरे पिता का कर्मचारी रहा, वैसे ही अब तेरा रहूँगा। इस प्रकार तू मेरे हित के लिए अहीतोपेल की सम्मति को निष्फल कर सकेगा।''

यरूशलेम पहुँचकर हूशै अबशालोम के पास पहुँचा और कहा, ''राजा

चिरंजीव रहे!'' अबशालोम ने उससे पूछा, ''तू अपने मित्र के संग क्यों नहीं गया?'' हूशै ने अबशालोम से कहा, ''जिसको यहोवा और सब इस्राएली लोग चाहें, उसी का मैं हूँ और उसी के संग मैं रहूँगा। जैसा मैं तेरे पिता के सामने रहकर सेवा करता था, वैसा ही तेरे सामने रहकर सेवा करूँगा।''

उन दिनों में अहीतोपेल की सम्मति को बहुत मान दिया जाता था और अबशालोम उसे पूरा किया करता था। अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा, ''मुझे बारह हज़ार पुरुष छाँटने दे, और मैं उठकर आज ही रात को दाऊद का पीछा करूँगा और उसे मार डालूँगा।'' तब अबशालोम ने कहा, ''एरेकी हूशै को भी बुला लाओ कि हम उसकी सम्मति भी सुनें।'' जब हूशै अबशालोम के पास आया, तब अबशालोम ने उससे कहा, ''अहीतोपेल ने तो इस प्रकार की बात कही है, क्या हम उसकी बात मानें कि नहीं? यदि नहीं तो तू कह दे।'' हूशै ने अबशालोम से कहा, ''जो सम्मति अहीतोपेल ने इस बार दी वह अच्छी नहीं।'' जब अहीतोपेल ने देखा कि मेरी सम्मति के अनुसार काम नहीं हुआ, तब वह अपने घर में गया और अपने घराने के विषय में जो जो आज्ञा देनी थी, वह देकर अपने आप को फाँसी लगा ली।

हूशै की सम्मति के अनुसार अबशालोम युद्ध करने यरदन के पार चला गया। हूशै ने पहले ही दाऊद को पूरी योजना बता दी थी। दाऊद ने अपनी समस्त सेना को योआब, अबीशै और इत्तै के अधिकार में तीन दलों में बाँट दिया।

दाऊद ने उन्हें अबशालोम के विषय में आज्ञा दी, ''मेरे निमित्त उस जवान से कोमलता करना।''

एप्रैम नामक वन में युद्ध हुआ। वहाँ इस्राएली लोग दाऊद के जनों से हार गए। जब अबशालोम एक खच्चर पर चढ़ कर भाग रहा था, कि खच्चर एक बड़े बांज वृक्ष की घनी डालियों के नीचे से गया, और उसका सिर उस बांज वृक्ष में अटक गया, और वह अधर में लटका रह गया और उसका खच्चर निकल गया। जिन बालों पर उसे घमण्ड था, वे

ही उसकी मृत्यु का कारण बन गए। योआब ने तीन लकड़ी के तीर हाथ में लेकर अबशालोम के हृदय में, जो बांज वृक्ष में जीवित लटका था, छेद डाला। जब दाऊद को अपने पुत्र की मृत्यु का समाचार मिला, तब वह फाटक के ऊपर की अटारी पर रोता हुआ चढ़ने लगा और यों कहता गया, ''हाय मेरे बेटे अबशालोम! मेरे बेटे, हाय! मेरे बेटे अबशालोम! भला होता कि मैं आप तेरे बदले मरता, हाय! अबशालोम! मेरे बेटे, मेरे बेटे!!''

अनुग्रह, पाप के कर्ज़ को चुका देता है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि उसके परिणाम को भी मिटा दे।

प्रश्न :

1. वचन में दाऊद के जीवन की असफलताओं का वर्णन क्यों किया गया है?
2. दाऊद ने भजन 51 कब लिखा?
3. अहीतोपेल कौन था? दाऊद ने क्यों प्रार्थना की, कि उसकी सम्मति निष्फल हो जाए?
4. अहीतोपेल के जीवन का अंत कैसे हुआ?
5. अंततः अबशालोम के साथ क्या हुआ?

पाठ-6

सुलैमान

(1 राजा अध्याय 1-10)

''और अब, हे मेरे परमेश्वर यहोवा! तू ने अपने दास को मेरे पिता दाऊद के स्थान पर राजा किया है, परन्तु मैं छोटा लड़का-सा हूँ जो भीतर बाहर आना जाना नहीं जानता। फिर तेरा दास तेरी चुनी हुई प्रजा के बहुत से लोगों के मध्य में है, जिनकी गिनती बहुतायत के मारे नहीं हो सकती। तू अपने दास को अपनी प्रजा का न्याय करने के लिए समझने की ऐसी शक्ति दे, कि मैं भले बुरे को परख सकूँ, क्योंकि कौन ऐसा है, कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके?'' (1 राजा 3:7-9)

''अतः जब सुलैमान बूढ़ा हुआ, तब उसकी स्त्रियों ने उसका मन पराए देवताओं की ओर बहका दिया, और उसका मन अपने पिता दाऊद के समान अपने परमेश्वर यहोवा पर पूरी रीति से लगा न रहा।'' (1 राजा 11:4)

इस्राएल के इतिहास में दाऊद राजा अन्य सभी राजाओं से महानतम और सर्वश्रेष्ठ था। अपनी राजगद्दी पर बैठकर भी वह कभी नहीं भूला कि वास्तव में यहोवा ही इस्राएल का राजा है। वह एक ऐसा पुरुष था जो परमेश्वर के हृदय के अनुसार था। यद्यपि दाऊद पापरहित नहीं था, तौभी जब वह पाप करता तब वह पश्चाताप करता और पाप से दूर रहता था। अपनी इच्छा से अधिक परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए सदैव तत्पर रहता था। अपने जीवन के अंत तक परमेश्वर का कार्य, परमेश्वर का वचन और परमेश्वर की महिमा ही उसका मुख्य उद्देश्य रहा।

दाऊद और बतशेबा का पुत्र था सुलैमान। सुलैमान नाम का अर्थ है ''शांति''। वह यहोवा का प्रिय हुआ, और यहोवा ने नातान भविष्यद्वक्ता के द्वारा सन्देश भेज दिया, और उसने यहोवा के कारण उसका नाम

यदिद्याह रखा, जिसका अर्थ है ''यहोवा का प्रिय''।

अदोनिय्याह दाऊद के जीवित पुत्रों में सबसे बड़ा था। उसने राज्य को हड़प लेने की योजना बनाई। परन्तु स्वयं परमेश्वर ने सुलैमान को राजा होने के लिए चुन लिया था। अत: मनुष्यों की कोई योजना सफल न हुई। जब दाऊद राजा को अदोनिय्याह की योजना का पता चला, तब उसने तुरंत आज्ञा दी, ''मेरे पास सादोक याजक, नातान नबी, और यहोयादा के पुत्र बनायाह को बुला लाओ।'' अत: वे राजा के सामने आए। राजा ने उनसे कहा, ''अपने प्रभु के कर्मचारियों को साथ लेकर मेरे पुत्र सुलैमान को मेरे निज खच्चर पर चढ़ाओ, और गीहोन को ले जाओ, और वहाँ सादोक याजक और नातान नबी इस्राएल का राजा होने को उसका अभिषेक करें। तब तुम सब नरसिंगा फूंककर कहना, 'राजा सुलैमान जीवित रहे'। और तुम उसक पीछे-पीछे इधर आना, और वह आकर मेरे सिंहासन पर विराजे, क्योंकि मेरे बदले वही राजा होगा, और उसी को मैंने इस्राएल और यहूदा का प्रधान होने को ठहराया है।'' उन्होंने राजा की आज्ञा का पालन किया और फिर अदोनिय्याह और उसके साथियों ने भी समर्पण कर दिया और आकर सुलैमान राजा को दण्डवत् किया।

सुलैमान का दूसरा राज्याभिषेक एक भव्य घटना थी। पूरे राष्ट्र ने उसे अपना राजा स्वीकार किया और उसका राज्य दृढ़ता से स्थापित हो गया। बीस वर्ष की छोटी उम्र में इतना कुछ प्राप्त करना सुलैमान के लिए महान बात थी। परन्तु सुलैमान ने मिस्र के राजा फिरौन की बेटी से विवाह किया और यह उसके आत्मिक पतन का कारण बना। उसने निर्गमन 34:16 की आज्ञा का उल्लंघन किया। उस समय में ''ऊँचे स्थानों'' पर बलि चढ़ाई जाती थी, तथापि परमेश्वर का मिलापवाला तम्बू गिबोन में था, (2 इतिहास 1:3) और परमेश्वर का सन्दूक यरूशलेम में था। (2 इतिहास 1:4)।

गिबोन में यहोवा ने रात को स्वप्न के द्वारा सुलैमान को दर्शन देकर कहा, ''जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूँ, वह माँग।'' सुलैमान ने कहा,

''तू अपने दास मेरे पिता पर बड़ी करुणा करता रहा, और अब, हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू ने अपने दास को मेरे पिता दाऊद के स्थान पर राजा किया है। तू अपने दास को अपनी प्रजा का न्याय करने के लिए समझने की ऐसी शक्ति दे, कि मैं भले बुरे को परख सकूँ।''

तब परमेश्वर ने उससे कहा, ''इसलिए कि तू ने यह वरदान माँगा है, और न तो दीर्घायु और न धन और न अपने शत्रुओं का नाश माँगा है, परन्तु समझने के लिए विवेक का वरदान माँगा है, इसलिए सुन, मैं तेरे वचन के अनुसार करता हूँ, तुझे बुद्धि और विवेक से भरा मन देता हूँ, यहाँ तक कि तेरे समान न तो तुझ से पहले कोई कभी हुआ, और न बाद में कभी कोई होगा। फिर जो तूने नहीं माँगा, अर्थात् धन और महिमा, वह भी मैं तुझे यहाँ तक देता हूँ, कि तेरे जीवन भर कोई राजा तेरे तुल्य न होगा।''

जब शीबा की रानी ने यहोवा के नाम के विषय सुलैमान की कीर्ति सुनी, तब वह कठिन-कठिन प्रश्नों से उसकी परीक्षा करने को चल पड़ी, और सुलैमान के पास पहुँचकर अपने मन की सब बातों के विषय में उससे बातें करने लगी। सुलैमान ने उसके सब प्रश्नों का उत्तर दिया। कोई बात राजा की बुद्धि से ऐसी बाहर न रही कि वह उसको न बता सका। जब शीबा की रानी ने सुलैमान की सब बुद्धिमानी और उसका भवन, भोजन और कर्मचारियों को देखा तब वह चकित रह गई। तब उसने राजा से कहा, ''तेरे कामों और बुद्धिमानी की जो कीर्ति मैंने अपने देश में सुनी थी वह सच ही है। परन्तु जब तक मैं ने आप ही आकर अपनी आँखों से यह न देखा, तब तक मैं ने उन बातों पर विश्वास नहीं किया, परन्तु इसका आधा भी मुझे न बताया गया था। तेरी बुद्धिमानी और कल्याण उस कीर्ति से भी बढ़कर है, जो मैंने सुनी थी।''

परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि दी, और उसकी समझ बहुत ही बढ़ाई, और उसके हृदय में समुद्र तट की बालू के किनकों के तुल्य अनगिनत गुण दिए। और सुलैमान की बुद्धि पूर्व देश के सब निवासियों और मिस्रियों की भी बुद्धि से बढ़कर थी। और उसकी कीर्ति चारों ओर

की सब जातियों में फैल गई। उसने तीन हज़ार नीतिवचन कहे, और उसके एक हज़ार पाँच गीत भी हैं और देश-देश के लोग पृथ्वी के सब राजाओं की ओर से जिन्होंने सुलैमान की बुद्धि की कीर्ति सुनी थी, उसकी बुद्धि की बातें सुनने को आया करते थे।

1. सुलैमान ने पूरे प्रताप और भव्यता के साथ यरूशलेम में यहोवा का भवन बनवाया। (1 राजा 6)।
2. उसने अपने लिए एक राजमहल बनवाया जिसमें तेरह वर्ष लगे।
3. उसने फिरौन की बेटी के लिए एक नया महल बनवाया।
4. उसने यरूशलेम की शहरपनाह को दृढ़ करवाया और मिल्लो (एक किला) को भी पुनः बनवाया।
5. अपने देश को शत्रुओं से बचाने और व्यापार को बढ़ाने के लिए उसने नए शहर बनवाए।
6. उसने भण्डार नगरों को बनवाया और अपने घोड़ों और रथों के लिए भी नगर बनवाए।
7. उसने अच्छी सड़कें बनवाईं।
8. उसने एदोम देश में लाल समुद्र के किनारे जहाज बनवाए।

सुलैमान का सबसे बड़ा कार्य परमेश्वर का भवन बनाने का था। दाऊद परमेश्वर का मंदिर बनाना चाहता था परन्तु परमेश्वर ने यह सौभाग्य सुलैमान को दिया।

सुलैमान के राज्यकाल में अधिकतर शांति बनी रही। अपने जीवन के अंतिम समयों में सुलैमान परमेश्वर से दूर चला गया और अन्य देवी देवताओं की आराधना की। उसकी मृत्यु के समय उसके राज्य की अवस्था बहुत बुरी थी।

प्रश्न :

1. सुलैमान के जीवन के आरंभिक वर्षों के बारे में वर्णन करें।

2. परमेश्वर ने सुलैमान से स्वप्न में क्या कहा?
3. सुलैमान ने क्या-क्या लिखा?
4. उसकी उपलब्धियाँ क्या थीं?
5. उसके अंतिम दिनों का वर्णन करें।

पाठ-7

सुलैमान का मंदिर

(1 राजा 6-7)

जब राजा अपने भवन में रहता था, और यहोवा ने उसको उसके चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम दिया था, तब राजा नातान नामक भविष्यद्वक्ता से कहने लगा, ''देख, मैं तो देवदारु के बने घर में रहता हूँ, परन्तु परमेश्वर का सन्दूक तम्बू में रहता है।'' (2 शमूएल 7:2)

''यहोवा तुझे यह भी बताता है कि यहोवा तेरा घर बनाए रखेगा। जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी, और तू अपने पुरखाओं के संग सो जाएगा, तब मैं तेरे निज वंश को तेरे पीछे खड़ा करके उसके राज्य को स्थिर करूँगा। मेरे नाम का घर वही बनवाएगा, और मैं उसकी राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूँगा।'' (2 राजा 7:12-13)

राजाओं के वर्णन में सुलैमान का मंदिर मुख्य विषय है। 1 राजा में इसके निर्माण का और 2 राजा में उसके विनाश का वर्णन है। इस्राएल के इतिहास में हम तीन मंदिरों के बारे में पढ़ते हैं। पहला, सुलैमान का मंदिर जिसका निर्माण 960 ई.पू. हुआ था और वह 400 वर्षों तक बना रहा। कहा जाता है कि इस्राएलियों के मिस्र से निकलने के 480 वर्षों बाद इसका निर्णाण आरंभ हुआ। दूसरा मंदिर जरुब्बाबेल के नेतृत्व में बना। 515 ई.पू. में इसका निर्माण हुआ और यह 500 वर्षों तक बना रहा। तीसरा, हेरोदेस का मंदिर, जिसका 20 ई.पू. में निर्माण हुआ और यह अगले 90 वर्षों तक बना रहा।

इस्राएलियों के जीवन में मंदिर इतना महत्वपूर्ण क्यों रहा? तंबू में रखे प्रतीकों के द्वारा परमेश्वर ने स्वयं के विषय में और छुटकारे के कार्य के विषय में अपने लोगों को प्रकटीकरण दिया। एक महत्वपूर्ण सत्य यह था कि इस्राएल के जीवन का केंद्र यहोवा ही होना चाहिए

और वे यहोवा की ही सेवा और आराधना करें। तंबू के स्थान पर मंदिर बनाने का समय आ गया था और दाऊद ने यहोवा के लिए यह मंदिर बनवाना चाहा। परन्तु उसका अधिकांश समय शत्रुओं से युद्ध करने में लगा। एक समय आया जब देश में शांति स्थापित हुई और सुलैमान ने इस भवन को बनवाया।

अपनी मृत्यु से पहले दाऊद ने इस भवन के निर्माण के लिए आवश्यक सोना, चांदी, कीमती पत्थर और संगमरमर इत्यादि को बहुतायत से तैयार करके रखा। सुलैमान के राज्य के चौथे वर्ष से भवन के निर्माण का कार्य आरंभ हुआ।

मंदिर की लंबाई 90 फीट, चौड़ाई 30 फीट और ऊँचाई 45 फीट थी। यह दो कमरों में बँटा हुआ था। पहला कमरा पवित्र स्थान था, जिसकी लंबाई 60 फीट, चौड़ाई 30 फीट और ऊँचाई 45 फीट थी। दूसरा कमरा परम पवित्र स्थान था जिसकी लंबाई 30 फीट, चौड़ाई 30 फीट और ऊँचाई 30 फीट की थी। पूर्व की ओर 30 फीट लंबा एक गलियारा था जो जमीन से 15 फीट की ऊँचाई पर था। पश्चिम, उत्तर और दक्षिण दिशा में याजकों के लिए तीन मंजिले कमरे बने हुए थे, जो मंदिर की दीवार से लगे हुए थे। भवन के भीतर का भाग फर्श से छत तक सोने से मढ़े हुए सनोवर के तख्तों से बना हुआ था। पवित्र स्थान में जैतून की लकड़ी के दस-दस हाथ ऊँचे दो करुब बने थे। और करुबों के पंख ऐसे फैले थे कि एक करुब का पंख एक दीवार से और दूसरे का दूसरा पंख दूसरी दीवार से लगा हुआ था। फिर उनके दूसरे दो पंख भवन के मध्य में एक दूसरे को स्पर्श करते थे। ये सोने से मढ़े हुए थे।

मंदिर के प्रवेश द्वार के लिए जैतून की लकड़ी के चौखट और सनोवर की लकड़ी के दो पल्लों वाले दरवाज़े बने थे। जिस पर करुब और खजूर के वृक्ष और खिले हुए फूल खुदे हुए थे। और वह सोने से मढ़े हुए थे। पवित्र स्थान के प्रवेश-द्वार के जैतून की लकड़ी के थे जिन पर करुब, खजूर के वृक्ष और खिले हुए फूल खुदे हुए थे और वे सोने से मढ़े हुए थे।

सुलैमान के मंदिर की विशेषताएँ-

1. इसका निर्माण कार्य 966 ई.पू. को आरंभ हुआ और इसके बनाने में सात वर्ष लगे।
2. इस मंदिर का नक्शा परमेश्वर ने दाऊद को दिया था। (1 इतिहास 29:19) और दाऊद ने वह सुलैमान को दिया था। (1 इतिहास 28:11-12; 2 इतिहास 3:3)।
3. मंदिर काफी हद तक निवासस्थान की तरह ही था। दोनों में दो मुख्य स्थान थे जो पवित्रस्थान और परम पवित्र स्थान कहलाते थे।
4. मंदिर के सामने दो खम्भे थे जिनका नाम याकीन (वह स्थिर रखे) और बोआज़ (उसी में बल) था।
5. भवन के पात्र (1 राजा 7:48) वैसे ही थे जैसे तंबू के पात्र थे, परन्तु गिनती और आकार में अलग और अधिक थे।
6. सारे पात्र नए बनाए गए परन्तु वाचा का संदूक वही था जो सीनै पर्वत के समय से ही था।
7. सुलैमान का महल कई घरों को मिलाकर बना था। (1 राजा 7:1-12) उसने लबानोनी वन नामक महल बनवाया। एक खम्भेवाला ओसारा और एक न्याय के सिंहासन के लिए ओसारा बनवाया। साथ ही अपनी पत्नी, फिरौन की बेटी के लिए भी एक भवन बनवाया।

वाचा के सन्दूक का मंदिर में लाया जाना एक पवित्र और भव्य समारोह था। सुलैमान ने इस्राएली पुरनियों को और गोत्रों के सब मुख्य पुरुषों को यरूशलेम में अपने पास इकट्ठा किया। तब याजकों ने संदूक को उठा लिया। और यहोवा का संदूक, और मिलाप का तंबू, और जितने पवित्र पात्र उस तंबू में थे, उन सभों को याजक और लेवीय लोग ऊपर ले गए। और राजा सुलैमान और समस्त इस्राएली मंडली, सब संदूक के सामने इतने भेड़ और बैल बलि कर रहे थे, जिनकी गिनती किसी तरह से नहीं हो सकती थी। तब याजकों ने यहोवा की वाचा का

संदूक परम पवित्र स्थान में पहुँचाकर करुबों के पंखों के नीचे रख दिया। जब याजक पवित्र स्थान से बाहर निकले, तब यहोवा के भवन में बादल भर गया। और बादल के कारण याजक सेवा टहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का तेज यहोवा के भवन में भर गया था। तब राजा ने इस्राएल की पूरी सभा को आशीर्वाद दिया।

प्रश्न :

1. यरूशलेम में कितने मंदिर बनाए गए? उनके क्या नाम हैं?
2. परमेश्वर के भव्य मंदिर को बनवाना सुलैमान के लिए आसान क्यों रहा था?
3. मंदिर की बनावट का वर्णन करें।
4. मंदिर को बनवाने में कितने वर्ष लगे?
5. मंदिर के अलावा सुलैमान ने और कौन-कौन से भवन बनवाए?
6. वाचा के संदूक को मंदिर में लाए जाने का वर्णन करें।

पाठ-8

यहूदा के राजा-1

(1 राजा अध्याय 12-14
2 इतिहास अध्याय 10-12)

''सब चतुर तो ज्ञान से काम करते हैं, परन्तु मूर्ख अपनी मूढ़ता फैलाता है।'' (नीतिवचन 13:16)

लगभग सौ वर्ष से कुछ अधिक समय तक (1043-931 ई.पू.) इस्राएल एक राष्ट्र बना रहा। शाऊल, दाऊद और सुलैमान उसके राजा रहे। सुलैमान ने शानदार तरीके से अपना शासन आरंभ किया था, परन्तु कुछ समय के बाद ही उसने स्वयं, और लोगों को परमेश्वर से भटका कर बुरा उदाहरण बन गया। उसके राज्य के दौरान राज्य के बँटवारे की नींव पड़ गई थी। उत्तरी गोत्र (इस्राएल के लोग) और दक्षिणी गोत्र (यहूदा के लोग) में तनाव उत्पन्न हो गया था। (2 शमूएल 19:40-43)

1. रहूबियाम (1 राजा 12-14)

सुलैमान की मृत्यु होने पर उसे उसके पिता दाऊद के नगर में मिट्टी दी गई। उसका पुत्र रहूबियाम शकेम को गया, क्योंकि सब इस्राएली उसको राजा बनाने के लिए वहीं गए थे। वे उसे राजा बनाना चाहते थे, परन्तु कुछ बातों का फैसला करना चाहते थे। अत: वे अपने अगुए यारोबाम को लेकर उसके पास गए और उससे कहने लगे, ''तेरे पिता ने तो हम लोगों पर भारी जूआ डाल रखा था, इसलिए अब तू अपने पिता की कठिन सेवा को और उस भारी जूए को कुछ हलका कर, तब हम तेरे अधीन रहेंगे।'' वे यह भूल गए थे कि यह परमेश्वर का न्याय था जब उन्होंने अपने ऊपर राजा की माँग की थी। (1 शमूएल 8:10-17)।

रहूबियाम ने बूढ़ों की सम्मति को तुच्छ जाना और जवानों की गलत

सम्मति के अनुसार उन्हें उत्तर दिया, ''मेरे पिता ने तो तुम्हारा जूआ भारी कर दिया था, परन्तु मैं उसे और भी भारी कर दूँगा। मेरे पिता ने तो कोड़ों से तुम को ताड़ना दी, परन्तु मैं तुम को बिच्छुओं से ताड़ना दूँगा।'' यह सुनकर समस्त इस्राएल राजा के विरुद्ध हो गया और सब अपने डेरे को लौट गए। राजा ने उन्हें समझाने के लिए बेगारों के अधिकारी अदोराम को उनके पास भेजा, परन्तु उन्होंने पत्थरवाह करके उसे मार डाला। यह सुनकर रहूबियाम डर गया और यरूशलेम को भाग गया। इस प्रकार इस्राएल दाऊद के घराने से फिर गया और यारोबाम को अपना राजा नियुक्त कर लिया। यहूदा के गोत्र को छोड़कर और कोई दाऊद के घराने से मिला न रहा।

यरूशलेम पहुँचकर रहूबियाम ने यहूदा के समस्त घराने को और बिन्यामीन के गोत्र को इकट्ठा किया जो एक लाख अस्सी हज़ार अच्छे योद्धा थे, कि वे इस्राएल से युद्ध करके राज्य को रहूबियाम के वश में कर दें। तब परमेश्वर का यह वचन परमेश्वर के जन शमायाह के पास पहुँचा, ''यहूदा के राजा सुलैमान के पुत्र रहूबियाम से और यहूदा और बिन्यामीन के सब घराने से, और सब लोगों से कह, 'यहोवा यों कहता है- कि अपने भाई इस्राएलियों पर चढ़ाई करके युद्ध न करो। तुम अपने-अपने घर लौट जाओ, क्योंकि यह बात मेरी ही ओर से हुई है।''

सुलैमान का पुत्र रहूबियाम इकतालीस वर्ष का होकर राज्य करने लगा, और यरूशलेम में सत्रह वर्ष तक राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम नामाह था जो अम्मोनी स्त्री थी। अपने राज्य के आरंभ के तीन वर्ष उसने और उसकी प्रजा ने यहोवा का भय माना, परन्तु बाद में वह करने लगे जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। वे उन जातियों के से सब घिनौने काम करते थे, जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के सामने से निकाल दिया था। अतः परमेश्वर ने मिस्र के राजा के द्वारा उन्हें दण्ड दिया। राजा रहूबियाम के पाँचवें वर्ष में मिस्र का राजा शीशक, यरूशलेम पर चढ़ाई करके यहोवा के भवन की अनमोल वस्तुएँ, सबकी सब उठा ले गया, और सोने की जो ढालें सुलैमान ने बनाई थीं सबको वह ले गया। इसलिए रहूबियाम ने उनके बदले पीतल की ढालें बनवाईं और उन्हें

पहरुओं के प्रधानों के हाथ सौंप दिया। और जब-जब राजा यहोवा के भवन में जाता था, तब-तब पहरुए उन्हें उठा ले चलते, और फिर अपनी कोठरी में लौटाकर रख देते थे। यह यहूदा के लिए एक भारी नुकसान था। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र अबिय्याम उस के स्थान पर राज्य करने लगा।

2. अबिय्याम (1 राजा 15:1-8)

अबिय्याम ने तीन वर्ष तक यरूशलेम में राज्य किया। उसकी माता का नाम माका था जो अबशालोम की पुत्री थी। वह अपने पिता की तरह पापों की लीक पर चलता रहा। उसका मन अपने परमेश्वर यहोवा की ओर अपने परदादा दाऊद के समान पूरी रीति से लगा न रहा। तौभी दाऊद के कारण उसके परमेश्वर यहोवा ने उसके पुत्र को उसके बाद ठहराया और यरूशलेम को बनाए रखा। अबिय्याम की यारोबाम के साथ लड़ाई होती रही। परन्तु 2 इतिहास 13 में हम परमेश्वर पर उसके विश्वास को देखते हैं-''हम लोगों का परमेश्वर यहोवा है, और हमने उसको नहीं त्यागा।''

3. आसा (1 राजा 15:9-23; 2 इतिहास अध्याय 14-16)

अबिय्याह अपने पुरखाओं के संग सो गया और उसका पुत्र आसा उसके स्थान पर राज्य करने लगा। आसा ने वही किया जो परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में अच्छा और ठीक था।

आसा राजा के जीवन की विशिष्ट बातें-

1. राजा आसा छोटी उम्र में ही राजगद्दी पर बैठ गया था, परन्तु उसने यहूदा में बड़े सुधार के कार्य किए। उसने राजमाता माका को उसके पद से उतार दिया क्योंकि वह मूर्तिपूजा में लग गई थी।
2. आसा के राज्य के पहले दस वर्ष देश में कोई युद्ध नहीं हुआ। शांति के उन वर्षों में आसा ने गढ़वाले नगर बसाए। उसने यहूदियों से कहा, ''आओ हम इन नगरों को बसाएँ और उनके चारों ओर शहरपनाह, गढ़ और फाटकों के पल्ले और बेड़े बनाएँ। देश अब तक हमारे

सामने पड़ा है, क्योंकि हमने अपने परमेश्वर यहोवा की खोज की है, और उसने हमको चारों ओर से विश्राम दिया है।'' तब उन्होंने उन नगरों को बसाया और समृद्ध हुए।

3. तब फिर कूशियों से युद्ध हुआ जिससे परमेश्वर पर उसके विश्वास की परीक्षा हुई। दक्षिण की तरफ से एक बड़ी सेना ने उन पर आक्रमण किया। आसा को युद्ध जीतने की कोई उम्मीद नहीं थी परन्तु उसने परमेश्वर पर भरोसा रखा। उसकी प्रार्थना परमेश्वर पर उसके विश्वास को प्रकट करती हैं, और परमेश्वर ने उसके विश्वास का आदर किया।

4. महान विजय प्राप्त करने के बाद जब राजा अपनी बुद्धि और सामर्थ पर भरोसा करने लगा, तब परमेश्वर ने अजर्याह नबी को उसके पास भेजा। युद्ध से लौटते समय नबी ने राजा को परमेश्वर की ओर से दी गई चेतावनी सुनाई। जब राजा आसा ने ये वचन सुने तब उसने हियाव बाँधकर यहूदा और बिन्यामीन के सारे देश में से सब घिनौनी वस्तुएँ दूर की और यहोवा की वेदी को नए सिरे से बनाया।

5. आसा के राज्य के छत्तीसवें वर्ष में राजा बाशा ने यहूदा पर चढ़ाई की। वह भूल गया कि परमेश्वर ने उसे कूशियों पर विजय दिलाई थी। परमेश्वर से प्रार्थना करने के बजाय उसने अराम के राजा बेन्हदद से सहायता की माँग की।

6. राजा आसा को बाशा के ऊपर विजय प्राप्त हुई परन्तु हनानी दर्शी ने उससे कहा, ''तू ने जो अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा नहीं रखा वरन् अराम के राजा ही पर भरोसा रखा है। तू ने यह काम मूर्खता से किया है, इसलिए अब तू लड़ाईयों में फँसा रहेगा।''

7. अपने जीवन के अंत में वह परमेश्वर से दूर हो गया। जब हनानी दर्शी उसके पास परमेश्वर का वचन लेकर आया तब राजा उस पर क्रोधित हुआ और उसे काठ में ठोंकवा दिया। अपने राज्य के उनतालीसवें वर्ष में आसा को पाँव का रोग हुआ और वह रोग अत्यंत बढ़ गया, तौभी उसने रोगी होकर यहोवा की नहीं परन्तु वैद्यों

की ही शरण ली। अपने राज्य के इकतालीसवें वर्ष में उसकी मृत्यु हो गई। तब उसको उसी की कब्र में जो उसने दाऊदपुर में खुदवा ली थी, मिट्टी दी गई, और वह सुगंध द्रव्यों और गंधी के काम के भाँति-भाँति के मसालों से भरे हुए एक बिछौने पर लिटा दिया गया, और बहुत सा सुगन्ध द्रव्य उसके लिए जलाया गया।

4. यहोशापात (1 राजा 22:41-48; 2 इतिहास अध्याय 17-21)

आसा का पुत्र यहोशापात उसके स्थान पर राजा बना। उसने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों में सिपाहियों के दल ठहरा दिए और सिपाहियों की चौकियाँ बैठा दीं। यहोवा यहोशापात के संग रहा, क्योंकि उसने अपने मूलपुरुष दाऊद की चाल का अनुसरण किया। इस कारण यहोवा ने उसके राज्य को दृढ़ किया। उसने अपने राज्य के तीसरे वर्ष में अपने कुछ हाकिमों, लेवीयों और याजकों को यहूदा के नगरों में शिक्षा देने के लिए भेज दिया। वे यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक अपने साथ लेकर यहूदा के सब नगरों में प्रजा को सिखाते हुए घूमे। इसका परिणाम बहुत अच्छा हुआ।

यहोशापात बड़ा धनवान और ऐश्वर्यवान हो गया और उसके पुत्र ने अहाब और ईज़ेबेल की बेटी से विवाह किया जो अपनी माता की तरह ही थी। उसने बाल देवता की उपासना की और दाऊद के घराने को लगभग नष्ट कर दिया। यहोशापात इस्राएल के दुष्ट राजा अहाब के साथ मिलकर युद्ध करने गया और मुश्किल से जान बचाकर भाग आया। परन्तु उस युद्ध में अहाब मारा गया।

जब यहूदा का राजा यहोशापात कुशल से यरूशलेम को अपने राजभवन लौट आया तब परमेश्वर ने हनानी नामक दर्शी के द्वारा उसे संदेश दिया। दर्शी ने राजा से कहा, ''क्या दुष्टों की सहायता करनी और यहोवा के बैरियों से प्रेम रखना चाहिए? इस काम के कारण यहोवा की ओर से तुझ पर क्रोध भड़का है।'' तब यहोशापात ने सच्चा पश्चाताप किया, जो उसके कार्यों के द्वारा प्रकट हुआ। उसने यहूदा के एक-एक गढ़वाले नगर में न्यायी ठहराया और उसने न्यायियों से कहा, ''सोचो कि क्या

करते हो, क्योंकि तुम जो न्याय करोगे वह मनुष्य के लिए नहीं, यहोवा के लिए करोगे, और वह न्याय करते समय तुम्हारे साथ रहेगा।''

कुछ वर्षों की शांति के पश्चात् मोआबियों और अम्मोनियों ने यहोशापात पर चढ़ाई की। यहोशापात ने पूरे यहूदा में उपवास का प्रचार करवाया और प्रजा के साथ यहोवा के भवन में जाकर प्रार्थना की। सब यहूदी अपने-अपने बाल बच्चों, स्त्रियों और पुत्रों समेत यहोवा के सम्मुख खड़े रहे। परमेश्वर ने यहजीएल के द्वारा उनकी प्रार्थना का तुरंत उत्तर दिया।

तब यहोशापात भूमि की ओर मुँह करके झुका और सब यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों ने यहोवा के सामने फिर के यहोवा को दण्डवत् किया।

फिर यहोशापात ने लोगों से कहा, ''हे यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों, मेरी सुनो, अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास रखो, तब तुम स्थिर रहोगे।'' तब राजा ने लोगों को ठहराया जो कि पवित्रता से शोभायमान होकर हथियारबंदों के आगे-आगे चलते हुए यहोवा के गीत गाएं और यह कहते हुए उसकी स्तुति करें, ''यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करुणा सदा की है।''

जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे, उसी समय यहोवा ने अम्मोनियों, मोआबियों और सेईर के पहाड़ी देशों के लोगों पर जो यहूदा के विरुद्ध आ रहे थे, घातकों को बैठा दिया और वे मारे गए। यहूदियों ने जंगल की चौकी पर पहुँचकर देखा कि भूमि पर शव पड़े थे और कोई नहीं बचा। उन्हें शत्रुओं के बीच सम्पत्ति और गहनों की इतनी अधिक लूट मिली कि बटोरते-बटोरते तीन दिन बीत गए। यरूशलेम की ओर अपनी विजय यात्रा आरंभ करने से पहले वे सब बराका नामक तराई में इकट्ठा हुए और वहाँ यहोवा का धन्यवाद किया। यरूशलेम पहुँचकर भी वे पहले यहोवा के भवन को गए और परमेश्वर की स्तुति की। जब देश-देश के सब राज्यों के लोगों ने सुना कि इस्राएल के शत्रुओं से यहोवा लड़ा, तब उनके मन में परमेश्वर का डर समा गया। इस प्रकार यहोशापात के राज्य को चैन मिला, क्योंकि उसके परमेश्वर ने उसको

चारों ओर से विश्राम दिया।

प्रश्न :

1. इस्राएल के राज्य के बँटवारे का क्या कारण था?
2. राजा आसा ने परमेश्वर की दृष्टि में कौन से अच्छे कार्य किए?
3. आसा के जीवन की असफलताएँ क्या थीं?
4. यहोशापात के अच्छे कार्य क्या थे?

पाठ-9

यहूदा के राजा-2

5. यहोराम (2 राजा 8:16-24; 2 इति. 21)

यहोराम यहूदा के सबसे अच्छे राजाओं में से एक का पुत्र था, परन्तु वह स्वयं बहुत बुरा था। उसने अहाब की बेटी अतल्याह से विवाह किया और अहाब के घराने की सी चाल चलने लगा और वह सब किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। तौभी यहोवा ने दाऊद के घराने को नष्ट करना न चाहा, यह उस वाचा के कारण था जो उसने दाऊद से बाँधी थी कि ''मैं ऐसा करूँगा कि तेरा और तेरे वंश का दीपक कभी न बुझेगा।'' यहोराम ने उन अच्छे कार्यों को पूरी तरह नष्ट कर दिया जो उसके पिता यहोशापात और उसके दादा ने किए थे।

यहोराम के ऊपर पहली ताड़ना आई जब उसके दिनों में एदोम ने यहूदा की अधीनता छोड़कर अपने ऊपर एक राजा बना लिया। तब यहोराम अपने हाकिमों और अपने सब रथों को साथ लेकर उधर गया, और रथों के प्रधानों को मारा। इस प्रकार एदोम यहूदा के वश में से छूट गया और आज तक वैसा ही है। उसी समय लिब्ना ने भी उसकी अधीनता छोड़ दी, यह इस कारण हुआ कि उसने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया था।

उसने यहूदा के पहाड़ों पर ऊँचे स्थान बनाए और यरूशलेम के निवासियों से पाप कराया और यहूदा को बहका दिया। तब एलिय्याह नबी का एक पत्र उसके पास आया, उसमें लिखा था, ''तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है कि ''तू जो न अपने पिता यहोशापात की लीक पर चला है, और न यहूदा के राजा आसा की लीक पर। परन्तु अहाब के घराने के समान यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों से व्यभिचार कराया है, और अपने पिता के घराने में से अपने भाइयों को जो तुझ से अच्छे थे, घात किया है, इस कारण यहोवा तेरी प्रजा, पुत्रों, स्त्रियों और सारी सम्पत्ति को बड़ी मार से मारेगा। तू अँतड़ियों

के रोग से बहुत पीड़ित हो जाएगा, यहाँ तक कि उस रोग के कारण तेरी अंतड़ियाँ प्रतिदिन निकलती जाएँगी।''

यहोराम ने इस पत्र की बातों पर ध्यान नहीं दिया। तब यहोवा ने पलिश्तियों को, और कूशियों के पास रहने वाले अरबियों को यहोराम के विरुद्ध उभारा। वे यहूदा पर चढ़ाई करके उस पर टूट पड़े, और राजभवन में जितनी सम्पत्ति मिली, उस सबको और राजा के पुत्रों और स्त्रियों को भी ले गए। यहाँ तक कि उसके छोटे बेटे यहोआहाज को छोड़ उसके पास कोई भी पुत्र न रहा। इन सबके बावजूद यहोराम ने अपने बुरे मार्गों को नहीं छोड़ा। तब एलिय्याह की भविष्यवाणी के अनुसार यहोवा ने उसे अँतड़ियों के असाध्य रोग से पीड़ित कर दिया। दो वर्ष के अंत में उसकी मृत्यु हो गई। उसकी प्रजा ने उसके लिए सुगंध द्रव्य इत्यादि नहीं जलाया और न ही उसे राजाओं के कब्रिस्तान में दफनाया।

(6) अहज्याह : (2 राजा 8:25-29; 2 इतिहास 22:1-7)

अहज्याह अपने पिता यहोराम के स्थान पर राजा बना और यहूदा की राजगद्दी पर बैठा। उसके दो नाम थे—2 राजा 8:25 में उसका नाम अहज्याह, और 2 इतिहास 21:17 में उसे यहोआहाज़ कहा गया है। वह अपने पिता की तरह ही एक दुष्ट पुरुष था। सौभाग्य से उसका राज्यकाल एक वर्ष का ही था। वह येहू के द्वारा मार डाला गया।

7. अतल्याह (2 राजा 11:1-16; 2 इतिहास 23:12-15)

जब अहज्याह की माता अतल्याह ने देखा कि उसका पुत्र मार डाला गया है, तब वह समस्त राज परिवार का नाश करने लगी। परन्तु अहज्याह की बहन यहोशावत ने अहज्याह के पुत्र योआश को घात होने वाले राजकुमारों के बीच से चुराकर धाई समेत एक कोठरी में छिपा दिया। वह परमेश्वर के भवन में छः वर्ष छिपा रहा। इतने दिनों तक अतल्याह देश पर राज्य करती रही। अतल्याह के राज्य के सातवें वर्ष में यहोयादा नामक याजक ने (जिसकी पत्नी यहोशावत ने योआश को छिपा रखा था) शतपतियों से वाचा बाँधी। तब वे यहूदा के सब नगरों में घूमकर लेवियों और मुख्य-मुख्य पुरुषों को इकट्ठा करके यरूशलेम को ले

आए। उन्होंने परमेश्वर के भवन में राजा के साथ वाचा बाँधी। यहोयादा याजक ने उनसे कहा, ''सुनो, यह राजकुमार राज्य करेगा जैसा यहोवा ने दाऊद के वंश के विषय में कहा है। लेवीय लोग अपने हाथ में हथियार लिए हुए राजा के चारों ओर रहें और जो कोई भवन के भीतर घुसे वह मार डाला जाए। याजकों और सेवा टहल करने वाले लेवियों को छोड़ और कोई यहोवा के भवन के भीतर न आने पाए।''

यहोयादा याजक की इन आज्ञाओं के अनुसार लेवियों और सब यहूदियों ने किया। तब यहोयादा याजक ने शतपतियों को राजा दाऊद के बर्छे और भाले और ढालें जो परमेश्वर के भवन में थीं दे दीं। फिर उसने उन सब लोगों को वेदी और भवन के पास राजा के चारों ओर उसकी आड़ करके खड़ा कर दिया। तब उन्होंने उसे बाहर लाकर उसके सिर पर राजमुकुट रखा और साक्षीपत्र देकर उसे राजा बनाया। यहोयादा याजक और उसके पुत्रों ने राजा का अभिषेक किया। और लोग बोल उठे, ''राजा जीवित रहे।''

जब अतल्याह को लोगों का हल्ला सुनाई दिया तब वह यहोवा के भवन में गई। और जब उसने देखा कि राजा द्वार के निकट खड़ा है, और राजा के पास प्रधान और तुरही बजानेवाले खड़े हैं, और सब लोग आनन्द कर रहे हैं और तुरहियाँ बजा रहे हैं, तब उसने अपने वस्त्र फाड़े और पुकारने लगी, ''राजद्रोह, राजद्रोह!'' तब यहोयादा याजक ने दल के अधिकारी शतपतियों को बाहर लाकर उनसे कहा ''उसे अपने बीच से निकाल ले जाओ, और जो कोई उसके पीछे चले, वह तलवार से मार डाला जाए। उसे यहोवा के भवन में मार न डालो।'' तब वह भवन के घोड़ाफाटक के द्वार तक गई, और वहाँ उन्होंने उसको मार डाला।

8. योआश (2 राजा 11:21-13:13; 2 इतिहास 24)

जब योआश राजा हुआ तब वह सात वर्ष का था और उसने यरूशलेम में चालीस वर्ष तक राज्य किया। जब तक यहोयादा याजक जीवित रहा, तब तक योआश वह काम करता रहा जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है। योआश के मन में यहोवा के भवन की मरम्मत करने की इच्छा उपजी।

उसने याजकों और लेवियों को इकट्ठा करके उनसे कहा, ''प्रति वर्ष यहूदा के नगरों में जा-जाकर सब इस्राएलियों से रुपए लिया करो जिससे तुम्हारे परमेश्वर के भवन की मरम्मत हो सके।'' उस दुष्ट स्त्री अतल्याह के बेटों ने परमेश्वर के भवन को तोड़ दिया था, और यहोवा के भवन की सब पवित्र की हुई वस्तुएँ बाल देवताओं के लिए प्रयोग की थीं।

राजा ने एक सन्दूक बनाने की आज्ञा दी और वह यहोवा के भवन के फाटक के पास बाहर रखा गया। तब सब हाकिम और प्रजा के सब लोग आनंदित हो रुपए लाकर सन्दूक में डालते गए और बहुत रुपये इकट्ठा हो गए। तब राजा और यहोयादा ने वह रुपए यहोवा के भवन के काम करनेवालों को दिए। कारीगर काम करते गए और उन्होंने परमेश्वर का भवन पहले जैसा बनाकर दृढ़ कर दिया। बचे हुए धन से उन्होंने यहोवा के भवन के लिए पात्र बनाए।

जब तक यहोयादा जीवित रहा, तब तक परमेश्वर के भवन में होमबलि नित्य चढ़ाए जाते थे। यहोयादा याजक की मृत्यु के बाद यहूदा के हाकिम और राजा अपने पितरों के परमेश्वर को छोड़कर अशेरों और मूरतों की उपासना करने लगे। अतः परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़का। तौभी परमेश्वर ने उनके पास नबी भेजे कि उनको यहोवा के पास वापस लाएँ। परन्तु उन्होंने ध्यान नहीं दिया। तब परमेश्वर का आत्मा यहोयादा याजक के पुत्र जकर्याह में समाया और वह ऊँचे स्थान पर खड़ा होकर कहने लगा, ''परमेश्वर यों कहता है, कि तुम यहोवा की आज्ञाओं को क्यों टालते हो? तुम ने यहोवा को त्याग दिया है, इस कारण उसने भी तुम को त्याग दिया।'' तब लोगों ने उसके विरुद्ध द्रोह की गोष्ठी की और राजा की आज्ञा से उस पर पथराव किया। मरते समय उसने कहा, ''यहोवा इस पर दृष्टि करके इसका लेखा ले।'' इस प्रकार राजा यहोआश ने वह प्रीति भूलकर जो यहोयादा याजक ने उससे की थी, उसके पुत्र को मार डाला।

नए वर्ष के लगते अरामियों ने योआश से युद्ध किया और यरूशलेम आकर सब हाकिमों को मार डाला और उनका सब धन लूटकर ले गए।

अरामियों की सेना थोड़े ही सैनिकों के साथ आई थी, परन्तु यहोवा ने एक बहुत बड़ी सेना को उनके हाथ कर दिया क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को त्याग दिया था। जब वे योआश को बहुत ही घायल अवस्था में छोड़ गए, तब उसी के कर्मचारियों ने उसे मार डाला, और उसे राजाओं के कब्रिस्तान में नहीं, परन्तु दाऊदपुर में मिट्टी दी। (2 राजा 14:1-16; 2 इति. 25)

9. अमस्याह (2 राजा 14:1-16; 2 इति. 25)

जब अमस्याह राज्य करने लगा तब वह पच्चीस वर्ष का था और उसने उनतीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य किया। उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है, परन्तु खरे मन से न किया। जब राज्य उसके हाथ में स्थिर हो गया तब उसने उन कर्मचारियों को मार डाला जिन्होंने उसके पिता राजा को मार डाला था। परन्तु उसने उनके बच्चों को मार न डाला क्योंकि उसने यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया, जो मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखी है, ''पुत्र के कारण पिता न मार डाला जाए, और न पिता के कारण पुत्र मार डाला जाए। जिस ने पाप किया हो वही उस पाप के कारण मार डाला जाए।'' (व्यवस्था. 24:16)।

तब अमस्याह ने सारे यहूदियों और बिन्यामीनियों को इकट्ठा किया और उनमें से तीन लाख भाला चलानेवाले और ढाल उठाने वाले बड़े योद्धा पाए गए। फिर उसने एक लाख इस्राएली शूरवीरों को भी एक सौ किक्कार चांदी देकर बुलवाया। परन्तु परमेश्वर के एक जन ने उसके पास आकर कहा, ''हे राजा, इस्राएल की सेना तेरे साथ जाने न पाए, क्योंकि यहोवा इस्राएल की समस्त संतान के साथ नहीं रहता।'' अमस्याह ने परमेश्वर के भक्त से पूछा, ''फिर जो सौ किक्कार चांदी में इस्राएली दल को दे चुका हूँ, उसके विषय क्या करूँ?'' परमेश्वर के भक्त ने उत्तर दिया, ''यहोवा तुझे इससे भी बहुत अधिक दे सकता है।'' तब अमस्याह ने उस एप्रैमी दल को वापस भेज दिया। तब वे अत्यंत क्रोधित होकर वापस लौट गए ओर शोमरोन से बेथोरोन तक यहूदा के सब नगरों पर टूट पड़े और उनके तीन हज़ार निवासी मार डाले और बहुत कुछ

लूटकर ले गए।

जब अमस्याह एदोमियों का संहार करके लौट आया तब वह सेईरियों के देवताओं को अपने साथ ले आया, और अपने देवता करके उन्हें खड़ा किया और उन्हीं के सामने दण्डवत् करने और धूप जलाने लगा। तब यहोवा का क्रोध अमस्याह पर भड़का और एक नबी को उसके पास भेजकर कहा, ''जो देवता अपने लोगों को तेरे हाथ से बचा न सका उनकी खोज में तू क्यों लगा है?'' अमस्याह ने उससे पूछा, ''क्या हम ने तुझे राजमंत्री ठहरा दिया है? चुप रह! क्या तू मरना चाहता है?'' तब नबी यह कहकर चुप हो गया, ''मुझे मालूम है कि परमेश्वर ने तेरा नाश करना ठान लिया है, क्योंकि तू ने ऐसा किया है और मेरी सम्मति नहीं मानी।''

परमेश्वर ने उसे शत्रुओं के हाथ में कर दिया क्योंकि वे एदोम के देवताओं की खोज में लग गए थे। तब इस्राएल के राजा यहोआश ने चढ़ाई की और यहूदा इस्राएल से हार गया। और यहोआश अमस्याह को बंदी बनाकर ले गया। जिस समय अमस्याह यहोवा से फिर कर मूर्तिपूजा में लगा तब से उसके विरुद्ध यरूशलेम में ही द्रोह की गोष्ठी होने लगी थी। वह लाकीश को भाग गया था क्योंकि यहोआश की मृत्यु हो गई थी। अत: दूतों ने लाकीश तक उसका पीछा करके उसे मार डाला।

10. उज्जिय्याह (अजर्याह) (2 राजा 15:1-7; 2 इति. 26)

उज्जिय्याह जो अजर्याह भी कहलाता था, अपने पिता अमस्याह के स्थान राजा बना और उसने 51 वर्ष तक राज्य किया। उसके शासन काल को दो भागों में बाँट सकते हैं। पहला, जब वह परमेश्वर का आज्ञाकारी रहा और बहुत समृद्ध हुआ, और दूसरा, जब वह परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारी हुआ और उसे उसका दण्ड मिला। उसके जीवन की सफलता परमेश्वर की ओर से थी-

1. अपने युद्धों में (2 इति. 26:6-8)
2. अपनी राजधानी को सुरक्षित करने के लिए फाटक और गुम्मट

बनवाकर दृढ़ करने में (2 इति. 26:9)

3. दाख की बारियों और खेती में। (2 इति. 26:10)

4. सेना में। (2 इति. 26:11-15)

परन्तु जब वह सामर्थी हो गया, तब उसका मन घमण्ड से भर गया और वह धूप वेदी पर धूप जलाने के लिए यहोवा के मंदिर में घुस गया। अजर्याह याजक और यहोवा के अस्सी याजक भीतर गए और उस से कहा, ''हे उज्जिय्याह, यहोवा के लिए धूप जलाना तेरा काम नहीं है। यह याजकों का काम है जो इस कार्य के लिए पवित्र किए गए हैं। तू पवित्रस्थान से निकल जा, तू ने विश्वासघात किया है।'' तब राजा उज्जिय्याह धूपदान हाथ में लिए हुए झुंझला उठा। वह याजकों पर झुँझला रहा था कि यहोवा के भवन में धूप की वेदी के पास उसके माथे पर कोढ़ प्रगट हुआ तब उन्होंने उसको वहाँ से झटपट निकाल दिया। उज्जिय्याह राजा अपनी मृत्यु के दिन तक कोढ़ी रहा और एक अलग घर में रहता था और वह यहोवा के भवन में जाने न पाता था। उसकी मृत्यु होने पर उसे राजाओं के मिट्टी देने के खेत में दफनाया गया क्योंकि वह कोढ़ी था। उसके स्थान पर उसका पुत्र योताम राज्य करने लगा।

11. योताम : (2 राजा 15:21-32:38; 2 इति. 27)

जब योताम राज्य करने लगा तब वह पच्चीस वर्ष का था, और उसने सोलह वर्ष यरूशलेम में राज्य किया। उसकी माता का नाम यरूशा था जो सादोक की बेटी थी। उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है। उसने यहोवा के भवन के ऊपरवाले फाटक को बनाया और ओपेल के पर्वत की शहरपनाह पर बहुत कुछ बनवाया। उसने यहूदा के पहाड़ी देश में कई नगर दृढ़ किए और जंगलों में गढ़ और गुम्मट बनाए। उसने अम्मोनियों के राजा से युद्ध करके विजय प्राप्त किया। राजा योताम सामर्थी हो गया क्योंकि वह अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख सीधी चाल चलता था। सोलह वर्ष के राज्य के अन्त में उसकी मृत्यु हो गई और उसे दाऊदपुर में मिट्टी दी गई। उसका पुत्र आहाज उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

प्रश्न :

1. राजा यहोराम का अंत कैसे हुआ और क्यों?
2. यरूशलेम की दीवारें किसने गिराईं?
3. राजा उज्जिय्याह कैसे कोढ़ी बना?

पाठ–10

यहूदा के राजा–3

12. आहाज (2 राजा 16; 2 इति. 28)

जब आहाज राज्य करने लगा तब वह बीस वर्ष का था। उसने सोलह वर्ष तक यरूशलेम में राज्य किया। वह यहूदा के सबसे दुष्ट राजाओं में से एक था। उसके पिता योताम ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में सही था। परन्तु आहाज ने वे सारे कार्य किए जो परमेश्वर को क्रोध दिलाते हैं। उसने बाल देवताओं की मूर्तियाँ ढलवाकर बनाईं, और अन्य देवी देवताओं की उपासना की। यहाँ तक कि अपने बच्चों को उनके लिए बलि चढ़ाया।

इसलिए परमेश्वर ने उसको अरामियों के हाथ में कर दिया और वे उसको जीतकर, उसके बहुत से लोगों को बंदी बनाकर दमिश्क को ले गए। वह इस्राएल के राजा के वश में कर दिया गया, जिसने उसे बड़ी मार से मारा। रमल्याह के पुत्र पेकह ने, यहूदा में एक ही दिन में एक लाख बीस हज़ार लोगों को जो सब के सब वीर थे, घात किया, क्योंकि उन्होंने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया था। इस्राएली लोगों ने भी उनमें से स्त्रियों, बेटों और बेटियों को मिलाकर दो लाख लोगों को बन्दी बना के, और उनकी बहुत लूट भी छीनकर शोमरोन ले गए। परन्तु वहाँ ओदेद नामक यहोवा का एक नबी था, उसने सेना से मिलकर उनसे कहा, ''सुनो, तुम्हारे परमेश्वर ने यहूदियों पर क्रोध करके उन्हें तुम्हारे हाथ में कर दिया है, और तुमने उन्हें दास–दासी करके रखने की ठानी है, इसलिए तुम परमेश्वर यहोवा के सम्मुख दोषी हो। इसलिए इन बन्दियों को जो तुम्हारे भाइयों में से हैं, लौटा दो।'' तब उन्होंने उन यहूदियों को छोड़ दिया।

इस प्रकार यहोवा ने आहाज के कारण यहूदा को दबा दिया, क्योंकि वह निरंकुश होकर चला और यहोवा से विश्वासघात किया। तब अश्शूर का राजा तिलगतपिलनेसेर उसके विरुद्ध आया और उसको कष्ट दिया।

क्लेश के समय राजा आहाज ने यहोवा से और भी विश्वासघात किया। उसने परमेश्वर के भवन के पात्र तुड़वा दिए और भवन के द्वारों को बन्द कर दिया। उसने यरूशलेम के सब कोनों में वेदियाँ बनाईं और पराए देवताओं को धूप लाने के लिए ऊँचे स्थान बनाए और इस प्रकार परमेश्वर को बहुत क्रोध दिलाया।

36 वर्ष की छोटी उम्र में उसकी मृत्यु हो गई, और उसको यरूशलेम नगर में दफनाया गया, परन्तु वह इस्राएल के राजाओं के कब्रिस्तान में पहुँचाया न गया। उसका पुत्र हिजकिय्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

13. हिजकिय्याह (2 राजा 18, 19, 20; 2 इति. 29-32)

जब हिजकिय्याह राज्य करने लगा तब वह पच्चीस वर्ष का था और उसने उनतीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य किया। जैसे उसके मूलपुरुष दाऊद ने किया था, अर्थात् जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था, वैसा ही उसने भी किया। यह ध्यान देने योग्य है कि बाइबल के अनेक अध्याय उसके जीवनकाल का वर्णन करते हैं। वह यहूदा के महानतम राजाओं में से एक था। अपने राज्य के पहले वर्ष के पहले महीने में उसने यहोवा के भवन के द्वार खुलवा दिए, और उनकी मरम्मत भी कराई। फिर उसने याजकों और लेवियों को इकट्ठा किया और उनसे कहा, "अपने आपको पवित्र करो और अपने परमेश्वर यहोवा के भवन को पवित्र करो।" उन्होंने राजा की आज्ञानुसार किया और इसमें उन्हें सोलह दिन लग गए। तब उन्होंने राजा के पास जाकर कहा, "हम ने यहोवा के भवन को और पात्रों समेत होमबलि की वेदी और भेंट की रोटी की मेज़ को भी शुद्ध कर दिया है। जितने पात्र राजा आहाज ने अपने राज्य में विश्वासघात करके फेंक दिए थे, उनको भी हमने ठीक करके पवित्र किया है, और वे यहोवा की वेदी के सामने रखे हुए हैं।"

राजा ने सारे इस्राएल के लिए होमबलि और पापबलि किए जाने की आज्ञा दी थी, अतः याजकों ने बलि चढ़ाए जिससे सारे इस्राएल के लिए प्रायश्चित किया जाए। तब हिजकिय्याह ने कहा, "अब तुम ने यहोवा के

निमित्त अपना अर्पण किया है, इसलिए अब यहोवा के भवन में मेलबलि और धन्यवाद बलि पहुँचाओ।'' तब मंडली के लोगों ने मेलबलि और धन्यवाद बलि पहुँचा दिए और जितने अपनी इच्छा से देना चाहते थे उन्होंने भी होमबलि पहुँचाए। इस प्रकार यहोवा के भवन में की उपासना ठीक की गई। तब हिजकिय्याह और सारी प्रजा के लोग उस काम के कारण आनंदित हुए, जो यहोवा ने अपनी प्रजा के लिए तैयार किया था।

फिर हिजकिय्याह ने सारे इस्राएल और यहूदा में कहला भेजा, और एप्रैम और मनश्शे के पास इस आशय के पत्र लिख भेजे, कि तुम यरूशलेम को यहोवा के भवन में परमेश्वर यहोवा के लिए फसह मनाने को आओ। अतः बहुत अधिक लोग यरूशलेम में इसलिए इकट्ठे हुए, कि दूसरे महीने में अखमीरी रोटी का पर्व मानें। तब दूसरे महीने के चौदहवें दिन को उन्होंने फसह के पशु बलि किए। उन्होंने सात दिन तक अखमीरी रोटी का पर्व बड़े आनंद से मनाया। तब सारी प्रजा ने सम्मति की कि हम और सात दिन पर्व मनाएँगे, अतः उन्होंने और सात दिन आनंद से पर्व मनाया।

इन बातों के बाद अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने आकर यहूदा में प्रवेश कर उसे जीत लेना चाहा। तब हिजकिय्याह ने अपने हाकिमों और वीरों के साथ यह सम्मति की कि नगर के बाहर के सोतों को पटवा दें। उन्होंने सब सोतों को पाट दिया और जहाँ कहीं शहरपनाह टूटी थी, वहाँ उसको बनवाया और उसे गुम्मटों के बराबर ऊँचा किया। बाहर एक और शहरपनाह बनवाई और मिल्लो को दृढ़ किया। फिर राजा हिजकिय्याह और आमोस के पुत्र यशायाह नबी दोनों ने प्रार्थना की और स्वर्ग की ओर दोहाई दी। तब यहोवा ने एक दूत भेज दिया, जिसने अश्शूर के राजा की छावनी में सब शूरवीरों और प्रधानों और सेनापतियों को नष्ट कर दिया। अतः सन्हेरीब लज्जित होकर अपने देश को लौट गया।

जब हिजकिय्याह की मृत्यु हुई तब उसे दाऊद की संतान के कब्रिस्तान की चढ़ाई पर दफनाया गया और सब यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों ने उसकी मृत्यु पर उसका आदर मान किया। उसका पुत्र मनश्शे उसके

स्थान पर राज्य करने लगा।

14. मनश्शे (2 राजा 21; 2 इति. 33)

जब मनश्शे राज्य करने लगा तब वह बारह वर्ष का था, और यरूशलेम में पचपन वर्ष तक राज्य करता रहा। उसने वह सब किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, अर्थात् उन जातियों के घिनौने कामों के अनुसार जिनको यहोवा ने इस्राएलियों के सामने से देश से निकाल दिया था। उसने उन ऊँचे स्थानों को फिर बनाया जिन्हें उसके पिता हिजकिय्याह ने तोड़ दिया था। उसने मूरतें बनाईं और देवताओं के लिए वेदियाँ बनाईं और आकाश के सारे गणों को दण्डवत् करता और उनकी उपासना करता रहा। उसने यहोवा के भवन में और भवन के आंगनों में उनके लिए वेदियाँ बनाईं। उसने अपने बेटों को होम करके चढ़ाया और टोना और तंत्र-मंत्र किया। मनश्शे ने यहूदा और यरूशलेम के निवासियों को यहाँ तक भटका दिया कि उन्होंने उन जातियों से भी बढ़कर बुराई की जिन्हें परमेश्वर ने उनके सामने से नष्ट कर दिया था।

यहोवा ने मनश्शे और उसकी प्रजा से बातें कीं परन्तु उन्होंने कुछ ध्यान नहीं दिया। तब यहोवा ने उन पर अश्शूर के सेनापतियों से चढ़ाई कराई और वे मनश्शे को नकेल डालकर और पीतल की बेड़ियों से जकड़कर बेबीलोन को ले गए। तब संकट में पड़कर वह अपने परमेश्वर को मानने लगा और बहुत दीन होकर उससे प्रार्थना की। तब परमेश्वर ने प्रसन्न होकर उसकी विनती सुनी और उसको यरूशलेम में पहुँचाकर उसका राज्य लौटा दिया। तब उसने पराए देवताओं ओर वेदियों को दूर करके नगर से बाहर फेंकवा दिया। तब उसने यहोवा की वेदी की मरम्मत की और उस मेलबलि और धन्यवाद बलि चढ़ाने लगा और यहूदियों को परमेश्वर यहोवा की उपासना करने की आज्ञा दी। जब उसकी मृत्यु हुई तब उसे उसी के घर में दफनाया गया और उसका पुत्र आमोन उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

15. आमोन (2 राजा 21:19-26; 2 इति. 33:21-25)

जब आमोन राज्य करने लगा तब वह बाईस वर्ष का था और उसने

यरूशलेम में दो वर्ष राज्य किया। उसने वह किया जो परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा था। जैसे उसका पिता मनश्शे यहोवा के आगे दीन हुआ, वैसे वह दीन न हुआ। उसके कर्मचारियों ने उसी के भवन में उसे मार डाला। उसके स्थान पर उसका पुत्र योशिय्याह राज्य करने लगा।

16. **योशिय्याह** (2 राजा 22:1-23; 30; 2 इति. 34:1-35; 27)

योशिय्याह यहूदा के अच्छे राजाओं की सूची में अंतिम था। जब वह राज्य करने लगा तब वह आठ वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में इकतीस वर्ष तक राज्य किया। उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में सही था। वह अपने मूलपुरुष दाऊद के मार्गों पर चला। उसको गद्दी पर बैठे आठ वर्ष भी नहीं हुए थे कि उसे छोटी उम्र में ही वह परमेश्वर की खोज करने लगा। उसने मूरतों और ऊँचे स्थानों को दूर करके यहूदा और यरूशलेम को शुद्ध किया। फिर अपने राज्य के अठारहवें वर्ष में उसने अपने परमेश्वर यहोवा के भवन की मरम्मत कराने के लिए लोगों को भेज दिया। जब वे उस धन को जो यहोवा के भवन में पहुँचाया गया था, निकाल रहे थे, तब हिल्किय्याह याजक को मूसा के द्वारा दी हुई यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक मिली। उसने वह पुस्तक शापान मंत्री को दी, जो उसे राजा के पास ले गया और उसे पढ़कर सुनाया। व्यवस्था की वे बातें सुनकर राजा ने अपने वस्त्र फाड़े। फिर राजा ने यहूदा और यरूशलेम के सब पुरनियों को, और सब निवासियों और याजकों और लेवियों को संग लिया और यहोवा के भवन को गया, और वाचा की पुस्तक को पढ़कर उन्हें सुनाया। तब राजा ने अपने स्थान पर खड़े होकर यहोवा से वाचा बाँधी कि मैं यहोवा के पीछे चलूँगा और इन वाचा की बातों को पूरा करूँगा। फिर राजा ने उन सभों से भी वैसी ही वाचा बन्धाई। उसके जीवन भर उन्होंने परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना न छोड़ा।

योशिय्याह ने यरूशलेम में यहोवा के लिए फसह का पर्व माना और पहले महीने के चौदहवें दिन को फसह का पशु बलि किया गया। यह फसह योशिय्याह के राज्य के अठारहवें वर्ष में मनाया गया। इसके

पश्चात मिस्र के राजा नको के साथ युद्ध में वह घायल हो गया और यरूशलेम पहुँचकर उसकी मृत्यु हो गई। वहाँ उसके पुरखाओं की कब्र में वह दफनाया गया। यिर्मयाह ने योशिय्याह के लिए विलाप का गीत बनाया और ये बातें विलापगीतों में लिखी हुई हैं।

प्रश्न :

1. राजा आहाज के दुष्ट कार्यों का वर्णन करो।
2. हिजकिय्याह ने किस प्रकार अपने राज्य को और प्रजा को पवित्र किया?
3. योशिय्याह के राज्य का वर्णन करो।

पाठ-11
यहूदा के राजा-4

17. यहोआहाज (2 राजा 23:31-35; 2 इति. 36:1-4)

तब लोगों ने योशिय्याह के पुत्र यहोआहाज को उसके पिता के स्थान पर राजा बनाया। जब यहोआहाज राज्य करने लगा तब वह तेईस वर्ष का था और उसने तीन महीने तक यरूशलेम में राज्य किया। तब मिस्र के राजा ने उसको यरूशलेम में राजगद्दी से उतार दिया और उसके भाई एल्याकीम को यहूदा और यरूशलेम का राजा बनाया और उसका नाम बदलकर यहोयाकीम रखा और यहोआहाज को वह मिस्र ले गया।

18. यहोयाकीम (2 राजा 23:36:24:7; 2 इति. 36:5:10)

जब यहोयाकीम राज्य करने लगा तब वह पच्चीस वर्ष का था और उसने ग्यारह वर्ष यरूशलेम पर राज्य किया। उसने वह काम किए जो परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरे थे। उस पर बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने चढ़ाई की और बेबीलोन ले जाने के लिए उसको पीतल की बेड़ियाँ पहना दीं। फिर नबूकदनेस्सर ने यहोवा के भवन के कुछ पात्र भी बेबीलोन ले जाकर अपने मंदिर में रख दिए। जो लोग बंदी बनाकर ले जाए गए थे दानिय्येल उनमें से एक था। उसका पुत्र यहोयाकीन उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

19. यहोयाकीन (2 राजा 24:8-17; 2 इति. 36:9-10)

जब यहोयाकीन राज्य करने लगा तब वह आठ वर्ष का था और तीन महीने और दस दिन तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। उसने वह किया जो परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है। नबूकदनेस्सर ने लोगों को भेजकर उसे और यहोवा के भवन के मनभावने पात्रों को बेबीलोन में मँगवा लिया, और उसके भाई सिदकिय्याह को यहूदा और यरूशलेम पर राजा नियुक्त किया।

20. सिदकिय्याह : (2 राजा 24:18-20; 2 इति. 36:11-13)

जब सिदकिय्याह राज्य करने लगा तब वह इक्कीस वर्ष का था और यरूशलेम में ग्यारह वर्ष तक राज्य करता रहा। उसने वही किया जो परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है। यद्यपि यिर्मयाह नबी यहोवा की ओर से बातें कहता था, तौभी वह उसके सामने दीन न हुआ। सब प्रधान याजकों ने और लोगों ने भी अन्य जातियों के से घिनौने काम करके बहुत बड़ा विश्वासघात किया और यहोवा के भवन को जो उसने यरूशलेम में पवित्र किया था, अशुद्ध कर डाला। परन्तु परमेश्वर यहोवा ने बड़ा यत्न करके अपने दूतों से उनके पास कहला भेजा, क्योंकि वह अपनी प्रजा और अपने धाम पर तरस खाता था। परन्तु वे परमेश्वर के दूतों को ठट्ठों में उड़ाते, उसके वचनों को तुच्छ जानते और उसके नबियों का मज़ाक उड़ाते थे। अतः यहोवा का क्रोध उन पर पड़ा। परमेश्वर ने कसदियों के राजा से उन पर चढ़ाई करवाई जिन्होंने उनके जवानों, कुँवारियों, बूढ़े और पक्के बाल वाले, किसी पर भी कोमलता न की। वह परमेश्वर के सब पात्रों को और यहोवा के भवन, और राजा और हाकिमों के खजाने को भी बेबीलोन में ले गया। उन्होंने परमेश्वर के भवन को फूँक दिया और यरूशलेम की शहरपनाह को तोड़ डाला और आग लगाकर उसके सब भवनों को जला दिया और उसमें का सारा बहुमूल्य सामान नष्ट कर दिया। यरूशलेम का अंतिम विनाश ई.पू. 586 में नबूजरदान ने किया। उसने मंदिर को जला दिया, शहरपनाह को तोड़ दिया और मंदिर के खजाने को लूट लिया और वहाँ के निवासियों को बंदी बनाकर ले गया।

प्रश्न :

1. बेबीलोन की बंधुआई से जुड़े कौन से राजा और भविष्यद्वक्ता थे?
2. परमेश्वर ने यहूदा को बेबीलोन की बंधुवाई में क्यों जाने दिया?
3. सिदकिय्याह के शासन काल का वर्णन करो।

पाठ-12

इस्राएल के राजा-1

1. यारोबाम (1 राजा 11:28-40; 12:20-40:20)

यारोबाम एप्रैमी था और बड़ा शूरवीर था। जब राजा सुलैमान ने उसे देखा कि वह परिश्रमी है, तब उसने उसको यूसुफ के घराने के सब काम पर मुखिया ठहराया। एक दिन नबी अहिय्याह यारोबाम से मिला और तब नबी ने एक नई चादर को फाड़कर उसके बारह टुकड़े कर दिए और यारोबाम से कहा ''इसमें से दस टुकड़े ले ले, क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है कि मैं राज्य को सुलैमान के हाथ से लेकर दस गोत्र तेरे हाथ में कर दूँगा।'' जब यह बात सुलैमान को पता चली तो उसने यारोबाम को मार डालना चाहा। तब यारोबाम मिस्र के राजा शीशक को पास भाग गया और सुलैमान के मरने तक वहीं रहा।

सुलैमान की मृत्यु के बाद उसका पुत्र रहूबियाम उसके स्थान पर राजा हुआ। तब यारोबाम और इस्राएल की समस्त सभा रहूबियाम के पास जाकर कहने लगे, ''तेरे पिता ने तो हम लोगों पर भारी जूआ डाल रखा था, इसलिए अब तू अपने पिता की कठिन सेवा को और उस भारी जूए को कुछ हलका कर तब हम तेरे अधीन रहेंगे।'' तब रहूबियाम ने उन बूढ़ों की सम्मति ली जो उसके पिता सुलैमान के सामने उपस्थित रहा करते थे। उन्होंने उसे उत्तर दिया कि यदि तू अपनी प्रजा का दास बनकर उनसे मधुर बातें कहे तो वे सदैव तेरे अधीन बने रहेंगे। परन्तु रहूबियाम ने उनकी सम्मति को छोड़कर अपने साथी जवानों की सम्मति को माना जिन्होंने उससे कहा कि ''तू उनसे यों कहना कि मेरी छिंगुलियाँ मेरे पिता की कमर से भी मोटी हैं। मेरे पिता ने तुम पर जो भारी जूआ रखा था, उसे मैं और भी भारी करूँगा। मेरा पिता तुम को कोड़ों से ताड़ना देता था, परन्तु मैं बिच्छुओं से दूँगा।'' राजा की यह बातें सुनकर इस्राएली वापस अपने-अपने डेरे को चले गए और दाऊद के घराने से फिर गए। केवल जितने इस्राएली यहूदा के नगरों में बसे हुए थे, उन पर

रहूबियाम राज्य करता रहा।

तब यारोबाम एप्रैम के पहाड़ी देश के शकेम नगर को दृढ़ करके उसमें रहने लगा, फिर वहाँ से निकलकर पनूएल को भी दृढ़ किया। तब यारोबाम ने सोचा कि यदि प्रजा के लोग यरूशलेम में बलि करने को जाएँगे तो उनका मन रहूबियाम की तरफ हो जाएगा। अतः राजा ने सोने के दो बछड़े बनवाकर एक को बेतेल में और दूसरे को दान में स्थापित किया। इस प्रकार उसने प्रजा से पाप करवाया।

फिर यारोबाम ने आठवें महीने के पंद्रहवें दिन यहूदा के पर्व के समान एक पर्व ठहरा दिया और वेदी पर बलि चढ़ाने लगा। उसने बेतेल में अपने बनाए हुए बछड़ों के लिए वेदी पर बलि किया और अपने बनाए ऊँचे स्थानों के याजकों को बेतेल में ठहरा दिया। तब यहोवा से वचन पाकर परमेश्वर का एक जन यहूदा से बेतेल को आया, और यारोबाम धूप जलाने के लिए वेदी के पास खड़ा था। परमेश्वर के जन ने जब उसके विरुद्ध परमेश्वर का वचन सुनाया तब यारोबाम ने क्रोधित होकर उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाकर कहा, ''उसको पकड़ लो!'' तब उसका हाथ सूख गया और वह उसे अपनी ओर खींच न सका। तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, ''अपने परमेश्वर यहोवा को मना और मेरे लिए प्रार्थना कर कि मेरा हाथ पहले जैसा हो जाए।'' तब परमेश्वर के जन ने यहोवा से प्रार्थना की और राजा का हाथ ठीक हो गया।

परन्तु यारोबाम अपनी बुरी चाल से न फिरा। उसने सब प्रकार के लोगों में से ऊँचे स्थानों के लिए याजक बनाए, वरन् जो कोई चाहता था, उसका संस्कार करके वह उसको याजक बना देता था। यह बात यारोबाम के घराने का पाप ठहरी और उसका विनाश हुआ।

फिर यारोबाम का पुत्र अबिय्याह रोगी हुआ। तब यारोबाम ने अपनी पत्नी से कहा, ''ऐसा भेष बना कि कोई तुझे पहचान न सके और शीलो को चली जा। वहाँ अहिय्याह नबी रहता है जिसने मुझ से कहा था कि मैं राजा बनूँगा। वह तुझे बताएगा कि लड़के का क्या होगा।'' यारोबाम

की स्त्री भेष बदलकर शीलो को पहुँची परन्तु यहोवा ने अहिय्याह को बना दिया था कि यारोबाम की स्त्री भेष बदलकर तेरे पास आएगी और तू उससे ये ये बातें कहना। यारोबाम की स्त्री से अहिय्याह ने कहा, ''हे यारोबाम की स्त्री! भीतर आ, तू ने भेष क्यों बदला है? मुझे तेरे लिए भारी सन्देश मिला है। तू जाकर यारोबाम से कह कि परमेश्वर यहोवा यूँ कहता है कि मैंने तुझको प्रजा में से बढ़ाकर प्रजा पर प्रधान बनाया और दाऊद के घराने से राज्य छीनकर तुझको दिया, परन्तु तू ने उन सभों से बढ़कर बुराई की है जो तुझ से पहले थे। इस कारण मैं यारोबाम के घराने को पूरी रीति से नष्ट कर दूँगा। इसलिए तू उठ और अपने घर जा, और नगर के भीतर तेरे पाँव पड़ते ही तेरा पुत्र मर जाएगा।'' तब यारोबाम की स्त्री लौट गई और उसका पुत्र मर गया। यारोबाम बाईस वर्ष तक राज्य करके मर गया और उसका पुत्र नादाब उसके स्थान पर राजा हुआ।

नादाब ने दो वर्ष इस्राएल पर राज्य किया। उसने वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। वह अपने पिता के मार्ग पर वही पाप करता चलता रहा जो उसने इस्राएल से करवाया था। तब अहिय्याह के पुत्र बाशा ने उसके विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी करके उसको मार डाला और उसके स्थान पर राजा बन गया। राजा बनते ही उसने यारोबाम के समस्त घराने को मार डाला। उसने यारोबाम के वंश को यहाँ तक नष्ट किया कि एक भी जीवित न बचा। यह सब यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ जो उसने अपने दास शीलोवासी अहिय्याह से कहलवाया था। यह इस कारण हआ कि यारोबाम ने स्वयं पाप किए और इस्राएल से भी करवाए थे और परमेश्वर को क्रोधित किया था।

2. बाशा (1 राजा 15:32-16:6)

बाशा इस्साकार के गोत्र का था और उसने चौबीस वर्ष इस्राएल पर राज्य किया। उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। वह यारोबाम के मार्ग पर वही पाप करता रहा जिसे उसने इस्राएल से करवाया था। बाशा की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र एला उसके स्थान पर राज्य

करने लगा।

3. एला (1 राजा 16:6-14)

एला ने दो वर्ष तक इस्राएल पर राज्य किया। जब वह अर्सा नामक भण्डारी के घर में था, तब पीकर मतवाला हो गया था। तब जिम्री नामक उसके एक कर्मचारी ने राजद्रोह की गोष्ठी की और उसे मार डाला और उसके स्थान पर राजा बन गया।

4. जिम्री (1 राजा 16:15-20)

जिम्री ने तिर्सा में सात दिन तक राज्य किया। जब लोगों ने सुना कि जिम्री ने राजद्रोह करके राजा को मार डाला है, तो उसी दिन समस्त इस्राएल ने ओम्री नामक प्रधान सेनापति को इस्राएल का राजा बनाया। तब ओम्री ने इस्राएल को संग ले तिर्सा को घेर लिया। जब जिम्री ने देखा कि नगर ले लिया गया है, तब राजभवन के गुम्मट में जाकर राजभवन में आग लगा दी और उसी में स्वयं जल मरा। यह उसके पापों के कारण हुआ क्योंकि उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था।

5. तिब्नी (1 राजा 16:21, 22)

जिम्री के राजद्रोह के समय इस्राएली प्रजा दो भागों में बँट गई। प्रजा के आधे लोग तिब्नी को राजा बनाने के लिए उसके पीछे हो लिए और आधे ओम्री के पीछे हो लिए। ओम्री और उसके लोगों ने तिब्नी और उसके लोगों को हरा दिया और तिब्नी मारा गया और ओम्री राजा बन गया।

6. ओम्री (1 राजा 16:21-29)

ओम्री ने इस्राएल पर बारह वर्ष तक राज्य किया। उसने शोमरोन पहाड़ पर एक नगर बसाया। उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र अहाब उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

7. अहाब (1 राजा 16:29-22:40)

अहाब ने शोमरोन में बाईस वर्ष तक इस्राएल पर राज्य किया। अहाब

ने उन सबसे अधिक जो उससे पहले थे, वह कर्म किए जो यहोवा की दृष्टि में बुरे थे। उसने सीदोनियों के राजा एतबाल की बेटी ईजेबेल से विवाह करके बाल देवता की उपासना की। उसने बाल के लिए शोमरोन में एक भवन बनवाया और उसमें एक वेदी भी बनाई। परमेश्वर ने एलिय्याह को अहाब के पास भेजा। उसने अहाब को परमेश्वर का संदेश सुना दिया परन्तु उसने उन बातों पर ध्यान नहीं दिया।

कुछ समय के पश्चात् अराम के राजा बेन्हदद ने अपनी सारी सेना इकट्ठी की और शोमरोन पर चढ़ाई की। तब इस्राएल के राजा ने परमेश्वर की सम्मति न ली परन्तु अपने देश के पुरनियों को बुलवाकर उनकी सलाह ली। परन्तु फिर भी परमेश्वर ने अहाब की सहायता की। तब एक नबी ने इस्राएल के राजा अहाब के पास जाकर कहा, ''यहोवा तुझ से यों कहता है कि यह बड़ी भीड़ जो तू ने देखी है, उस सबको मैं आज तेरे हाथ में कर दूँगा। इससे तू जान लेगा कि मैं यहोवा हूँ।'' परमेश्वर ने अपने वायदे को पूरा किया और अहाब को विजय दिलाई। एक वर्ष के बीतने पर फिर से अराम के राजा ने इस्राएल से युद्ध किया और फिर से परमेश्वर ने अहाब को विजय दिलाई ताकि अरामी और अहाब जान लें कि यहोवा ही परमेश्वर है। (1 राजा 20:28)।

फिर भी अहाब परमेश्वर की इच्छा को छोड़ अपनी इच्छा पर चलता रहा। उसने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं किया। उसने नाबोत नामक एक यिज्रेली की दाख की बारी को ले लेना चाहा। उसकी पत्नी ईज़ेबेल ने एक दुष्ट योजना बनाकर नाबोत को मरवा डाला और दाख की बारी अहाब को दिलवा दी। परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में अहाब हत्यारा माना गया। परमेश्वर ने एलिय्याह के द्वारा उसे संदेश भेजा कि जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है उसे करने को तूने अपने को बेच डाला है। मैं तुझ पर ऐसी विपत्ति डालूँगा कि तुझे पूरी रीति से मिटा डालूँगा। क्योंकि तू ने मुझे क्रोधित किया है। एलिय्याह के ये वचन सुनकर अहाब ने अपने वस्त्र फाड़े और अपनी देह पर टाट लपेटकर उपवास करने और टाट ही ओढ़े पड़ा रहने लगा। तब यहोवा का यह वचन एलिय्याह के पास पहुँचा, कि अहाब मेरे सामने नम्र बन गया है।

इस कारण मैं वह विपत्ति उस पर न डालूँगा। परन्तु अहाब का मन परमेश्वर की ओर पूरी रीति से लगा न रहा। कुछ समय के पश्चात् इस्राएल के राजा अहाब और यहूदा के राजा यहोशापात ने मिलकर गिलाद के रामोत पर चढ़ाई की। इस युद्ध में अहाब भेष बदलकर गया ताकि पहचाना न जा सके। अराम के राजा ने अपने रथों के बत्तीसों प्रधानों को आज्ञा दी थी कि केवल इस्राएल के राजा से युद्ध करो। परन्तु उसे किसी ने न पहिचाना क्योंकि उसने भेष बदल रखा था। तब किसी ने अटकल से तीर चलाया और वह इस्राएल के राजा अहाब के झिलम और निचले वस्त्र के बीच छेदकर लगा, और शाम होते-होते उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र अहज्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

प्रश्न :

1. यारोबाम ने इस्राएली लोगों को अपने वश में रखने के लिए क्या किया?
2. किस राजा ने मात्र सात दिन तक राज्य किया?
3. राजा अहाब के जीवन और अंत का वर्णन करो।

पाठ–13

इस्राएल के राजा–2

8. अहज्याह (1 राजा 22:51–2 राजा 1:1–18)

अहाब के पुत्र अहज्याह ने शोमरोन में दो वर्ष तक इस्राएल पर राज्य किया। उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। वह अपने कार्यों से परमेश्वर यहोवा को क्रोधित करता रहा। एक दिन अहज्याह एक जालीदार खिड़की में से गिर पड़ा और बीमार हो गया। तब उसने दूतों को यह कहकर भेजा, ''तुम जाकर एक्रोन के बालजबूब नामक देवता से यह पूछ आओ कि क्या मैं इस बीमारी से बचूँगा कि नहीं?'' तब यहोवा के दूत ने एलिय्याह से कहा, ''उठकर शोमरोन के राजा के दूतों से मिलने को जा, और उनसे कह, 'क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं जो तुम एक्रोन के बालजबूब देवता से पूछने जाते हो?' इसलिए अब यहोवा तुझ से यों कहता है, जिस पलंग पर तू पड़ा है, उस पर से कभी न उठेगा परन्तु मर ही जाएगा।'' तब एलिय्याह चला गया।

जब अहज्याह के दूत उसके पास लौट आए तब उसने उनसे पूछा, ''तुम क्यों लौट आए हो?'' तब उन्होंने उसे एलिय्याह के द्वारा दिया गया परमेश्वर का संदेश सुना दिया। तब राजा ने उसके पास पचास सिपाहियों और उनके प्रधान को एलिय्याह के पास भेजा कि उसे पकड़ लें परन्तु एलिय्याह ने उस प्रधान से कहा, ''यदि मैं परमेश्वर का भक्त हूँ तो आकाश से आग गिरकर तुझे और तेरे पचासों समेत भस्म कर डाले।'' तब आकाश से आग उतरी और उन सबको भस्म कर डाला। राजा ने फिर से पचास सिपाहियों को उनके प्रधान के साथ एलिय्याह के पास भेजा। परन्तु आकाश से परमेश्वर की आग उतरी और उन सबको भस्म कर दिया। फिर राजा ने तीसरी बार पचास सिपाहियों को उनके प्रधान के साथ एलिय्याह के पास भेजा। वह प्रधान एलिय्याह के सामने घुटनों के बल गिरा और गिड़गिड़ाकर उससे कहा, ''हे परमेश्वर के भक्त, मेरा प्राण और तेरे इन पचास दासों के प्राण तेरी दृष्टि में अनमोल

ठहरें।''

तब यहोवा के दूत ने एलिय्याह से कहा, ''उसके संग जा।'' तब एलिय्याह उठकर उनके संग राजा के पास गया, और उससे कहा, ''यहोवा यों कहता है, तू ने तो एक्रोन के बालजबूब देवता से पूछने को दूत भेजे थे, तो क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं कि जिससे तू पूछ सके? इस कारण तू जिस पलंग पर पड़ा है, उस पर से कभी न उठेगा, परन्तु मर ही जाएगा।''

यहोवा के इस वचन के अनुसार अहज्याह मर गया। उसकी सन्तान न होने के कारण उसका भाई यहोराम उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

9. यहोराम (2 राजा 1:17-9:24) (योराम)

यहोराम अहाब का दूसरा पुत्र था जिसने इस्राएल पर राज्य किया। उसने बारह वर्ष तक राज्य किया। उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, परन्तु वह अपने माता-पिता से बेहतर था। तब मोआब के राजा मेशा ने इस्राएल के राजा से बलवा किया। तब यहोराम ने अपनी सहायता के लिए यहूदा के राजा यहोशापात को बुलाया। तब एदोम के राजा ने भी उसका साथ दिया। जब वे सात दिन तक घूमकर चल चुके तब सेना और उसके पशुओं के लिए पानी कहीं न मिला। यहोशापात ने एलीशा भविष्यद्वक्ता के पास जाकर सहायता माँगी। परमेश्वर की ओर से संदेश पाकर एलीशा ने उनसे कहा, ''इस नाले में तुम लोग इतना खोदो कि इसमें गड़हे हो जाएँ, और वह पानी से भर जाएगा।'' यहोवा के वचन के अनुसार उन्होंने किया और देश जल से भर गया। और उन्होंने मोआब के विरुद्ध युद्ध भी जीत लिया। परन्तु जब वह समय पूरा हुआ जो परमेश्वर ने अहाब के घराने के विषय में कहा था, तब येहू के द्वारा परमेश्वर ने यहोराम को मारकर अहाब के घराने का अंत कर दिया।

10. येहू (2 राजा 9:1-10:36)

येहू का राजवंश एक सौ चौदह वर्ष का रहा। अराम के राजा हजाएल और येहू को परमेश्वर ने चुना ताकि वे अहाब के घराने को दण्ड दें

और पूरी रीति से नाश करें। उसने अहाब के पुत्र योराम को मार डाला। अहाब की पत्नी ईज़ेबेल को और अहाब के सत्तर बेटे, पोते जो शोमरोन में रहते थे उन सबको मरवा दिया। फिर अहाब के घराने के जितने लोग यिज्रैल में रह गए थे उन सभों को और उसके जितने प्रधान पुरुष और मित्र और याजक थे उन सभों को येहू ने मार डाला, यहाँ तक कि उसने किसी को जीवित न छोड़ा। यह उस वचन के अनुसार हुआ जो यहोवा ने अपने दास एलिय्याह के द्वारा अहाब के घराने के विषय में कहा था। येहू ने बाल के सब पुजारियों को तलवार से मरवा दिया और लाठें आग में फूँक दीं। बाल के भवन को ढाकर शौचालय बना दिया। इस प्रकार येहू ने बाल का इस्राएल में से नाश करके दूर किया। यहोवा ने येहू से कहा, ''इसलिए कि तू ने वह किया जो मेरी दृष्टि में ठीक है, इसलिए तेरे परपोते के पुत्र तक तेरी सन्तान इस्राएल की गद्दी पर विराजती रहेगी।''

परन्तु येहू ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था पर पूर्ण मन से चलने को चौकसी नहीं की। येहू ने शोमरोन में अठ्ठाईस वर्ष इस्राएल पर राज्य किया। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र यहोआहाज उसके स्थान पर राजा बना।

11. यहोआहाज (2 राजा 13:1-9)

येहू के पुत्र यहोआहाज ने शोमरोन में इस्राएल पर सत्रह वर्ष तक राज्य किया। उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। इसलिए यहोवा का क्रोध इस्राएलियों के विरुद्ध भड़क उठा, और उसने उनको अराम के राजा हजाएल और उसके पुत्र बेन्हदद के अधीन कर दिया। तब यहोआहाज यहोवा के सामने गिड़गिड़ाया और यहोवा ने उसकी सुन ली। यहोवा ने इस्राएल को एक छुड़ानेवाला दिया और वे अराम के वश से छूट गए। यहोआहाज की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र यहोआश उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

12. यहोआश (2 राजा 13:10-14:16)

यहोआश ने इस्राएल पर सोलह वर्ष तक राज्य किया और उसने वह

किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। तब अमस्याह ने इस्राएल के राजा यहोआश के पास दूतों से कहला भेजा कि आओ हम एक दूसरे का सामना करें। यहोआश ने उसे उत्तर दिया, "तू ने एदोमियों को जीता है इसलिए तू फूल उठा है। तू अपनी हानि के लिए यहाँ क्यों हाथ उठाता है? इससे तू क्या यहूदा भी शर्मिंदा होगा।" परन्तु अमस्याह ने उसकी बात न सुनी और युद्ध के लिए आगे बढ़ा। उन्होंने बेतशेमेश में एक दूसरे का सामना किया। तब यहूदा इस्राएल से हार गया और यहोआश ने अमस्याह को पकड़ लिया और शोमरोन को लौट गया। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र यारोबाम उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

13. यारोबाम (द्वितीय) (2 राजा 14:23-29)

यहोआश के पुत्र यारोबाम ने शोमरोन में इस्राएल पर एकतालीस वर्ष तक राज्य किया। उसका शासन काल लंबा था परन्तु उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। फिर भी उसने इस्राएल की सीमा हमात की घाटी से लेकर अराबा के ताल तक पहले जैसा कर दिया जैसा सुलैमान के समय में था। क्योंकि यहोवा ने इस्राएल का दुख देखा कि इस्राएल के लिए कोई सहायक न था। अतः यहोवा ने यारोबाम के द्वारा उनको छुटकारा दिया। यारोबाम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र जकर्याह उसके स्थान पर राज्य करने लगा।

14. जकर्याह (2 राजा 15:8-12)

यारोबाम के पुत्र जकर्याह ने इस्राएल पर मात्र छः महीने राज्य किया। उसने अपने पुरखाओं के समान वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। येहू के वंश का चौथा और अंतिम राजा जकर्याह था। याबेश के पुत्र शल्लूम ने उसके विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी करके प्रजा के सामने उसकी हत्या की और उसके स्थान पर राजा बन गया। यों यहोवा का वह वचन पूरा हुआ, जो उसने येहू से कहा था, "तेरे परपोते के पुत्र तक तेरी सन्तान इस्राएल की गद्दी पर बैठती जाएगी।" और वैसा ही हुआ।

15. शल्लूम (2 राजा 15:10-15)

जकर्याह की हत्या करके शल्लूम इस्राएल पर राज्य करने लगा,

परन्तु उसका शासन काल एक महीने का था। जैसा उसने जकर्याह के साथ किया वैसा ही उसके साथ भी हुआ। गादी के पुत्र मनहेम ने तिर्सा से शोमरोन जाकर शल्लूम की हत्या कर दी और उसके स्थान पर राजा बन गया।

16. मनहेम (2 राजा 15:16-22)

मनहेम एक क्रूर शासक था। उसने दस वर्ष तक इस्राएल पर राज्य किया। उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। जब अश्शूर के राजा पूल ने देश पर चढ़ाई की तब मनहेम ने उसे हज़ार किक्कार चाँदी दी ताकि वह राज्य को उसी के हाथ में रहने दे। मनहेम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र पकह्याह उसके स्थान पर राजा बना।

17. पकह्याह (2 राजा 15:23-25)

मनहेम के पुत्र पकह्याह ने दो वर्ष तक शोमरोन में इस्राएल पर राज्य किया। उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। उसी के सरदार रमल्याह के पुत्र पेकह ने उसके विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी करके, शोमरोन के राजभवन के गुम्मट में उसको मार डाला और उसके स्थान पर राजा बन गया।

18. पेकह (2 राजा 15:27-31)

रमल्याह के पुत्र पेकह ने शोमरोन में बीस वर्ष तक इस्राएल पर राज्य किया। उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। उसके दिनों में अश्शूर के राजा ने देश के बहुत से हिस्से को अपने कब्जे में कर लिया, और उनके लोगों को बंदी बनाकर अश्शूर को ले गया। तब एला के पुत्र होशे ने पेकह के विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी करके उसे मार डाला और उसके स्थान पर राजा बन गया।

19. होशे (2 राजा 17)

होशे ने शोमरोन में नौ वर्ष तक इस्राएल पर राज्य किया। उसने भी वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। जब अश्शूर के राजा शल्मनेसेर ने उस पर चढ़ाई की तब होशे उसके अधीन होकर उसको भेंट देने

लगा। होशे ने मिस्र के राजा के साथ मिलकर अश्शूर के राजा के विरुद्ध गोष्ठी की। इस कारण अश्शूर के राजा ने होशे को बंदी बना लिया और बेड़ी डालकर बन्दीगृह में डाल दिया। तब अश्शूर के राजा ने पूरे देश पर चढ़ाई की और शोमरोन को ले लिया और इस्राएलियों को अश्शूर ले जाकर अलग-अलग नगरों में बसा दिया। इस प्रकार यहोवा ने इस्राएल को अपने देश से निकालकर उन्हें परमेश्वर को त्याग देने और उनकी अनाज्ञाकारिता के लिए दण्ड दिया और इस प्रकार लगभग दो सौ वर्षो का दुष्ट राजाओं का शासन और राज्य का इतिहास समाप्त हुआ।

प्रश्न :

1. यहोराम के शासन काल में हुई महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करो।
2. येहू ने परमेश्वर के प्रति अपने लगन को कैसे प्रकट किया?
3. अंततः इस्राएल राष्ट्र का क्या हुआ और क्यों?

पाठ-14

परमेश्वर का जन

(1 राजा 13)

यारोबाम एप्रैम के पहाड़ी देश के शकेम नगर को दृढ़ करके उसमें रहने लगा। उसने सोचा कि यदि प्रजा के लोग बलि करने यरूशलेम जाएँगे तो मेरे विरुद्ध हो जाएँगे। अतः उसने मूर्तिपूजा चलाई (1 राजा 12:28-33)। उसने सोने के दो बछड़े बनाए और एक को बेतेल और दूसरे को दान में स्थापित किया और लोगों को मूर्तिपूजा के लिए प्रोत्साहित किया। उसने ऊँचे स्थानों के भवन बनाए और सब प्रकार के लोगों में से जो लेवी वंशी नहीं थे, याजक ठहराए। जिस महीने की उसने अपने मन में कल्पना की थी, अर्थात् आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन को वह बेतेल में अपनी बनाई हुई वेदी के पास चढ़ गया कि उस पर धूप जलाए।

परमेश्वर का जन : उसकी भविष्यद्वाणी

परमेश्वर यहोवा से वचन पाकर परमेश्वर का एक जन यहूदा से बेतेल को आया, तब यारोबाम धूप जलाने के लिए वेदी के पास खड़ा था। उस जन ने यहोवा से वचन पाकर वेदी के विरुद्ध यों पुकारा, ''वेदी, हे वेदी! यहोवा यों कहता है, कि सुन, दाऊद के कुल में योशिय्याह नामक एक लड़का उत्पन्न होगा, वह उन ऊँचे स्थान के याजकों को जो तुझ पर धूप जलाते हैं, तुझ पर बलि कर देगा, और तुझ पर मनुष्यों की हड्डियाँ जलाई जाएँगी। और उसका चिह्न यह है कि यह वेदी फट जाएगी और इस पर की राख गिर जाएगी।'' परमेश्वर के जन का यह वचन सुनकर यारोबाम ने वेदी के पास से हाथ बढ़ाकर कहा, ''उसको पकड़ लो!'' तब उसका हाथ जो उसकी ओर बढ़ाया गया था, सूख गया और वह उसे अपनी ओर खींच न सका। और वेदी फट गई और उस पर की राख गिर गई। अतः वह चिह्न पूरा हुआ जो परमेश्वर के जन ने यहोवा से वचन पाकर कहा था। तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, ''अपने परमेश्वर से मेरे लिए प्रार्थना कर कि मेरा हाथ

पहले जैसा हो जाए।'' तब परमेश्वर के जन ने यहोवा से प्रार्थना की और राजा का हाथ ठीक हो गया। तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, ''मेरे संग मेरे घर चल और मैं तुझे दान भी दूँगा।'' परमेश्वर के जन ने राजा से कहा, ''चाहे तू मुझे अपना आधा घर भी दे, तौभी मैं तेरे साथ न जाऊँगा क्योंकि यहोवा के वचन के द्वारा मुझे ऐसी ही आज्ञा मिली है।'' तब परमेश्वर का जन दूसरे मार्ग से लौट गया।

परमेश्वर का जन : उसका प्रलोभन

बेतेल में एक बूढ़ा नबी रहता था। उसके एक बेटे ने आकर अपने पिता से उन सब कामों का वर्णन किया जो परमेश्वर के जन ने उस दिन बेतेल में किए थे। तब वह एक गदहे पर बैठकर परमेश्वर के जन को ढूँढ़ने गया और उसे एक बाँजवृक्ष के नीचे बैठे देखा और उससे कहा, ''मेरे घर चलकर भोजन कर।'' परमेश्वर के जन ने उस बूढ़े नबी से कहा, ''मैं तेरे संग नहीं जा सकता और न ही इस स्थान में खा-पी सकता हूँ, क्योंकि यहोवा के द्वारा मुझे यही आज्ञा मिली है।'' नबी ने उससे कहा, ''मैं भी तेरे जैसा नबी हूँ और यहोवा से वचन पाकर एक दूत ने मुझ से कहा कि उस पुरुष को अपने संग लौटा ला कि वह रोटी खाए।'' यह एक झूठ था जो उस नबी ने कहा था। परन्तु परमेश्वर के जन ने उस पर विश्वास किया और बूढ़े नबी के घर जाकर रोटी खाई और पानी पीया। जब वे मेज़ पर बैठे ही थे कि यहोवा का वचन उस बूढ़े नबी के पास पहुँचा। तब उसने पुकार कर कहा, ''यहोवा यों कहता है कि तूने यहोवा का वचन नहीं माना इस कारण तुझे अपने पुरखाओं के कब्रिस्तान में मिट्टी नहीं दी जाएगी।''

परमेश्वर का जन : उसकी मृत्यु

परमेश्वर का जन जब वापस लौट रहा था, तब रास्ते में उसे एक शेर मिला जिसने उसे मार डाला। शेर ने उसे नहीं खाया और न ही उस गदहे को कुछ किया जिस पर परमेश्वर का जन सवारी कर रहा था। जो लोग उधर से आ रहे थे उन्होंने यह देखकर उस नगर में समाचार दिया। तब उस बूढ़े नबी ने जाकर देखा कि उस जन का शव मार्ग पर पड़ा

है, और उसका गदहा और वह शेर दोनों उस पर शव के पास खड़े हैं। तब उस बूढ़े नबी ने परमेश्वर के जन के शव को उठाकर गदहे पर लाद दिया और अपने नगर में लाकर उसे मिट्टी दी। फिर उसने अपने बेटों से कहा, ''जब मैं मर जाऊँगा तब मुझे इस परमेश्वर के जन के इसी कब्र में दफना देना।''

यह घटना हमें सिखाती है कि परमेश्वर के वचन का पूर्ण रूप से पालन करना आवश्यक है। 1 शमूएल 15:22 कहता है, ''आज्ञा मानना बलि चढ़ाने से उत्तम है।''

प्रश्न :

1. परमेश्वर के जन के जीवन में हम कौन से विशेष गुण देखते हैं?
2. बूढ़े नबी ने परमेश्वर के जन को कैसे धोखा दिया?
3. परमेश्वर के जन की मृत्यु के संबंध में हम कौन सी अजीब बात देखते हैं?

पाठ-15

मीकायाह और सिदकिय्याह

(1 राजा 22; 2 इतिहास 18)

यहूदा का राजा यहोशापात इस्राएल के राजा अहाब के पास गया। तब अहाब ने कहा यहोशापात से पूछा, ''क्या तू हमारे संग गिलाद के रामोत से लड़ने जाएगा? गिलाद कर रामोत हमारा है और हमें उसे अराम के राजा के हाथ से वापस लेना है।'' यहोशापात ने उत्तर दिया, ''आज यहोवा की इच्छा मालूम कर ले।'' तब अहाब ने चार सौ नबियों को इकट्ठा करके उनसे पूछा, ''क्या मैं गिलाद के रामोत से युद्ध करूँ?'' राजा को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने कहा, ''चढ़ाई कर, क्योंकि प्रभु उनको राजा के हाथ कर देगा।'' परन्तु यहोशापात ने पूछा, ''क्या यहाँ यहोवा का कोई और नबी है जिससे हम यहोवा की इच्छा पूछ लें?'' अहाब राजा ने कहा, ''हाँ, यिम्ला का पुत्र मीकायाह है जिसके द्वारा हम यहोवा से पूछ सकते हैं। परन्तु मैं उससे घृणा करता हूँ क्योंकि वह मेरे विषय हानि ही की भविष्यद्वाणी करता है।'' यहोशापात की इच्छानुसार मीकायाह को बुलवाया गया। इस्राएल का राजा अहाब और यहूदा का राजा यहोशापात अपने-अपने राजवस्त्र पहन कर अपने सिंहासनों पर बैठे थे और सब भविष्यद्वक्ता उनके सम्मुख भविष्यद्वाणी कर रहे थे। तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने लोहे के सींग बनाकर कहा, ''यहोवा यों कहता है, 'इन से तू अरामियों को मारते-मारते नष्ट कर डालेगा।'' और सारे नबी भी ऐसा ही कह रहे थे। अतः जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था, उसने उससे कहा, ''सुन, सारे भविष्यद्वक्ता एक मुँह से राजा के विषय शुभ वचन कह रहे हैं। इसलिए तू भी वैसे ही कहना।'' मीकायाह ने उत्तर दिया, ''यहोवा के जीवन की शपथ, जो कुछ यहोवा मुझ से कहे, वही मैं कहूँगा।''

जब वह राजा के पास आया तब राजा ने उससे कहा कि मैं यहोवा की शपथ धराकर तुझे चिताता हूँ कि तू यहोवा का स्मरण करके मुझ से

सच कह। मीकायाह ने कहा, ''मुझे समस्त इस्राएल बिना चरवाहे की भेड़-बकरियों के समान पहाड़ों पर तित्तर-बित्तर देख पड़ा, और यहोवा का यह वचन आया, ''वे तो अनाथ हैं, इसलिए वे अपने-अपने घर कुशल क्षेम से लौट जाएँ।''

यह सुनकर अहाब ने यहोशापात से कहा, ''क्या मैंने तुझ से न कहा था कि वह मेरी हानि की ही भविष्यद्वाणी करेगा?'' मीकायाह ने कहा, ''तू यहोवा का यह वचन सुन! मुझे सिंहासन पर विराजमान यहोवा और उसके पास खड़ी हुई स्वर्ग की समस्त सेना दिखाई दी है। तब यहोवा ने पूछा, 'अहाब को कौन ऐसा बहकाएगा कि वह गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करके मर जाए?' तब एक आत्मा पास आकर यहोवा के सम्मुख खड़ी हुई, और कहने लगी 'मैं उसको बहकाऊँगी'। यहोवा ने पूछा, 'किस उपाय से?' उसने कहा, 'मैं जाकर उसके सब भविष्यद्वक्ताओं में पैठकर उनसे झूठ बुलवाऊँगी।' यहोवा ने कहा, 'तेरा उसको बहकाना सफल होगा, जाकर ऐसा ही कर।' तो अब सुन, यहोवा ने तेरे इन भविष्यद्वक्ताओं के मुँह में एक झूठ बोलनेवाली आत्मा पैठाई है, और यहोवा ने तेरे विषय हानि की बात कही है।''

यह सुनकर कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने मीकायाह के पास जाकर उसके गाल पर थप्पड़ मारकर पूछा, ''यहोवा का आत्मा मुझे छोड़कर तुझ से बातें करने को किधर गया?'' मीकायाह ने कहा, ''जिस दिन तू छिपने के लिए कोठरी में भागेगा, तब तुझे ज्ञात होगा।'' तब अहाब ने कहा, ''मीकायाह को नगर के हाकिम आमोन और योआश राजकुमार के पास लेकर जाओ और उनसे कहा, 'राजा कहता है कि इसको बंदीगृह में डालो और जब तक मैं कुशल से न आऊँ, तब तक इसे दु:ख की रोटी और पानी दिया करो'।'' मीकायाह ने कहा, ''यदि तू कभी कुशल से लौटे, तो जान लेना कि यहोवा ने मेरे द्वारा बात नहीं की।'' फिर उसने कहा, ''हे सब लोगों, तुम सब के सब यह सुन लो।''

तब अहाब और यहोशापात ने मिलकर गिलाद के रामोन पर चढ़ाई की। अहाब भेष बदलकर युद्ध में गया परन्तु परमेश्वर की दृष्टि से कौन

बच सकता है? किसी व्यक्ति ने अटकल से एक तीर चलाया और वह अहाब के झिलम और निचले वस्त्र के बीच छेदकर लगा। तब उसने अपने सारथी से कहा, ''मैं घायल हो गया हूँ, मुझे सेना में से बाहर निकालकर ले चल।'' साँझ होते-होते उसकी मृत्यु हो गई। परन्तु यहोशापात बच गया। सूर्य डूबते हुए सेना में यह पुकार हुई, ''हर एक अपने नगर और अपने देश को लौट जाए।''

प्रश्न :

1. मीकायाह को राजा अहाब ने क्यों बुलवाया?
2. मीकायाह के बारे में अहाब ने यहोशापात से क्या कहा?
3. सच बोलने के कारण मीकायाह को क्या दण्ड मिला?
4. सिदकिय्याह का व्यवहार कैसा था?

पाठ-16

एलिय्याह-1

(1 राजा 17:3-18:17)

परिचय :

इस्राएल के इतिहास में जितने भविष्यद्वक्ता हुए उनमें एलिय्याह महानतम था। परमेश्वर ने उसे तब अपने कार्य पर लगाया जब इस्राएल राष्ट्र के ऊपर खूनखराबे, अनैतिकता और मूर्तिपूजा के काले बादल छाए हुए थे। एलिय्याह नाम का अर्थ है 'मेरा परमेश्वर यहोवा है''। उसका व्यक्तित्व उसके नाम के अनुसार ही था।

करीत नाला :

अहाब ने शोमरोन में बाईस वर्ष तक इस्राएल पर राज्य किया। उसने उन सबसे अधिक जो उससे पहले थे, वह कर्म किए जो यहोवा की दृष्टि में बुरे थे। उसने सीदोनियों के राजा एतबाल की बेटी ईज़ेबेल से विवाह करके बाल देतवा की उपासना की और उसको दण्डवत् किया। उसने शोमरोन में बाल का एक भवन भी बनवाया और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोध दिलाने के काम किए। तब एलिय्याह ने राजा अहाब से कहा, ''इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ, इन वर्षों में मेरे बिना कहे, न तो मेंह बरसेगा और न ओस पड़ेगी।'' तब यहोवा ने एलिय्याह से कहा, ''यहाँ से चलकर पूर्व की ओर जा और करीत नामक नाले में जो यरदन के पूर्व में है, छिप जा। उसी नाले का पानी तू पीया कर, और मैं ने कौवों को आज्ञा दी है कि वे तुझे खिलाएँ।'' यहोवा के वचन के अनुसार एलिय्याह ने किया और सबेरे साँझ को कौवे उसके पास रोटी और माँस लाया करते थे। और वह नाले का पानी पीता था। कुछ दिनों के बाद उस देश में वर्षा न होने के कारण करीत नाला सूख गया। और यह उस ही की प्रार्थना के कारण हुआ। ''एलिय्याह भी तो हमारे समान दु:ख-सुख भोगी मनुष्य था, और उसने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की कि मेंह न बरसे, और साढ़े तीन वर्ष तक

भूमि पर मेंह नहीं बरसा।'' (याकूब 5:17)।

सारपत की विधवा :

जब करीत नाला सूख गया तब यहोवा का वचन एलिय्याह के पास पहुँचा ''चलकर सीदोन के सारपत नगर में जाकर वहीं रह। सुन, मैं ने वहाँ की एक विधवा को तेरे खिलाने की आज्ञा दी है।'' तब एलिय्याह सारपत को गया और उसने वहाँ एक विधवा को देखा जो लकड़ी बीन रही थी। एलिय्याह ने उस विधवा को बुलाकर उससे कहा, ''किसी पात्र में मेरे पीने के लिए थोड़ा पानी ले आ।'' जब वह लेने जा रही थी, तब उसने उससे कहा, ''अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी भी मेरे पास लेती आ।'' उस विधवा ने एलिय्याह से कहा, ''तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ, मेरे पास एक भी रोटी नहीं है, केवल घड़े में मुट्ठी भर मैदा और कुप्पी में थोड़ा सा तेल है, और मैं लकड़ी बीनकर ले जा रही हूँ कि अपने और अपने बेटे के लिए उसे पकाऊँ, और हम उसे खाएँ, फिर मर जाएँ।'' एलिय्याह ने उससे कहा, ''मत डर, जाकर रोटी बना, परन्तु पहले मेरे लिए एक छोटी सी रोटी बनाकर ले आ। उसके बाद अपने और अपने बेटे के लिए बनाना। क्योंकि यहोवा यों कहता है कि जब तक भूमि पर मेंह न बरसेगा तब तक न तो तेरे घड़े का मैदा और न कुप्पी का तेल घटेगा।'' यह सुनकर वह विधवा चली गई और एलिय्याह के वचन के अनुसार किया और यहोवा के वचन के अनुसार उसका मैदा और तेल समाप्त न हुआ। यद्यपि वह एक अन्यजाति स्त्री थी, फिर भी उसने इस्राएल के परमेश्वर पर विश्वास किया।

एलिय्याह : अहाब के सामने

तीन वर्ष के बाद यहोवा ने एलिय्याह से कहा, ''जाकर अपने आप को अहाब को दिखा और मैं भूमि पर मेंह बरसा दूँगा।'' अहाब का एक कर्मचारी था ओबद्याह जो यहोवा परमेश्वर का भय मानता था। जब ईज़ेबेल यहोवा के नबियों को नष्ट कर रही थी, तब ओबद्याह ने एक सौ नबियों को गुफाओं में छुपाया और उन्हें भोजन देकर उन्हें सुरक्षित रखा। राजा की आज्ञानुसार जब वह राजा के पशुओं के लिए चारागाह

ढूँढ़ने निकला तब रास्ते में उसे एलिय्याह मिला। एलिय्याह ने ओबद्याह से कहा, ''जाकर अहाब से कहो 'एलिय्याह यहाँ है।'' उसने कहा, ''मैं ने ऐसा क्या पाप किया है कि तू मुझे मरवा डालने के लिए अहाब के हाथ में करना चाहता है? जैसे ही मैं तेरे पास से चला जाऊँगा, वैसे ही यहोवा का आत्मा तुझे न जाने कहाँ उठा ले जाएगा, और जब तू उसे न मिलेगा तब अहाब मुझे मार डालेगा।'' एलिय्याह ने कहा, ''सेनाओं के यहोवा के जीवन की शपथ आज मैं अपने आप को उसे दिखाऊँगा।'' तब ओबद्याह अहाब से मिलने गया और उसको बता दिया। तब अहाब एलिय्याह से मिलने चला। एलिय्याह को देखते ही अहाब ने कहा, ''हे इस्राएल के सताने वाले क्या तू ही है?'' उसने कहा, ''मैं ने इस्राएल को कष्ट नहीं दिया, परन्तु तू ही ने और तेरे पिता के घराने ने दिया है। तुम्हारे घराने ने यहोवा की आज्ञाओं को टालकर बाल देवताओं की उपासना करने लगे। अब दूत भेजकर सारे इस्राएल को और बाल के साढ़े चार सौ नबियों और अशेरा के चार सौ नबियों को जो ईज़ेबेल की मेज़ पर खाते हैं, मेरे पास कर्मेल पर्वत पर इकट्ठा कर ले।''

एलिय्याह तैयारी कर रहा था कि वह अहाब की दुष्टता और सामर्थहीन मूर्तियों के सत्य को इस्राएल के सामने प्रत्यक्ष दिखा दे।

प्रश्न :

1. एलिय्याह कौन था? वह कहाँ का रहने वाला था?
2. एलिय्याह ने अहाब से क्या कहा?
3. एलिय्याह के द्वारा किए गए आश्चर्यकर्म का वर्णन करो।
4. कौवों के द्वारा एलिय्याह को भोजन खिलाने की घटना से हम क्या सीखते हैं?

पाठ-17

एलिय्याह-2

(1 राजा 18:18 - 2 राजा 2:8)

इस पाठ में हम एलिय्याह के हिम्मत और भय के विषय में सीखेंगे।

आग से उत्तर देने वाला परमेश्वर :

अहाब राजा ने समस्त इस्राएलियों और नबियों को कर्मेल पर्वत पर बुलवाया। तब एलिय्याह सब लोगों के पास आकर कहने लगा, ''तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि यहोवा, परमेश्वर हो तो उसके पीछे हो लो, और यदि बाल हो तो उसके पीछे हो लो।'' लोगों ने उसके उत्तर में कुछ न कहा। तब एलिय्याह ने लोगों से कहा, ''यहोवा के नबियों में से केवल मैं ही रह गया हूँ और बाल के नबी साढ़े चार सौ हैं। इसलिए दो बछड़े लाकर हमें दिए जाएँ, और वे अपने लिए उसमें से एक को चुनकर उसे टुकड़े करके लकड़ी पर रखें परन्तु आग न लगाएँ। मैं दूसरे बछड़े को तैयार करके लकड़ी पर रखूँगा और आग नहीं लगाऊँगा। तब तुम अपने देवता से प्रार्थना करना और मैं यहोवा से प्रार्थना करूँगा, और जो आग गिराकर उत्तर दे वही परमेश्वर ठहरे।'' एलिय्याह की यह बात सबको सही लगी। अतः उन्होंने वैसा ही किया। और सुबह से लेकर दोपहर तक वह यह कहकर प्रार्थना करते रहे, ''हे बाल, हमारी सुन!'' परन्तु न कोई शब्द और न कोई उत्तर देनेवाला हुआ। उन्होंने बड़े शब्द से पुकार-पुकार के छुरियों और बर्छियों से अपने आप को यहाँ तक घायल किया कि लहूलुहान हो गए। परन्तु किसी ने उन्हें कोई उत्तर न दिया। तब एलिय्याह ने सब लोगों से कहा, ''मेरे निकट आओ।'' और सब लोग उसके निकट आए। तब उसने यहोवा की वेदी जो गिराई गई थी, उसकी मरम्मत की और उसके चारों ओर बड़ा सा गड्हा खोदा। तब उसने वेदी पर लकड़ी को सजाया और बछड़े के टुकड़े काटकर उन पर रख दिया और कहा, ''चार घड़े पानी भर के होमबलि-पशु और लकड़ी पर उण्डेल दो। ऐसा तीन बार करो।'' तब

लोगों ने वैसा ही किया और गड्हे को भी जल से भर दिया। तब एलिय्याह समीप जाकर कहने लगा, ''हे अब्राहम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! आज यह प्रगट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है और मै तेरा दास हूँ। मैंने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं। हे यहोवा मेरी सुन कि लोग जान लें कि हे यहोवा तू ही परमेश्वर है।'' तब यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई और होमबलि की लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया और गड्हे का जल भी सुखा दिया। यह देखकर सब लोग मुँह के बल गिरे और बोल उठे ''यहोवा ही परमेश्वर है।'' तब एलिय्याह ने बाल के सभी नबियों को पकड़कर मार डाला।

वर्षा के लिए एलिय्याह की प्रार्थना :

फिर एलिय्याह ने अहाब से कहा, ''उठकर खा पी, क्योंकि भारी वर्षा की सनसनाहट सुन पड़ती है।'' तब अहाब खाने पीने चला गया और एलिय्याह कर्मेल की चोटी पर चढ़ गया और मुँह के बल गिरकर वर्षा के लिए प्रार्थना की। तब उसने अपने सेवक से कहा, ''चढ़कर समुद्र की ओर देख'' तब उसने देखा परन्तु उसे कुछ ना दिखा। एलिय्याह ने उससे कहा, ''फिर सात बार जा''। सातवीं बार उसने कहा, ''समुद्र में से मनुष्य के हाथ-सा एक छोटा सा बादल उठ रहा है।'' एलिय्याह ने उससे कहा ''अहाब से जाकर कहो कि रथ जुतवा कर नीचे जा, कहीं ऐसा न हो कि वर्षा के कारण तुझे रुकना पड़ जाए।'' तब अहाब सवार होकर यिज्रेल को चला। आकाश वायु से उड़ाई हुई घटाओं और आँधी से काला हो गया और भारी वर्षा होने लगी। तब यहोवा की शक्ति एलिय्याह पर ऐसी हुई, कि वह कमर बाँधकर अहाब के आगे-आगे यिज्रेल तक दौड़ता चला गया।

एलिय्याह का मृत्यु चाहना :

अहाब ने ईज़ेबेल को एलिय्याह के सब काम विस्तार से बताए। तब ईज़ेबेल ने एलिय्याह के पास एक दूत के द्वारा कहला भेजा, ''यदि मैं कल इसी समय तक तेरा प्राण उनके जैसा न कर डालूँ तो देवता मेरे

साथ वैसा ही वरन् उससे भी अधिक करें।'' यह सुनकर एलिय्याह अपना प्राण लेकर भागा और यहूदा के बेर्शेबा को पहुँचकर अपने सेवक को वहीं छोड़ दिया। फिर वह स्वयं जंगल में एक दिन के मार्ग पर जाकर एक झाऊ के पेड़ के नीचे बैठ गया और प्रार्थना करने लगा, ''हे यहोवा, बस है, अब मेरा प्राण ले ले, क्योंकि मैं अपने पुरखाओं से अच्छा नहीं हूँ।'' तब वह उस झाऊ के पेड़ के नीचे लेटकर सो गया। तब एक दूत ने उसे छूकर कहा, ''उठकर खा।'' तब उसने उठकर देखा कि उसके सिरहाने रोटी और एक सुराही पानी रखा है। तब उसने खाया पीया और फिर लेट गया।

यहोवा का उत्तर :

दूसरी बार यहोवा का दूत आया और उसे छूकर कहा, ''उठकर खा, क्योंकि तुझे लम्बी यात्रा करनी है।'' तब उसने उठकर खाया पीया और उसी भोजन से बल पाकर चालीस दिन रात चलते-चलते परमेश्वर के पर्वत होरेब को पहुँचा। यह वही पर्वत है जहाँ परमेश्वर ने मूसा को व्यवस्था दी थी। वहाँ वह एक गुफा में जाकर टिका और यहोवा का यह वचन उसके पास पहुँचा, ''हे एलिय्याह, तेरा यहाँ क्या काम?'' उसने उत्तर दिया, ''सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के निमित्त मुझे बड़ी जलन हुई है, क्योंकि इस्राएलियों ने तेरी वाचा टाल दी, तेरी वेदियों को गिरा दिया और तेरे नबियों को तलवार से घात किया है और मैं ही अकेला रह गया हूँ और वे मेरे प्राणों के भी खोजी हैं।'' उसने कहा, ''निकलकर यहोवा के सम्मुख पर्वत पर खड़ा हो।'' और यहोवा पास होकर चला, और यहोवा के सामने एक बड़ी प्रचण्ड आँधी से पहाड़ फटने और चट्टानें टूटने लगीं, तौभी यहोवा उस आँधी में न था, फिर भूकम्प हुआ, तौभी यहोवा उस भूकम्प में न था। भूकम्प के बाद आग दिखाई दी, तौभी यहोवा उस आग में न था। आग के बाद एक दबा हुआ धीमा शब्द सुनाई दिया। यह सुनते ही एलिय्याह ने अपना मुँह चद्दर से ढाँपा और बाहर जाकर गुफा के द्वार पर खड़ा हुआ। फिर एक शब्द उसे सुनाई दिया, ''हे एलिय्याह, तेरा यहाँ क्या काम?'' उसने कहा, ''मुझे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के निमित्त बड़ी जलन हुई क्योंकि इस्राएलियों

ने तेरी वाचा टाल दी और तेरी वेदियों को गिरा दिया है और तेरे नबियों को तलवार से घात किया है, और मैं अकेला ही रह गया हूँ और वे मेरे प्राणों के भी खोजी हैं।'' यहोवा ने उससे कहा, ''लौटकर दमिश्क के जंगल को जा, और वहाँ पहुँचकर अराम का राजा होने के लिए हजाएल का और इस्राएल का राजा होने के लिए येहू का और अपने स्थान पर नबी होने के लिए एलीशा का अभिषेक करना। और हजाएल की तलवार से जो कोई बच जाए उसको येहू मार डालेगा और जो कोई येहू की तलवार से बचेगा उसको एलीशा मार डालेगा। तौभी मैं सात हज़ार इस्राएलियों को बचा रखूँगा, जिन्होंने बाल के आगे घुटने नहीं टेके।''

तब एलिय्याह वहाँ से चल दिया और एलीशा उसे मिला जो हल जोत रहा था। उसके पास जाकर एलिय्याह ने अपनी चद्दर उस पर डाल दी। तब वह सब कुछ छोड़कर एलिय्याह के पीछे हो लिया और उसकी सेवा टहल करने लगा।

जब यहोवा एलिय्याह को बवंडर के द्वारा स्वर्ग में उठा लेने को था, तब एलिय्याह और एलीशा दोनों संग-संग गिलगाल से चले। एलिय्याह ने एलीशा से कहा, ''यहोवा मुझे बेतेल तक भेजता है इसलिए तू यहीं ठहरा रह।'' एलीशा ने कहा, ''यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ, मैं तुझे नहीं छोड़ने का।'' इसलिए वे बेतेल को चले गए। वहाँ से वे यरीहो को गए। यरीहो से वे यरदन नदी तक गए और एलीशा एलिय्याह के संग संग रहा। तब एलिय्याह ने अपनी चद्दर पकड़कर ऐंठ ली और जल पर मारा। तब वह दो भाग हो गया और वे दोनों स्थल ही स्थल पर पार उतर गए। पार पहुँचने पर एलिय्याह ने एलीशा से कहा, ''इससे पहले कि मैं तेरे पास से उठा लिया जाऊँ, जो कुछ तू चाहे कि मैं तेरे लिए करूँ, वह माँग।'' एलीशा ने कहा, ''तुझ में जो आत्मा है, उसका दूना भाग मुझे मिल जाए।'' एलिय्याह ने उससे कहा, ''तू ने कठिन बात माँगी है, तौभी यदि तू मुझे उठा लिए जाने के बाद देखने पाए तो तेरी इच्छा पूरी होगी, नहीं तो न होगा।'' अचानक एक अग्निमय रथ और अग्निमय घोड़ों ने उनको अलग किया, और एलिय्याह बवंडर में होकर

स्वर्ग पर चढ़ गया। इस प्रकार एलिय्याह की सेवा पूरी हुई और एलीशा की सेवा आरंभ हुई। क्योंकि उसने अपने स्वामी को जाते देखा था इस कारण उसने जो वरदान माँगा था, वह उसे मिल गया।

प्रश्न :

1. कर्मेल पर्वत की घटनाओं का वर्णन करो।
2. परमेश्वर ने ईज़ेबेल से एलिय्याह को कैसे बचाया?
3. यरदन नदी कैसे विभाजित हुई?
4. एलीशा ने एलिय्याह से क्या वरदान माँगा था?

पाठ–18

एलीशा–1

(2 राजा 2:1 - 4:7)

परिचय :

एलीशा नाम का अर्थ है–''मेरा यहोवा उद्धार है।''

जब एलिय्याह ने एलीशा को बुलाया तब वह हल जोत रहा था। परन्तु वह पूरे दिल से एलिय्याह के पीछे हो लिया और उसकी सेवा टहल करने लगा। एलिय्याह जहाँ कहीं भी गया एलीशा विश्वासयोग्यता से उसके पीछे चला। अपने स्वामी के स्वर्ग पर उठा लिए जाने को देखने के कारण उसकी वह माँग पूरी हुई जो उसने एलिय्याह से माँगा था कि ''तुझ में जो आत्मा है उसका दूना भाग मुझे मिल जाए।'' स्वर्ग पर उठा लिए जाते समय एलिय्याह की चद्दर गिर गई थी, जिसे एलीशा ने उठा लिया और वह यरदन नदी के तट पर गया। तब उसने उस चद्दर से जल पर मारा, तब वह इधर–उधर दो भाग हो गया और एलीशा पार हो गया।

पानी का शुद्धिकरण :

उस नगर के निवासियों ने एलीशा से कहा, ''यह नगर मनभावने स्थान पर बसा हुआ है, परन्तु यहाँ का पानी बुरा है।'' एलीशा ने कहा, ''एक नए प्याले में नमक डालकर मेरे पास लाओ।'' जब वे नमक लाए तब उसने उसे जल के सोते में डाल दिया और कहा, ''यहोवा कहता है, 'मैं यह पानी ठीक कर देता हूँ,'' एलीशा के वचन के अनुसार पानी ठीक हो गया और आज तक ऐसा ही है।

मज़ाक उड़ाने वाले लड़के :

पानी ठीक करने के बाद एलीशा बेतेल को चला। वह मार्ग की चढ़ाई में चल रहा था। तब नगर से छोटे लड़के निकलकर उसका ठठ्ठा करके कहने लगे ''हे गंजे, चढ़ जा, हे गंजे चढ़ जा।'' तब

एलीशा ने पीछे की ओर फिर कर उन पर दृष्टि की और यहोवा के नाम से उनको शाप दिया। तब जंगल में से दो रीछनियों ने निकलकर उनमें से बयालीस लड़के फाड़ डाले। वहाँ से वह कर्मेल को गया और फिर वहाँ से शोमरोन को लौट गया।

सेना के लिए पानी :

राजा यहोराम ने जो इस्राएल का राजा था उसने यहूदा के राजा यहोशापात के पास कहला भेजा कि मेरे साथ मोआब से लड़ने को चल क्योंकि उसने मेरे साथ बलवा किया है। जब वे मोआब के विरुद्ध चले तो एदोम का राजा भी उनके साथ गया। और जब रात दिन तक घूमकर चल चुके तब सेना और उनके पशुओं को कुछ पानी न मिला। तब इस्राएल के राजा ने कहा, ''हाय! यहोवा ने इन तीन राजाओं को इसलिए इकट्ठा किया, कि उनको मोआब के हाथ में कर दे।'' यहोशापात ने कहा, ''क्या यहाँ यहोवा का कोई नबी नहीं है जिसके द्वारा हम यहोवा से पूछें?'' तब इस्राएल के राजा के किसी कर्मचारी ने एलीशा के बारे में बताया। तब तीनों राजा मिलकर उसके पास गए। तब एलीशा ने उनसे कहा, ''इस नाले में तुम लोग इतना खोदो कि इसमें गड्हे ही गड्हे हो जाएँ। क्योंकि यहोवा कहता है कि तुम्हारे सामने न तो वायु चलेगी और न वर्षा होगी, तौभी यह नाला पानी से भर जाएगा, और अपने पशुओं समेत तुम पीने पाओगे। और यहोवा मोआब को भी तुम्हारे हाथ में कर देगा।'' सवेरे एदोम की तरफ से जल बह आया और देश जल से भर गया। यहोवा ने उन्हें युद्ध में विजय भी दिलाई।

हाँड़ी का तेल :

भविष्यद्वक्ताओं के चेलों की पत्नियों में से एक स्त्री ने एलीशा की दोहाई देकर कहा, ''तेरा दास मेरा पति मर गया है और तू जानता है कि वह यहोवा का भय मानने वाला था। पर जिसका वह कर्जदार था, वह आया है कि मेरे दोनों पुत्रों को अपने दास बनाने के लिए ले जाए।'' एलीशा ने उससे पूछा, ''मैं तेरे लिए क्या करूँ? मुझे बता कि तेरे घर में क्या है'' उसने उत्तर दिया कि तेरी दासी के घर में एक हाँड़ी तेल

को छोड़कर और कुछ भी नहीं है। एलीशा ने उससे कहा, ''तू बाहर जाकर अपनी पड़ोसिनों से खाली बरतन माँग कर ले आ। फिर तू अपने बेटों के साथ अपने घर में जाना और द्वार बंद करके उन सब बरतनों में तेल उण्डेल देना।'' तब वह गई और एलीशा की बात के अनुसार किया। तब वह एलीशा के पास आई और उसे बता दिया। एलीशा ने उससे कहा, ''जा, तेल बेचकर कर्जा चुका दे। और जो रह जाए उससे तू अपना और अपने पुत्रों का निर्वाह करना।''

प्रश्न :

1. एलीशा ने लड़कों को श्राप क्यों दिया?
2. एलीशा ने यरीहो में पानी को कैसे ठीक किया?
3. सेना को पानी कैसे मिला?
4. विधवा स्त्री के घर क्या आश्चर्यकर्म हुआ?

पाठ–19

एलीशा–2

(2 राजा 4:8–6:23)

इस पाठ में हम एलीशा के द्वारा किए गए छः आश्चर्यकर्मों के विषय में सीखेंगे।

शूनेमवासी स्त्री का पुत्र : एक दिन एलीशा शूनेम को गया जहाँ एक कुलीन स्त्री रहती थी। उसने एलीशा को रोटी खाने के लिए विनती करके विवश किया। अतः जब–जब एलीशा वहाँ से गुजरता था, तब–तब वहाँ रोटी खाने को उतरता था। उस स्त्री ने अपने पति से कहकर एलीशा के लिए एक कमरा बनवाया। बदले में एलीशा उसके लिए कुछ करना चाहता था। एलीशा के सेवक गेहजी ने कहा, ''निश्चय उसके कोई लड़का नहीं है, और उसका पति बूढ़ा है।'' एलीशा ने उस स्त्री को बुलवाया और उससे कहा, ''बसंत के मौसम में, दिन पूरे होने पर तेरे एक पुत्र होगा।'' एलीशा के वचन के अनुसार उसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। जब वह लड़का बड़ा हुआ तब एक दिन उसे भयंकर सिर दर्द हुआ और वह मर गया। तब उस स्त्री ने उसे एलीशा की खाट पर लिटा दिया और गदही पर काठी बाँधकर सेवक के साथ कर्मेल पर्वत पर परमेश्वर के भक्त के पास पहुँची। उसके पाँव पकड़कर उससे विनती की कि उसके पुत्र को जीवित कर दे। वह ज़िद करके एलीशा को अपने साथ ले गई। एलीशा ने अकेले कमरे में जाकर द्वार बंद कर दिया और यहोवा से प्रार्थना की। तब वह चढ़कर लड़के पर पसर गया। तब लड़के की देह गर्म होने लगी। उसने सात बार छींका और अपनी आँखें खोलीं। तब एलीशा ने गेहजी को बुलाकर कहा, ''शूनेमिन को बुला ले।'' उसके आने पर एलीशा ने उससे कहा, ''अपने बेटे को उठा ले।'' वह भीतर गई और उसके पाँवों पर गिरकर भूमि तक झुककर दंडवत् किया और बेटे को उठाकर निकल गई।

जहरीला भोजन :

(2 राजा 4:38-41)

तब एलीशा गिलगाल को लौट गया। उस समय देश में अकाल था। भविष्यद्वक्ताओं के चेले उसके सामने बैठे हुए थे। उसने अपने सेवक से कहा, ''हण्डा चढ़ाकर इनके लिए कुछ पका।'' तब कोई मैदान में साग तोड़ने गया और जंगली लता और फल तोड़ लाया और फाँक-फाँक करके पकने के लिए हण्डे में डाल दिया। खाते समय वे चिल्लाकर बोल उठे, ''हे परमेश्वर के भक्त, हण्डे में जहर है।'' तब एलीशा ने कहा, ''कुछ मैदा ले आओ।'' तब उसने उसे हण्डे में डाल दिया और फिर उसमें कुछ हानि की वस्तु न रही।

सौ लोगों को भोजन :

(4:42-44)

गिलगाल के पास के एक शहर बालशालीशा से, पहले उपजे हुए जौ की बीस रोटियाँ और अपनी बोरी में हरी बालें लेकर एक मनुष्य एलीशा के पास आया। एलीशा ने कहा, ''उन लोगों को खाने के लिए दे।'' उसके सेवक ने कहा, ''क्या मैं सौ मनुष्यों के सामने इतना सा भोजन रख दूँ?'' एलीशा ने कहा, ''लोगों को दे दे कि खाएँ, क्योंकि यहोवा कहता है कि उनके खाने के बाद कुछ बच भी जाएगा।'' तब उसने उनके आगे वह भोजन रख दिया और यहोवा के वचन के अनुसार उनके खाने के बाद कुछ बच भी गया।

नामान कोढ़ी :

(2 राजा 5:1-19)

अराम के राजा का नामान नामक सेनापति अपने स्वामी की दृष्टि में बड़ा और प्रतिष्ठित पुरुष था। वह शूरवीर था परन्तु कोढ़ी था। अरामी लोग इस्राएल से एक छोटी लड़की को युद्ध में बंदी बनाकर लाए थे जो नामान की पत्नी की सेवा करती थी। उसने अपनी स्वामिनी से कहा, ''यदि मेरा स्वामी शोमरोन के भविष्यद्वक्ता के पास होता तो वह उसे कोढ़ से चंगा कर देता।'' अराम के राजा ने जब यह सुना तो उसने

इस्राएल के राजा को देने के लिए नामान को एक पत्र दिया। तब नामान दस किक्कार चाँदी और छः हज़ार टुकड़े सोना और दस जोड़े कपड़े साथ लेकर इस्राएल के राजा के पास गया। अराम के राजा का पत्र पढ़ने पर इस्राएल के राजा ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, ''क्या मैं परमेश्वर हूँ कि उसका कोढ़ दूर करूँ? वह मुझसे झगड़े का कारण ढूँढ़ता होगा।'' यह सुनकर कि राजा ने अपने वस्त्र फाड़े हैं, एलीशा ने राजा के पास कहला भेजा, कि उसे मेरे पास भेज दे। नामान घोड़ों और रथों समेत एलीशा के पास आया। एलीशा ने एक दूत से उसके पास कहला भेजा, ''तू जाकर यरदन नदी में सात बार डुबकी मार, और तेरा शरीर ज्यों का त्यों हो जाएगा।'' परन्तु नामान ने क्रोधित होकर कहा, ''मैं ने तो सोचा था कि वह मेरे पास आएगा और परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करके कोढ़ के स्थान पर अपना हाथ फेरकर कोढ़ दूर करेगा। क्या दमिश्क की अबाना और पर्पर नदियाँ इस्राएल के सब जलाशयों से उत्तम नहीं हैं? क्या मैं उनमें स्नान करके शुद्ध नहीं हो सकता हूँ?'' इसलिए वह क्रोध से लौट जाने लगा। तब उसके सेवकों ने उसे समझाया और एलीशा के कहने के अनुसार करने के लिए मनाया। तब उसने जाकर यरदन नदी में सात बार डुबकी लगाई और उसका शरीर छोटे लड़के जैसा हो गया, और वह शुद्ध हो गया।

कुल्हाड़ी का पानी पर तैरना :

भविष्यद्वक्ताओं के चेलों में से किसी ने एलीशा से कहा, ''यह स्थान जहाँ हम रहते हैं, बहुत छोटा है। इसलिए हम लकड़ी काटकर लाएँ और रहने के लिए एक स्थान बनाएँ।'' एलीशा ने उनसे कहा ''अच्छा, जाओ।'' एलीशा भी उनकी विनती के अनुसार उनके साथ चल दिया। यरदन के किनारे पहुँचकर जब वे लकड़ी काटने लगे तो किसी एक व्यक्ति की कुल्हाड़ी बेंट से निकलकर पानी में गिर गई। तब वह चिल्लाकर एलीशा से कहने लगा, ''हाय! मेरे प्रभु, वह तो माँगी हुई थी।'' एलीशा ने एक लकड़ी काटकर वहाँ डाल दी जहाँ कुल्हाड़ी गिरी थी, और वह लोहा पानी पर तैरने लगा। उसने कहा, ''उसे उठा ले।'' तब उसने हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया।

एलीशा और अरामी सेना :

अराम का राजा इस्राएल से युद्ध कर रहा था, और सम्मति करके अपने कर्मचारियों से कहा, ''अमुक स्थान पर मेरी छावनी होगी।'' तब परमेश्वर के भक्त ने इस्राएल के राजा के पास कहला भेजा, ''चौकसी कर और अमुक स्थान से होकर न जाना, क्योंकि वहाँ अरामी चढ़ाई करने वाले हैं।'' तब इस्राएल के राजा ने उस स्थान को अपने दूत भेजकर अपनी रक्षा की। इस प्रकार बहुत बार हुआ। इस कारण अराम के राजा का मन बहुत घबरा गया। अतः उसने अपने कर्मचारियों को बुलाकर पूछा, ''हममें से कौन इस्राएल के राजा की ओर का है?'' उसके एक कर्मचारी ने कहा, ''हे मेरे प्रभु, ऐसा नहीं है। एलीशा जो इस्राएल में भविष्यद्वक्ता है, वह इस्राएल के राजा को वे बातें भी बताता है, जो तू अपने शयन की कोठरी में बोलता है।'' राजा ने घोड़ों और रथों समेत एक भारी दल भेजा कि एलीशा को पकड़कर लाएँ। उन्होंने रात को आकर नगर को घेर लिया।

भोर को परमेश्वर के भक्त के सेवक ने देखा कि एक दल ने नगर को घेर लिया है, तब वह बहुत घबरा गया। एलीशा ने उससे कहा, ''मत डर, क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वह उनसे अधिक हैं जो उनकी ओर हैं।'' तब यहोवा ने सेवक की आँखें खोल दीं और उसने देखा कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है। जब अरामी उनके पास आए तब परमेश्वर ने उन्हें अंधा कर दिया। तब एलीशा ने उन्हें शोमरोन पहुँचा दिया। इस्राएल का राजा उन्हें मार डालना चाहता था, परन्तु एलीशा ने राजा से कहा, ''मत मार। तू उनको भोजन दे कि खा-पीकर अपने स्वामी के पास लौट जाएँ।'' तब राजा ने उनके लिए बड़ा भोज किया और वे खा-पीकर वापस अपने देश को लौट गए और फिर कभी भी इस्राएल पर चढ़ाई नहीं की।

प्रश्न :

1. जहरीला भोजन कैसे ठीक किया गया?
2. एलीशा के द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों की सूची बनाएँ।
3. एलीशा ने कैसे भलाई करके बुराई पर विजय प्राप्त की?

पाठ-20

गुलामी में जाना, वापसी और मंदिर का पुनर्निर्माण

''तौभी यहोवा ने तेरे पूर्वजों से स्नेह और प्रेम रखा, और उनके बाद तुम लोगों को जो उनकी संतान हो सब देशों के लोगों में से चुन लिया, जैसा कि आज के दिन प्रकट है।'' (व्यवस्थाविवरण 10:15)

उत्पत्ति से लेकर इतिहास तक की पुस्तकें हमें बताती हैं कि किस प्रकार परमेश्वर ने अपने लिए एक जाति विशेष को चुन लिया। परमेश्वर ने उन्हें **'अपने लोग'** कहा परन्तु उन्होंने परमेश्वर का निरादर किया और परमेश्वर को त्याग दिया। परमेश्वर ने उन्हें देश निकाला देकर गुलामी में भेजकर उनका अनुशासन किया। फिर भी परमेश्वर ने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि वे उसके अपने लोग हैं और हमेशा रहेंगे।

इस्राएल के इतिहास का सुनहरा काल वह था जब राजा दाऊद और सुलैमान ने उन पर राज्य किया था। सुलैमान की कीर्ति, उसकी भव्यता, उसकी बुद्धि और धन-संपत्ति के बारे में बाइबल बताती है। उसके भव्य शासन काल के पश्चात् हम इस्राएल (उत्तर का राज्य) का बँटवारा देखते हैं। राजाओं की पुस्तक में हम उनके राजाओं की सफलताओं और असफलताओं के विषय में पढ़ते हैं। उनके राज्य में अनैतिकता और मूर्तिपूजा बहुतायत से थी, क्योंकि परमेश्वर के लोगों ने अपने आस-पास के देशों के लोगों की जीवन शैली को अपना लिया था। उन्होंने अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा को त्याग दिया था। दोनों हिस्सों में कुल मिलाकर उनतालीस (39) राजाओं ने राज्य किया जिनमें से केवल आठ राजा ही ऐसे थे जो परमेश्वर का भय मानते थे। परमेश्वर ने अपने लोगों के सामने जीवन और मृत्यु, आशीष और श्राप का चुनाव रखा था। उन लोगों ने कठोर होकर बार-बार अपने कार्यों से श्राप को ही चुना। परमेश्वर

ने उन्हें गुलामी में भेज दिया। राष्ट्र जो विभाजित हो गया था अब वह विलुप्त होने वाला था।

722 ई.पू. में होशे के दिनों में वह राष्ट्र लगभग समाप्त हो गया। परमेश्वर ने अश्शूरियों को भेजा जिन्होंने इस्राएल के दस गोत्रों को बन्दी बनाया और अपने साथ ले गए। अश्शूर के राजा ने बेबीलोन, कूता, अव्वाहमात और सपवैंम नगरों से लोगों को लाकर इस्राएलियों के स्थान पर शोमरोन के नगरों में बसा दिया। इस प्रकार इस्राएल की अनाज्ञाकारिता के लिए परमेश्वर ने उन्हें दण्ड दिया। इसके 136 वर्षों के पश्चात् यहूदा की बारी आई। इन वर्षों में चार राजाओं ने यहूदा पर राज्य किया। यहोआहाज, यहोयाकीम, यहोयाकीन और सिदकिय्याह में से कोई भी परमेश्वर के मार्गों पर नहीं चला। 586 ई.पू. में सिदकिय्याह के शासन में नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर चढ़ाई की। उसने सिदकिय्याह को बंदी बना लिया और उसके पुत्रों को मार डाला। यरूशलेम जला दिया गया और मंदिर को तोड़ दिया गया। सारी धन-संपत्ति वह बेबीलोन को ले गया। इस प्रकार परमेश्वर ने यहूदा को भी दण्ड दिया।

इस प्रकार अन्यजातियों के काल का आरंभ हुआ, परन्तु परमेश्वर ने अपने लोगों को भुला नहीं दिया। उनकी गुलामी में भी परमेश्वर ने उनकी सहायता और सुरक्षा की। परमेश्वर ने दानिय्येल, शद्रक, मेशक, अबेदनगो और यहेजकेल जैसे भक्त लोगों को खड़ा किया कि वे परमेश्वर के लिए दृढ़ बने रहें। यिर्मयाह का विलापगीत इस्रालियों की दुर्दशा का वर्णन करता है। अंततः परमेश्वर अपने लोगों का छुटकारा करते हैं। यहूदियों का बेबीलोन से छुटकारा और यरूशलेम को वापस लौटना ''दूसरा निर्गमन'' कहलाता है। परन्तु उस समय दो या तीन करोड़ इस्राएलियों में से मात्र 49,897 लोगों ने ही वापस जाना चाहा। लगभग एक हज़ार किलोमीटर की पैदल यात्रा तय करके वे लौटे और कष्ट उठाकर नाश किए गए मंदिर और शहर का पुनर्निर्माण किया। जकर्याह ने भविष्यद्वाणी की कि मंदिर का पुनर्निर्माण होगा और पृथ्वी के सब राज्य वहाँ आएँगे। यहूदी लोगों का नया, और प्रभावशाली राज्य होगा और दाऊद का पुत्र (मसीह) सिंहासन पर विराजमान होगा जो न्याय, शांति

और सम्पन्नता के साथ विश्व में शासन करेगा। वर्षों बीत गए। जिस मंदिर का भव्य समारोह के साथ शुभारंभ हुआ था, अनेक कारणों से उसकी तरफ लापरवाही की गई। याजक भी अपने कार्य में विश्वस्त नहीं रहे। मसीहा के राज्य के इंतज़ार में लोग निराश हो गए और संदेह करने लगे और वापस अपने पुराने रास्तों पर चलने लगे।

मलाकी के साथ ही पुराने नियम का अंत हो गया। उसके 400 वर्षों बाद तक परमेश्वर का कोई संदेश मनुष्यजाति को नहीं मिला। फिर नए नियम के सुसमाचारों में हम परमेश्वर की योजना को देखते हैं।

प्रश्न :

1. इस्राएल राष्ट्र गुलामी में क्यों गया?
2. इस्राएल के इतिहास का सुनहरा समय किसके शासन काल में था?
3. इस्राएल राष्ट्र का समापन कब हुआ?
4. ''दूसरा निर्गमन'' में कितने इस्राएली यरूशलेम को लौटे?

पाठ-21

तरसुस का शाऊल

(प्रेरितों 9:1-31)

मुख्य पद :

1. मैं अपने प्रभु यीशु की पहचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूँ। जिसके कारण मैंने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूँ, जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूँ। (फिलि. 3:8)

2. क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है। (फिलि. 1:21)

परिचय : ''पौलुस'' नाम का अर्थ है-छोटा या थोड़ा। प्रेरितों के काम की पुस्तक और उसकी लिखी पत्रियों में हम पौलुस के जीवन के विषय में पढ़ते हैं। पौलुस का जन्म ईस्वी सन् 1 के लगभग तरसुस के एक फरीसी परिवार में हुआ था। शाऊल उसका इब्रानी नाम था और पौलुस उसका रोमी नाम था। वह जन्म से रोमी नागरिक था। उसके पिता बिन्यामीन के गोत्र का था। (फिलि. 3:5) और फरीसियों में से था। (प्रेरितों. 28:6)। पौलुस के माता-पिता के बारे में हमें इससे अधिक कोई जानकारी नहीं मिलती। उसके आरंभिक वर्ष तरसुस में बीते जहाँ यूनानी भाषा का प्रयोग होता था। लगभग चौदह वर्ष की उम्र में वह यरूशलेम चले गए जहाँ प्रसिद्ध इब्रानी रब्बी गमलीएल से मूसा की व्यवस्था की शिक्षा प्राप्त की। पौलुस ने कम से कम दस वर्ष इस अध्ययन में लगाए होंगे, जिसके पश्चात् वह वापस तरसुस को चले गए। लगभग इसी दौरान प्रभु यीशु ने यहूदिया और गलील में अपना सार्वजनिक सेवा कार्य आरंभ किया और बाद में कलीसिया का आरंभ हुआ। सुसमाचार प्रचारकों और प्रेरितों के सेवा कार्य के द्वारा कलीसिया की उन्नति होती जा रही थी। स्तिफनुस जो अनुग्रह और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, वह सुनाम और मुख्य था। उसके सुसमाचार प्रचार के कारण बहुत से लोग

कलीसिया से जुड़ गए। परिणामस्वरूप उसे शहीद होना पड़ा।

यह समय था जब शाऊल जवान था और वह यरूशलेम आ गया था और उसने यहूदी धर्म की रक्षा का कार्य अपने कंधों पर उठा लिया। जब स्तिफनुस को पत्थवाह किया जा रहा था, तब जवानों ने अपने कपड़े उतारकर शाऊल के पास रख दिए थे। (प्रेरितों 7:57) पद 60 कहता है, ''शाऊल उसके वध में सहमत था।'' स्तिफनुस की मृत्यु के पश्चात् कलीसिया पर सताव बहुत बढ़ गया और शाऊल उनके विरुद्ध कार्य कर रहा था और कलीसिया को उजाड़ रहा था। परिणामस्वरूप विश्वासी लोग यहूदिया और सामरिया देशों में तितर-बितर हो गए। परन्तु परमेश्वर ने इस सताव को कलीसिया की बढ़ोतरी का कारण बना दिया।

शाऊल का हृदय-परिवर्तन :

कलीसिया पर शाऊल का सताव जारी था। उसने महायाजक से इस अभिप्राय से चिट्ठी प्राप्त की, कि दश्मिक के आराधानलयों में जाकर ''इस पंथ'' में पाए जाने वाले स्त्री पुरुषों को बांधकर यरूशलेम ले आ सके। ताकि उन्हें दण्ड दिया जा सके। परन्तु परमेश्वर की योजना थी कि कलीसिया को सताने वालों में से कुछ लोग मसीही विश्वासी बन जाएँ।

जब शाऊल दश्मिक की ओर चला और उसके निकट पहुँचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी और वह भूमि पर गिर पड़ा और यह शब्द सुना, 'हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?' उसने पूछा, 'हे प्रभु तू कौन है?' उसने कहा, ''मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है। परन्तु अब उठकर नगर में जा, और जो तुझे करना है वह तुझ से कहा जाएगा।'' जो मनुष्य उसके साथ थे, वे अवाक् रह गए क्योंकि शब्द तो सुनते थे परन्तु किसी को देखते न थे। तब शाऊल भूमि पर से उठा और जब आँखें खोलीं तो उसे कुछ दिखाई न दिया, और वे उसका हाथ पकड़कर दमिश्क में ले गए। वह तीन दिन तक न देख सका और न खाया और न पीया।

दमिश्क में हनन्याह नामक एक चेला था। उससे प्रभु ने दर्शन में

कहा, ''हे हनन्याह, उठकर ''सीधी'' नामक गली में जा। यहूदा के घर में शाऊल नामक एक तरसुसवासी है, वह प्रार्थना कर रहा है। उसने हनन्याह नामक एक पुरुष को भीतर आते और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है, ताकि फिर से दृष्टि पाए।'' हनन्याह ने उत्तर दिया, ''हे प्रभु, मैं ने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है कि इसने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी-बड़ी बुराइयाँ की हैं। और यहाँ भी प्रधान याजकों की ओर से अधिकार पत्र लेकर आया है कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं, उन सबको बाँध ले।'' परन्तु प्रभु ने उससे कहा, ''तू चला जा, क्योंकि वह तो अन्यजातियों और राजाओं और इस्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रगट करने के लिए मेरा चुना हुआ पात्र है। और मैं उसे बताऊँगा कि मेरे नाम के लिए उसे कैसा-कैसा दु:ख उठाना पड़ेगा।'' तब हनन्याह उठकर उस घर में गया और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, ''हे भाई शाऊल, प्रभु अर्थात् यीशु जो उस रास्ते में तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।'' तब तुरंत उसकी आँखों से छिलके से गिरे और वह देखने लगा, और उठकर बपतिस्मा लिया और भोजन करके बल पाया।

शाऊल कई दिन उन चेलों के साथ रहा जो दमिश्क में थे। वह जाकर आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा कि वह परमेश्वर का पुत्र है। और इस बात का प्रमाण दे देकर कि मसीहा यही है, दमिश्क के रहनेवाले यहूदियों का मुँह बंद करता रहा।

जब बहुत दिन बीत गए तो यहूदियों ने मिलकर उसे मार डालने का षड्यंत्र रचा। परन्तु उनका षड्यंत्र शाऊल को मालूम हो गया। वे उसे मार डालने के लिए रात-दिन घात में लगे रहते थे। परन्तु रात को उसके चेलों ने उसे टोकरे में बैठाया और शहरपनाह पर से लटका कर उतार दिया। दमिश्क से वह यरूशलेम पहुँचा और वह पन्द्रह दिनों तक पतरस के साथ रहा। उसने अन्य चेलों के साथ मिल जाने का प्रयत्न किया परन्तु सब उससे डरते थे, क्योंकि उनको विश्वास न होता था कि वह भी चेला है। परन्तु बरनबास ने उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले जाकर उनको बताया कि इसने किस रीति से मार्ग में प्रभु को देखा और प्रभु ने

उससे बातें कीं। फिर दमिश्क में इसने कैसे हियाव से यीशु के नाम से प्रचार किया। परन्तु जब यहूदियों ने उसे मार डालने का यत्न किया तब भाई उसे कैसरिया ले आए और तरसुस को भेज दिया।

इस समय तक अन्ताकिया में कलीसिया बन गई थी। यरूशलेम की कलीसिया ने बरनबास को अन्ताकिया भेजा ताकि वहाँ की सेवकाई के बारे में जानकारी लेकर आए। अन्ताकिया पहुँचकर उसने उनके बीच रहकर उन्हें आत्मिक प्रोत्साहन दिया। वहाँ रहकर उसे यह बात समझ आई कि वे लोग यूनानी संस्कृति के हैं अत: उनके बीच सेवकाई करने के लिए शाऊल (पौलुस) ही सही व्यक्ति है। अत: वह पौलुस की तलाश में तरसुस को गया और उसे लेकर अन्ताकिया को वापस आया। उन्होंने एक साथ एक वर्ष वहाँ पर सेवा कार्य किया। और प्रभु यीशु के पीछे चलने वाले सबसे पहले अन्ताकिया ही में **मसीही** कहलाए।

उन्हीं दिनों में कई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम से अन्ताकिया आए। उनमें से अगबुस नामक एक ने खड़े होकर आत्मा की प्रेरणा से यह बताया कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा। वह अकाल क्लौदियुस के समय में पड़ा। तब चेलों ने निर्णय किया कि हर एक अपनी-अपनी पूँजी के अनुसार यहूदिया में रहने वाले भाइयों की सहायता के लिए कुछ भेजे। उन्होंने ऐसा ही किया और बरनबास और पौलुस के हाथों प्राचीनों के पास कुछ भेज दिया।

प्रश्न :

1. 'पौलुस' नाम का क्या अर्थ है?
2. पौलुस की शिक्षा का वर्णन करो?
3. पौलुस ने कलीसिया को कैसे सताया?
4. पौलुस का मन-परिवर्तन कैसे हुआ?
5. पौलुस अन्ताकिया में कैसे पहुँचा?
6. बरनबास और पौलुस के हाथ से दान क्यों भेजे गए?

पाठ–22

पौलुस की पहली मिश्नरी यात्रा

(प्रेरितों के कार्य 13, 14)

मुख्य पद : उसने उनसे कहा, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।'' (मरकुस 16:15)

यदि मैं सुसमाचार सुनाऊँ, तो मेरे लिए कुछ घमण्ड की बात नहीं, क्योंकि यह तो मेरे लिए अवश्य है। यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊँ, तो मुझ पर हाय! (1 कुरिन्थियों 9:16)

पौलुस और बरनबास भेजे गए :

अन्ताकिया की कलीसिया में कई भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे, जैसे बरनबास, शमौन जो नीगर कहलाता है, लूकियुस कुरेनी, चौथाई देश के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम और शाऊल। जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, ''मेरे लिए बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो जिसके लिए मैं ने उन्हें बुलाया है।'' तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया।

साइप्रस में सुसमाचार :

सलमीस में : पौलुस और बरनबास अन्ताकिया से सिलूकिया पहुँचे। वहाँ से जहाज़ पर चढ़कर साइप्रस को चले और सलमीस में पहुँचकर, परमेश्वर का वचन यहूदियों के आराधनालयों में सुनाया। यूहन्ना उनका सेवक था।

पाफुस में : वे उस सारे टापू में होते हुए पाफुस पहुँचे। वहाँ का हाकिम सिरगियुस जो एक बुद्धिमान पुरुष था, उसने पौलुस और बरनबास को अपने पास बुलाकर परमेश्वर का वचन सुनना चाहा। परन्तु इलीमास टोन्हे ने उनका विरोध करके हाकिम को विश्वास करने से रोका। तब पौलुस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उसकी ओर देखा और कहा,

''हे कपट और सब चतुराई से भरे हुए शैतान की सन्तान, सकल धर्म के बैरी, क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा? अब देख, प्रभु का हाथ तुझ पर लगा है और तू कुछ समय तक सूर्य को न देखेगा।'' तब तुरन्त धुंधलापन और अंधेरा उस पर छा गया, और वह इधर-उधर टटोलने लगा ताकि कोई उसका हाथ पकड़ के ले चले। तब हाकिम ने जो हुआ था, उसे देखकर और प्रभु के उपदेश से चकित होकर विश्वास किया।

पिरगा में :

पौलुस और उसके साथी पाफुस से जहाज़ खोलकर पंफूलिया के पिरगा में आए। और यूहन्ना उनको छोड़कर यरूशलेम को लौट गया। पौलुस को यह बात अच्छी नहीं लगी, परन्तु उन्होंने अपनी यात्रा जारी रखी।

पिसिदिया के अन्ताकिया में :

पिरगा से आगे बढ़कर वे पिसिदिया के अन्ताकिया में आए और सब्त के दिन आराधनालय में जाकर बैठ गए। व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक से पढ़ने के बाद, आराधनालय के सरदारों ने उनके पास कहला भेजा ''हे भाइयो, यदि लोगों के उपदेश के लिए तुम्हारे मन में कोई बात हो, तो कहो।'' तब पौलुस ने खड़े होकर और हाथ से संकेत करके कहा, ''हे इस्राएलियों और परमेश्वर से डरने वालो, सुनो। इस्राएली लोगों के परमेश्वर ने हमारे बापदादों को चुन लिया और उन्हें मिस्र देश की गुलामी से निकाल लाया। शमूएल भविष्यद्वक्ता तक उनमें न्यायी ठहराए गए। फिर जब उन्होंने एक राजा माँगा, तब परमेश्वर ने चालीस वर्ष के लिए बिन्यासीन के गोत्र के शाऊल को उन पर राजा ठहराया। फिर उसे हटाकर दाऊद को उनका राजा ठहराया। उसके विषय में परमेश्वर ने गवाही दी, ''मुझे एक मनुष्य, यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है, वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा।'' इसी के वंश में से परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इस्राएल के पास एक उद्धारकर्ता, अर्थात् यीशु को भेजा। हे भाइयों, तुम जो अब्राहम की संतान

हो, तुम्हारे पास इस उद्धार का वचन भेजा गया है। क्योंकि यरूशलेम के रहनेवालों और उनके सरदारों ने, न उसे पहचाना और न भविष्यद्वक्ताओं की बातें समझीं और उसे दोषी ठहराकर पिलातुस से विनती की कि वह मार डाला जाए। जब उन्होंने उसके विषय में लिखी हुई सारी बातें पूरी कीं तो उसे क्रूस पर से उतारकर कब्र में रखा। परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया और वह बहुतों को बहुत दिनों तक दिखाई देता रहा। इसलिए हे भाइयों, तुम जान लो कि इसी के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें दिया जाता है, और जिन बातों में तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा निर्दोष नहीं ठहर सकते थे, उन्हीं सब में हर एक विश्वास करने वाला उसके द्वारा निर्दोष ठहरता है।

जब सभा उठ गई तो, यहूदियों और यहूदी मत में आए हुए भक्तों में से बहुत से पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए, और उन्होंने उनसे बातें करके समझाया कि परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहो। अगले सब्त के दिन नगर के प्राय: सब लोग परमेश्वर का वचन सुनने को इकट्ठे हुए। परन्तु यहूदी भीड़ को देखकर डाह से भर गए और निन्दा करके पौलुस की बातों के विरोध में बोलने लगे। तब वे अन्यजातियों की ओर फिरे और उन्हें सुसमाचार सुनाया। परिणामस्वरूप अन्यजातियों ने बड़े आनंद के साथ परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया। तब प्रभु का वचन उस सारे देश में फैलने लगा, परन्तु यहूदियों ने नगर के प्रमुख लोगों को प्रेरित किया और पौलुस और बरनबास के विरुद्ध उपद्रव करवा के उन्हें अपनी सीमा से निकाल दिया। मरकुस 6:11 में प्रभु यीशु के वचन के अनुसार वे उनके सामने अपने पाँवों की धूल झाड़कर इकुनियुम को चले गए।

इकुनियुम में :

इकुनियुम में वे यहूदियों के आराधनालय में गए और इस प्रकार बातें की कि यहूदियों और यूनानियों में से बहुतों ने विश्वास किया। विश्वास न करने वाले यहूदियों ने विरोध किया परन्तु वे बहुत दिनों तक वहाँ रहे। प्रभु ने उनके हाथों से चिह्न और अद्‌भुत कार्य करवाए। परन्तु

जब अन्यजाति और यहूदी उन पर पथराव करने के लिए दौड़े तो वे लुस्त्रा नगर को भाग गए।

लुस्त्रा में :

लुस्त्रा में उन्हें एक मनुष्य मिला जो जन्म ही से लंगड़ा था। पौलुस ने ऊँचे शब्द से उससे कहा, ''अपने पाँवों के बल सीधा खड़ा हो।'' तब वह उछलकर चलने-फिरने लगा। लोगों ने पौलुस का यह कार्य देखकर कहा, ''देवता मनुष्यों के रूप में होकर हमारे पास उतर आए हैं।'' उन्होंने बरनबास को ज्यूस और पौलुस को हिरमेस कहा। ज्यूस के मंदिर का पुजारी बैल और फूलों के हार फाटकों पर लाकर लोगों के साथ बलिदान करना चाहता था परन्तु पौलुस और बरनबास ने जब यह सुना तो अपने कपड़े फाड़े और भीड़ में लपके और पुकारकर कहने लगे ''हे लोगों तुम क्या करते हो? हम भी तो तुम्हारे समान दु:ख-सुख भोगी मनुष्य हैं और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं कि तुम इन व्यर्थ वस्तुओं से अलग होकर जीवते परमेश्वर की ओर फिरो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है बनाया।'' कुछ समय के पश्चात् कुछ यहूदियों ने अन्ताकिया और इकुनियुम से आकर लोगों को अपनी ओर कर लिया और पौलुस पर पथराव किया और मरा समझकर उसे नगर के बाहर घसीट कर ले गए। पर जब चेले उसके चारों ओर आ खड़े हुए तो वह उठकर नगर में गया और दूसरे दिन बरनबास के साथ दिरबे को चला गया।

दिरबे में :

दिरबे पहुँचकर उन्होंने नगर के लोगों को सुसमाचार सुनाया और बहुत से चेले बनाकर लौट गए। लुस्त्रा में उनका कोई विरोध नहीं हुआ।

अन्ताकिया को लौटना :

वे उस नगर के लोगों को सुसमाचार सुनाकर और बहुत से चेले बनाकर, लुस्त्रा और इकुनियुम और अन्ताकिया को लौट आए और चेलों के मन को स्थिर करते रहे और यह उपदेश देते थे कि विश्वास में बने

रहो, और यह कहते थे, ''हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।'' और उन्होंने हर एक कलीसिया में उनके लिए प्राचीन ठहराए, और उपवास सहित प्रार्थना करके उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा। तब पिसिदिया से होते हुए वे पंफूलिया पहुँचे, फिर पिरगा में वचन सुनाकर अत्तलिया में आए। वहाँ से वे जहाज़ पर अन्ताकिया गए, जहाँ वे उस कार्य के लिए जो उन्होंने पूरा किया था, परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपे गए थे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने कलीसिया को इकट्ठा किया और बताया कि परमेश्वर ने उनके साथ होकर कैसे बड़े-बड़े कार्य किए। कैसे परमेश्वर ने अन्यजातियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया। वहाँ वे चेलों के साथ बहुत दिन तक रहे।

इस प्रकार उनकी पहली मिश्नरी यात्रा समाप्त हुई जो दो वर्ष की रही। उन्होंने 1100 कि.मी. स्थल की यात्रा, और 800 कि.मी. की समुद्री यात्रा तय की। सुसमाचार ने उस अलग करने वाली दीवार को ढा दिया था जो यहूदियों और अन्यजातियों के बीच में थी। (इफिसियों 2:14-16)। इस बात की संभावना है कि अपनी पहली मिश्नरी यात्रा के तुरंत बाद पौलुस ने अन्ताकिया से गलातियों की पत्री लिखी। वर्ष ईस्वी सन् 49 रहा होगा।

प्रश्न :

1. ''पौलुस और बरनबास को उस कार्य के लिए अलग करो जिसके लिए मैं ने उन्हें बुलाया है।'' इसका संदर्भ क्या है?
2. यूहन्ना मरकुस ने क्या किया?
3. पौलुस और बरनबास ने किन-किन स्थानों पर सुसमाचार का प्रचार किया?
4. पौलुस पर पत्थरवाह किस स्थान पर हुआ?

पाठ–23

पौलुस की दूसरी मिश्नरी यात्रा

(प्रेरितों के काम 15:34-40; 16:1)

"मुझ से माँग, और मैं जाति-जाति के लोगों को तेरी संपत्ति होने के लिए और दूर-दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिए दे दूँगा।" (भजन 2:8)

"वे इस बात से आनंदित होकर महासभा के सामने से चले गए, कि हम उसके नाम के लिए अपमानित होने के योग्य तो ठहरे।" (प्रेरितों. 5:41)

पौलुस और बरनबास अन्ताकिया में थे और प्रचार करने और परमेश्वर का वचन सुनाने में लगे हुए थे। अब उनकी दूसरी सुसमाचार प्रचार की यात्रा का समय आ गया था। पौलुस ने बरनबास से सलाह की कि जिन नगरों में वे पहले गए थे और सुसमाचार सुनाया था, वहाँ फिर से जाएँ। तब बरनबास ने यूहन्ना मरकुस को साथ लेने का विचार किया, परन्तु पौलुस ने उसे साथ ले जाना न चाहा, क्योंकि पहली बार वह पंफुलिया में उनसे अलग हो गया था। अतः ऐसा विवाद उठा कि वे एक दूसरे से अलग हो गए। बरनबास मरकुस को लेकर जहाज़ पर साइप्रस चला गया। पौलुस ने सीलास को चुन लिया और भाइयों से परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपा जाकर वहाँ से चला गया। और वह कलीसियाओं को स्थिर करता हुआ सीरिया और किलिकिया से होते हुए निकला।

पौलुस और सीलास पहले दिरबे को गए और फिर लुस्त्रा को गए। वहाँ वे तीमुथियुस से मिले जो विश्वासी यहूदिनी का पुत्र था, परन्तु उसका पिता यूनानी था। संभवतः पौलुस की पहली मिश्नरी यात्रा के दौरान तीमुथियुस विश्वास में आया था। पौलुस इस बात से प्रसन्न था कि लुस्त्रा और इकुनियम के विश्वासी लोग अपने विश्वास में उन्नति कर रहे थे। और वे नगर-नगर जाते हुए उन विधियों को जो यरूशलेम के प्रेरितों और प्राचीनों ने ठहराई थीं, मानने के लिए उन्हें सिखाते गए।

इन प्रकार कलीसियाएँ विश्वास में स्थिर होती गईं और संख्या में प्रतिदिन बढ़ती गईं।

वे फ्रूगिया और गलातिया प्रदेशों में से होकर गए, क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया। उन्होंने मूसिया के निकट पहुँचकर बितूनिया में जाना चाहा परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया। अत: वे मूसिया से होकर त्रोआस में आए। वहाँ पौलुस ने रात को एक दर्शन में देखा कि एक मकिदुनी पुरुष खड़ा हुआ उससे विनती कर रहा है, ''पार उतरकर मकिदुनिया में आ और हमारी सहायता कर।'' यह दर्शन देखते ही वे समझ गए कि परमेश्वर ने उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए वहाँ बुलाया है। इसलिए त्रोआस से जहाज़ खोलकर वे पहले सुमात्राके और फिर दूसरे दिन नियापुलिस में आए। वहाँ से वे फिलिप्पी पहुँचे, जो कि मकिदुनिया प्रान्त का मुख्य नगर और रोमियों की बस्ती है। इस प्रकार उनकी दूसरी मिश्नरी यात्रा का पहला भाग समाप्त हो गया और वे यूरोप पहुँच गए।

प्रश्न :

1. पौलुस और बरनबास के अलग होने का क्या कारण था?
2. पौलुस तीमुथियुस से कहाँ मिला था?
3. उन्होंने एशिया में वचन क्यों नहीं सुनाया?
4. त्रोआस में पौलुस ने क्या दर्शन देखा?
5. ''पौलुस का जीवन पूर्णत: पवित्र आत्मा के द्वारा नियंत्रित था'' इसे समझाएँ।

पाठ-24

पौलुस की दूसरी मिश्नरी यात्रा (जारी)

(प्रेरितों के काम 16, 17)

''पौलुस की ओर से जो परमेश्वर का दास और यीशु मसीह का प्रेरित है, परमेश्वर के चुने हुए लोगों के विश्वास और उस सत्य की पहचान के अनुसार जो भक्ति के अनुसार है।'' (तीतुस 1:1)

''पर तू सब बातों में सावधान रह, दु:ख उठा, सुसमाचार प्रचार का काम कर और अपनी सेना को पूरा कर।'' (2 तीमु. 4:5)

फिलिप्पी नगर में रहते हुए सब्त के दिन पौलुस और उसके साथी नगर के फाटक के बाहर नदी के किनारे यह समझकर गए कि वहाँ प्रार्थना करने का स्थान होगा, और बैठकर उन स्त्रियों से जो इकट्ठी हुई थीं, बातें करने लगे। लुदिया नामक थुआतीरा नगर की बैंजनी कपड़े बेचने वाली एक भक्त स्त्री सुन रही थी। प्रभु ने उसका मन खोला कि वह पौलुस की बातों पर चित्त लगाए। जब उसने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया तो उसने उनसे विनती की और उन्हें अपने घर ले गई।

एक और दिन जब वे प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे तो उन्हें एक दासी मिली जिसमें भावी कहने वाली आत्मा थी, और भावी कहने से अपने स्वामियों के लिए बहुत कुछ कमा लाती थी। वह पौलुस और उसके साथियों के पीछे जाकर चिल्लाने लगी, ''ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं।'' वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही। पौलुस दु:खी हुआ और उसने उस आत्मा से कहा, ''मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूँ कि उसमें से निकल जा।'' तब वह उसी घड़ी निकल गई। जब उसके स्वामियों ने देखा कि उनकी कमाई की आशा न रही तब वे पौलुस और सीलास को पकड़कर हाकिमों के पास ले गए और कहा, ''ये लोग जो यहूदी हैं, हमारे नगर में बड़ी हलचल मचा रहे हैं, और ऐसी रीतियाँ बता रहे हैं जिन्हें मानना हम रोमियों के लिए ठीक नहीं है।'' तब भीड़

के लोग उनके विरोध में इकट्ठे होकर चढ़ आए और हाकिमों ने उनके कपड़े फाड़कर उतार दिए और उन्हें बेंत मारने की आज्ञा दी। फिर उन्हें बहुत बेंत लगवाकर बन्दीगृह में डाल दिया और दारोगा को आज्ञा दी कि उन्हें चौकसी से रखे। अत: उसने उन्हें भीतर की कोठरी में रखा और उनके पाँव काठ में ठोंक दिए।

आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे। इतने में एक बड़ा भूकम्प आया और बंदीगृह की नींव हिल गई, और तुरंत सब द्वार खुल गए और सबके बंधन भी खुल गए। दारोगा जाग उठा और बंदीगृह के द्वार खुले देखकर समझा कि कैदी भाग गए हैं। अत: उसने तलवार खींचकर अपने आपको मार डालना चाहा। परन्तु पौलुस ने ऊँचे शब्द से पुकार कर कहा, ''अपने आप को कुछ हानि न पहुँचा, क्योंकि हम सब यहीं हैं।'' तब वह दीया मँगवाकर भीतर आया और काँपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा और उनसे कहा, ''हे सज्जनों, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ?'' उन्होंने उससे कहा, ''प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।'' तब उन्होंने उसको और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया। रात ही को उसने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए, और उसने अपने सब लोगों समेत बपतिस्मा लिया। तब दारोगा ने उन्हें अपने घर ले जाकर उनके आगे भोजन रखा। उसने सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनंद मनाया।

जब दिन हुआ तब हाकिमों ने सिपाहियों के हाथ कहला भेजा कि उन मनुष्यों को छोड़ दो। दारोगा ने यह बात पौलुस को बताई। परन्तु पौलुस ने उनसे कहा, ''उन्होंने हमें जो रोमी मनुष्य हैं, दोषी ठहराए बिना लोगों के सामने मारा और बंदीगृह में डाला। अब क्या हमें चुपके से निकाल रहे हैं? ऐसा नहीं, परन्तु वे स्वयं आकर हमें बाहर निकालें।'' सिपाहियों ने जब ये बातें हाकिमों से कही तो यह सुनकर कि वे रोमी हैं, डर गए। और आकर उन्हें मनाया और बाहर ले जाकर विनती की कि नगर से चले जाएँ। वे बंदीगृह से निकलकर लुदिया के घर गए और भाइयों से भेंट करके उन्हें शांति दी और चले गए।

फिर वे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके में आए, जहाँ यहूदियों का एक आराधनालय था। पौलुस अपनी रीति के अनुसार उनके पास गया और तीन सब्त के दिन पवित्र शास्त्रों से उनके साथ वाद-विवाद किया और उनका अर्थ खोल-खोलकर समझाता था कि मसीह को दु:ख उठाना, और मरे हुओं में से जी उठना अवश्य था। और ''यही यीशु जिसकी मैं तुम्हें कथा सुनाता हूँ, मसीह है।'' उनमें से कितनों ने और भक्त यूनानियों में से बहुतों ने, और बहुत सी कुलीन स्त्रियों ने मान लिया और पौलुस और सीलास के साथ मिल गए। परन्तु यहूदियों ने डाह से भरकर बाज़ारू लोगों में से कुछ दुष्ट मनुष्यों को अपने साथ में लिया और भीड़ इकट्ठी करके नगर में हुल्लड़ मचाने लगे और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा। उन्हें वहाँ न पाकर वे यह चिल्लाते हुए यासोन और कुछ भाइयों को नगर के हाकिमों के सामने खींच लाए। और उन पर दोष लगाया ''ये लोग जिन्होंने जगत को उलटा पुलटा कर दिया है, यहाँ भी आ गए हैं और यासोन ने उन्हें अपने घर में रखा है। ये सबके सब यह कहते हैं कि यीशु राजा है। ये कैसर की आज्ञाओं का विरोध करते हैं।'' उन्होंने लोगों और नगर के हाकिमों को यह सुनाकर घबरा दिया। अत: उन्होंने यासोन और बाकी लोगों से मुचलका लेकर उन्हें छोड़ दिया।

भाइयों ने रात ही को पौलुस और सीलास को बिरीया भेज दिया। वहाँ पहुँचकर वे यहूदियों के आराधनालय में गए। वहाँ के लोग थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया। वे प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूँढ़ते रहे कि ये बातें सही हैं कि नहीं। इसलिए उनमें से बहुतों ने और यूनानी कुलीन स्त्रियों और पुरुषों में से बहुतों ने विश्वास किया। परन्तु जब थिस्सलुनीके के यहूदी जान गए कि पौलुस बिरीया में भी परमेश्वर का वचन सुनाता है, तब वे वहाँ भी आकर लोगों को उसकाने और हलचल मचाने लगे। तब भाइयों ने तुरंत पौलुस को विदा किया, परंतु सीलास और तीमुथियुस वहीं रह गए। पौलुस को पहुँचाने वाले उसे एथेंस तक ले गए और सीलास और तीमुथियुस के लिए यह आज्ञा पाकर विदा हुए कि वे शीघ्र से शीघ्र

उसके पास आ जाएँ।

प्रश्न :

1. यूरोप में कहाँ और किसका सबसे पहले मन परिवर्तन हुआ?
2. लुदिया ने परमेश्वर के लोगों के प्रति अपना प्रेम कैसे प्रकट किया?
3. फिलिप्पी में भावी कहने वाली लड़की के स्वामी लोग पौलुस और सीलास से क्यों नाराज हुए?
4. फिलिप्पी जेल में पौलुस और सीलास ने क्या किया?
5. दारोगा का मन परिवर्तन कैसे हुआ?

पाठ–25

पौलुस की दूसरी मिश्नरी यात्रा (जारी)

(प्रेरितों 17–18)

''वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डाँट और समझा।'' (2 तीमु. 4:2)

जब पौलुस एथेंस में सीलास और तीमुथियुस का इंतज़ार कर रहा था, तो नगर में निकला और नगर को मूरतों से भर हुआ देखकर उसका जी जल गया। अतः वह आराधनालय में यहूदियों और भक्तों से, और चौक में जो लोग उससे मिलने आते थे, उनसे हर दिन वाद–विवाद करता था। तब इपिकूरी और स्तोईकी दार्शनिकों में से कुछ उसके साथ तर्क करने लगे और कुछ लोगों ने कहा, ''यह बकवादी क्या कहना चाहता है?'' कुछ लोगों ने कहा, ''वह अन्य देवताओं का प्रचारक मालूम पड़ता है।'' क्योंकि वह यीशु का और पुनरुत्थान का सुसमाचार सुनाता था। तब वे उसे अपने साथ अरियुपगुस नामक स्थान पर ले गए और उससे पूछा, ''क्या हम जान सकते हैं कि यह नया मत जो तू सुनाता है, क्या है? क्योंकि तू अनोखी बातें कहता है और हम उनका अर्थ जानना चाहते हैं।''

एथेंसवासी और परदेशी जो वहाँ रहते थे, नई–नई बातें कहने और सुनने के सिवाय और किसी काम में समय नहीं बिताते थे।

तब पौलुस ने बीच में खड़े होकर कहा, ''हे एथेंस के लोगो, मैं देखता हूँ कि तुम हर बात में देवताओं के मानने वाले हो। क्योंकि नगर में घूमते हुए मैंने ऐसी वेदी देखी जिस पर लिखा था, ''अनजाने ईश्वर के लिए''। इसलिए जिसे तुम बिना जाने पूजते हो मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूँ। जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मंदिरों में नहीं रहता। उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ बनाईं और

उनके ठहराए हुए समय और निवास की सीमाओं को इसलिए बाँधा है कि वे परमेश्वर को ढूँढ़े, कदाचित उसे पाएँ, तौभी वह हममें से किसी से दूर नहीं है। जैसा तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, ''हम तो उसी के वंशज हैं।'' अतः परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वर को मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़ा जा सकता है। परमेश्वर ने अज्ञानता के समयों पर ध्यान नहीं दिया, परन्तु अब हर एक को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है, और मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।''

मरे हुओं के पुनरुत्थान की बात सुनकर कुछ तो ठठ्ठा करने लगे और कुछ लोगों ने कहा, ''यह बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे।'' इस पर पौलुस उनके बीच में से निकल गया। परन्तु कुछ मनुष्य उसके साथ मिल गए और विश्वास किया, जिनमें दियुनुसियुस और दमरिस नामक एक स्त्री भी थी, और उनके साथ और लोग भी थे।

इसके बाद पौलुस एथेंस को छोड़कर कुरिन्थुस में आया और वहाँ उसे अक्विला नामक एक यहूदी मिला। वह अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ हाल ही में इटली से आया था, क्योंकि क्लौदियुस ने सब यहूदियों को रोम से निकल जाने की आज्ञा दी थी। पौलुस उनके यहाँ गया। उसका और उनका तंबू बनाने का उद्यम था। इसलिए वह उनके साथ रहा और एक साथ काम करने लगे। वह हर एक सब्त के दिन आराधनालय में वाद-विवाद करके यहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था। जब सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए, तो पौलुस वचन सुनाने की धुन में यहूदियों को गवाही देने लगा कि यीशु ही मसीह है। परन्तु जब लोग विरोध करने लगे तब उसने अपने कपड़े झाड़कर उनसे कहा, ''तुम्हारा लहू तुम्हारी ही गर्दन पर रहे! मैं अब से अन्यजातियों के पास जाऊँगा।'' वहाँ से चलकर वह तितुस यूस्तुस नामक परमेश्वर के एक भक्त के घर में आया, जिसका घर आराधनालय से लगा हुआ था। तब आराधनालय के सरदार क्रिसपुस ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर

विश्वास किया और बहुत से कुरिन्थवासी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया। प्रभु ने एक रात पौलुस से दर्शन में कहा, ''मत डर, वरन् कहे जा और चुप मत रह, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ और कोई तेरी हानि न करेगा। क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।'' अत: पौलुस उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाते हुए डेढ़ वर्ष तक रहा।

जब गल्लियो अरवाया देश का हाकिम था, तो यहूदी लोग एका करके पौलुस को पकड़कर न्याय आसन के सामने लाकर कहने लगे, ''यह लोगों को समझाता है कि परमेश्वर की उपासना ऐसी रीति से करें जो व्यवस्था के विपरीत है।'' गल्लियो ने यहूदियों से कहा, ''हे यहूदियो, यदि यह कुछ अन्याय या दुष्टता की बात होती तो उचित था कि मैं तुम्हारी सुनता। परन्तु यदि यह वाद-विवाद शब्दों और नामों और तुम्हारे यहाँ की व्यवस्था के विषय में है, तो तुम ही जानो। क्योंकि मैं इन बातों का न्यायी नहीं बनना चाहता।'' तब उसने उन्हें न्याय आसन के सामने से निकलवा दिया। तब सब लोगों ने आराधनालय के सरदार सोस्थिनेस को पकड़ के न्याय आसन के सामने मारा। परन्तु गल्लियो ने इन बातों की कोई परवाह न की। इस घटना के पश्चात् पौलुस बहुत समय तक कुरिन्थुस में रहा। इस समय पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की पत्रियाँ लिखीं।

अंतत: वह प्रिस्किल्ला और अक्विला के साथ कुरिन्थुस से सीरिया को गया। उसने इफिसुस पहुँचकर उनको वहाँ छोड़ा और आराधनालय में जाकर यहूदियों से विवाद करने लगा। जब उन्होंने उससे विनती की, ''हमारे साथ कुछ दिन और रहो।'' तब वह यह कहकर विदा हुआ कि ''यदि परमेश्वर ने चाहा तो मैं तुम्हारे पास फिर आऊँगा।'' तब वह इफिसुस से जहाज़ खोलकर चल दिया और कैसरिया में उतरकर यरूशलेम को गया और कलीसिया को नमस्कर करके अन्ताकिया में वापस आ गया। इस प्रकार पौलुस की दूसरी मिश्नरी यात्रा समाप्त हो गई।

प्रश्न :

1. एथेंस में पौलुस का क्यों जी जल गया?

2. वे पौलुस को कहाँ ले गए कि उसकी बातें सुनें?
3. कुरिन्थुस में वह किनसे मिला और उनके साथ मिलकर कौन सा उद्यम किया?
4. पौलुस ने वहाँ रहकर क्या दर्शन देखा?

पाठ-26

पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा

(प्रेरितों 18:23-21:16)

''जिसने अपने आपको हमारे लिए दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले और शुद्ध करके अपने लिए एक ऐसी जाति बना ले जो भले-भले कामों में सरगर्म हो।'' (तीतुस 2:14)

पौलुस अब अन्ताकिया से तीसरी सुसमाचार प्रचार यात्रा के लिए जाने को तैयार था। अत: वह वहाँ से निकला और गलातिया और फ्रूगिया प्रदेशों में सब चेलों को स्थिर करता फिरा।

इस दौरान अक्विला और प्रिस्किल्ला इफिसुस में रहे और अपना व्यवसाय करते रहे और सब्त के दिन आराधनालय में जाते रहे। अपुल्लोस नाम का एक विद्वान यहूदी इफिसुस में आया। उसने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी, और मन लगाकर यीशु के विषय ठीक-ठीक सुनाता और सिखाता था। परन्तु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा की बात जानता था। वह आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा। परन्तु अक्विला और प्रिस्किल्ला उसे अपने घर ले गए और परमेश्वर का मार्ग उसको और भी ठीक-ठीक बताया।

पौलुस जब इफिसुस में आया तो उसने वहाँ कुछ चेलों को देखा और उनसे पूछा, ''क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?'' उन्होंने उससे कहा, ''हमने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।'' पौलुस ने उनसे पूछा, ''फिर तुमने किसका बपतिस्मा लिया?'' उन्होंने उससे कहा, ''हमने यूहन्ना का बपतिस्मा लिया है।'' पौलुस ने उन्हें समझाया, ''यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया कि जो मेरे बाद आने वाला है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना।'' यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया। और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे तब पवित्र आत्मा उन पर उतरा और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने लगे और भविष्यद्वाणी करने लगे। नया नियम के दिए जाने

से पहले यह परमेश्वर के कार्य करने का तरीका था। आज हमें पवित्र आत्मा तब प्राप्त होता है जब हमारा उद्धार होता है। जिस क्षण एक व्यक्ति प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता मानता है उसी समय से पवित्र आत्मा उसके अंदर वास करने लगता है।

पौलुस तीन महीने तक आराधनालय में जाकर निडर होकर बोलता रहा और परमेश्वर के राज्य के विषय में विवाद करता और समझाता रहा। परन्तु जब कुछ लोगों ने विरोध किया तो पौलुस ने चेलों को उनसे अलग कर लिया और उनके साथ प्रतिदिन तुरन्नुस की पाठशाला में वाद-विवाद किया करता था। दो वर्ष तक यही होता रहा, यहाँ तक कि आसिया के रहनेवाले सब यहूदियों और यूनानियों ने प्रभु का वचन सुन लिया।

परन्तु कुछ यहूदी जो झाड़ा-फूँकी करते थे, यह करने लगे कि जिनमें दुष्टात्मा हो उन पर प्रभु यीशु का नाम यह कहकर फूँकते, ''जिस यीशु का प्रचार पौलुस करता है, मैं तुम्हें उसी की शपथ देता हूँ।'' स्क्किवा नाम के एक यहूदी महायाजक के सात पुत्र थे जो ऐसा ही करते थे। परन्तु दुष्टात्मा ने उनको उत्तर दिया, ''यीशु को मैं जानती हूँ, और पौलुस को भी पहचानती हूँ। परन्तु तुम कौन हो?'' और उस मनुष्य ने जिसमें वह दुष्टात्मा थी, उन पर लपककर उन पर ऐसा उपद्रव किया कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से निकल भागे। यह बात इफिसुस के रहनेवाले सब यहूदी और यूनानी जान गए और उन सब पर भय छा गया और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई हुई। जिन्होंने विश्वास किया था, उनमें से बहुत से लोगों ने आकर अपने कामों को मान लिया। और जादू करनेवालों में से बहुत से लोगों ने अपनी-अपनी पोथियाँ इकट्ठी करके सबके सामने जला दीं, और जब उनका दाम जोड़ा गया तो पचास हज़ार चाँदी के सिक्कों के बराबर निकला। इस प्रकार प्रभु का वचन बलपूर्वक फैलता और प्रबल होता गया।

जब ये बातें हो चुकीं तो पौलुस ने आत्मा में ठाना कि मकिदुनिया और अखाया से होकर यरूशलेम को जाऊँ। इसलिए उसने तीमुथियुस और इरास्तुस को अपने आगे मकिदुनिया को भेज दिया और स्वयं

आसिया में रह गया। यह समय था जब उसने पहला कुरिन्थियों लिखा।

पौलुस की सेवकाई से इफिसुस के बहुत से लोग मूर्तिपूजा छोड़कर प्रभु पर विश्वास करने लगे। देमेत्रियुस नाम का एक सुनार अरतिमिस के चाँदी के मंदिर बनवाकर कारीगरों को बहुत काम दिलाया करता था। उसने लोगों को इकट्ठा करके कहा, ''हे मनुष्यो, तुम जानते हो कि इस काम में हमें कितना धन मिलता है। तुम देखते और सुनते हो कि केवल इफिसुस में ही नहीं बल्कि सारे आसिया में पौलुस ने यह कहकर लोगों को भरमाया है कि जो हाथ की कारीगरी है वे ईश्वर नहीं हैं। इससे अब इस बात का डर है कि हमारे इस धन्धे की प्रतिष्ठा जाती रहेगी और महान देवी अरितिमिस का मन्दिर तुच्छ समझा जाएगा और जिसे पूरा आसिया और जगत पूजता है उसका महत्व भी जाता रहेगा।''

यह सुनकर वे क्रोध से भर गए और चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे, ''इफिसियों की अरितिमिस महान है।'' और सारे नगर में बड़ा कोलाहल मच गया और लोगों ने गयुस और अरिस्तर्खुस को जो पौलुस के संगी थे, पकड़ लिया और एक साथ रंगशाला में दौड़ गए। जब पौलुस ने लोगों के पास भीतर जाना चाहा, तो चेलों ने उसे जाने न दिया। आसिया के हाकिमों में से भी उसके कई मित्रों ने उसके पास कहला भेजा और विनती की कि रंगशाला में जाकर जोखिम न उठाना। वहाँ बड़ी गड़बड़ी थी और बहुत से लोग तो यह भी नहीं जानते थे कि किसलिए इकट्ठे हुए हैं। तब उन्होंने सिकंदर को आगे बढ़ाया कि लोगों से बातें करे। परन्तु जब उन्हें पता चला कि वह यहूदी है तो सब लोग एक शब्द से लगभग दो घंटे तक चिल्लाते रहे, ''इफिसियों की अरतिमिस महान है।'' तब नगर के मंत्री ने लोगों को शांत करके सभा को विदा किया।

जब हुल्लड़ थम गया तो पौलुस ने चेलों को बुलावाकर समझाया और उनसे विदा लेकर मकिदुनिया की ओर चल दिया। उस सारे प्रदेश में से होकर और चेलों को बहुत उत्साहित कर वह यूनान में आया। वहाँ तीन महीने रहकर वह सीरिया को जाने वाला था, तब उसे यह मालूम चला कि यहूदी उसकी घात में लगे हैं, अतः उसने निश्चय किया कि

मकिदुनिया होकर लौट जाए। त्रोआस पहुँचकर सप्ताह के पहले दिन सब रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे हुए और पौलुस आधी रात तक उनसे बातें करता रहा। और यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद के झोंके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा और मर गया। परन्तु पौलुस उतरकर उससे लिपट गया और उसे गले लगाकर कहा, ''घबराओ नहीं, क्योंकि उसका प्राण उसी में है।'' और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और सुबह तक उनसे बातें करता रहा। वे लोग उस जवान को जीवित ले आए और बहुत शांति पाई।

वहाँ से पौलुस मिलेतुस में आया और इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों को बुलवाया। उनसे बातचीत में पौलुस ने अपने तीन वर्ष के इफिसुस में की गई सेवकाई का विवरण और वर्तमान हालात और भविष्य में इफिसुस के प्राचीनों के उत्तरदायित्वों की चर्चा की। अंत में पौलुस ने उनसे कहा, ''अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूँ, जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है और सब पवित्र किए गए लोगों में साझी करके मीरास दे सकता है।'' जहाज़ पर चढ़ने से पहले उसने सबके साथ घुटने टेके और प्रार्थना की। तब वे सब बहुत रोए और पौलुस के गले लिपटकर उसे चूमने लगे। वे विशेषकर इस बात से शोकित थे कि पौलुस ने उनसे कहा कि तुम मेरा मुँह फिर न देखोगे।

पौलुस और उसके साथी मिलेतुस से कोस नाम के टापू पर आए। वहाँ रात बिताकर वे आगे चल दिए और कई स्थानों से होते हुए अंततः यरूशलेम पहुँच गए। इस प्रकार पौलुस की तीसरी मिश्नरी यात्रा समाप्त हो गई।

प्रश्न :

1. अक्विला और प्रिस्किल्ला ने किस विद्वान को परमेश्वर का मार्ग ठीक-ठीक बताया?
2. नए नियम के दिए जाने से पहले परमेश्वर कैसे कार्य करते थे?
3. स्क्किवा के पुत्रों के साथ क्या घटना घटी?
4. किन लोगों ने अपनी पोथियाँ जला दीं और क्यों? उनकी कीमत क्या थी?

पाठ–27

पौलुस कैद में

(प्रेरितों अध्याय 22–26)

''इस कारण मैं उन दुःखों को भी उठाता हूँ, पर लजाता नहीं, क्योंकि मैं उसे जिस पर मैंने विश्वास किया है, जानता हूँ, और मुझे निश्चय है कि वह मेरी धरोहर की उस दिन तक रखवाली कर सकता है।'' (2 तीमु. 1:12)

''जिसके लिए मैं प्रचारक और प्रेरित और उपदेशक भी ठहरा।'' (2 तीमु. 1:11)

पौलुस के यरूशलेम पहुँचने पर भाई लोग बड़े आनंद के साथ उससे मिले। दूसरे दिन वे याकूब के यहाँ गए जहाँ सब प्राचीन इकट्ठे थे। तब उसने उन्हें वह सब बताया जो परमेश्वर ने उसकी सेवा के द्वारा अन्यजातियों में किए थे। उन्होंने यह सुनकर परमेश्वर की महिमा की। फिर उससे कहा, ''हे भाई, तू देखता है कि यहूदियों में से कई हज़ारों ने विश्वास किया है, और सब व्यवस्था के लिए धुन लगाए हुए हैं। उनको तेरे विषय में सिखाया गया है कि तू उनको सिखाता है कि न अपने बच्चों का खतना कराओ और न रीतियों पर चलो। इसलिए जो हम तुझसे कहते हैं, वह कर। हमारे यहाँ चार मनुष्य हैं, जिन्होंने मन्नत मानी है। उन्हें लेकर उनके साथ अपने आपको शुद्ध कर और उनके लिए खर्चा दे कि वे सिर मुड़ाएँ। तब सब लोग जान लेंगे कि जो बातें तेरे विषय में उन्हें बताई गईं, उनमें कुछ सच्चाई नहीं है, परन्तु तू आप भी व्यवस्था को मानकर उसके अनुसार चलता है।'' तब पौलुस उन मनुष्यों को लेकर और दूसरे दिन उनके साथ शुद्ध होकर मंदिर में गया, और वहाँ बता दिया कि शुद्ध होने के दिन कब पूरे होंगे। जब वे सात दिन पूरे होने पर थे, तो आसिया के यहूदियों ने पौलुस को मंदिर में देखकर लोगों को उकसाया, और यों चिल्लाकर उसको पकड़ लिया, ''हे इस्राएलियों, सहायता करो, यह वही मनुष्य है, जो लोगों के और

व्यवस्था के और इस स्थान के विरोध में हर जगह सब लोगों को सिखाता है। यहाँ तक कि यूनानियों को भी मंदिर में लाकर इस पवित्र स्थान को अपवित्र किया है।'' तब सारे नगर में कोलाहल मच गया और लोग पौलुस को पकड़कर मंदिर के बाहर घसीट लाए। जब वे उसे मार डालना चाहते थे, तो पलटन के सरदार ने आकर उसे बचाया और उसे दो जंजीरों से बंधवा दिया और उसे गढ़ में ले जाने की आज्ञा दी। भीड़ के दबाव के कारण उसे उठाकर ले जाने लगे। पौलुस ने पलटन के सरदार से आज्ञा ली और सीढ़ी पर खड़े होकर लोगों को हाथ से संकेत किया। जब वे चुप हो गए तो पौलुस ने इब्रानी भाषा में उनको अपने विषय में सब कुछ बताया और यह भी कि जब वह दमिश्क को जा रहा था तब किस प्रकार उसने दर्शन देखा और उसका मन परिवर्तन हुआ। उसकी बातें सुनकर वे ऊँचे शब्द से चिल्लाए, ''ऐसे मनुष्य का अंत करो, उसका जीवित रहना उचित नहीं।'' तब पलटन के सरदार ने कहा, ''इसे गढ़ में ले जाओ और कोड़े मारकर जाँचो, कि मैं जानूँ कि लोग किस कारण उसके विरोध में ऐसा चिल्ला रहे हैं।'' तब उन्होंने उसे बाँधा। तब पौलुस ने सूबेदार से कहा, ''क्या यह उचित है कि तुम एक रोमी मनुष्य को बिना दोषी ठहराए हुए ही कोड़े मारो?'' यह सुनकर सूबेदार ने पलटन के सरदार से कहा, ''तू यह क्या करता है? यह तो रोमी मनुष्य है।'' पलटन के सरदार ने कहा, ''मैंने रोमी होने का पद बहुत रुपए देकर पाया है।'' पौलुस ने कहा, ''मैं तो जन्म से रोमी हूँ।'' तब जो लोग उसे जाँचने पर थे, वे तुरंत उसके पास से हट गए और पलटन का सरदार भी डर गया।

दूसरे दिन उसने ठीक-ठीक जानने की इच्छा से कि यहूदी उस पर क्यों दोष लगाते हैं, उसके बंधन खोल दिए और प्रधान याजकों और सारी महासभा को इकट्ठा होने की आज्ञा दी और पौलुस को नीचे ले जाकर उनके सामने खड़ा कर दिया।

पौलुस ने महासभा में कहा, ''हे भाइयो, मैं ने आज तक परमेश्वर के लिए बिल्कुल सच्चे विवेक से जीवन बिताया है।'' इस बात पर

हनन्याह महायाजक ने उनको जो उसके पास खड़े थे, उसको थप्पड़ मारने की आज्ञा दी। तब पौलुस ने उससे कहा, ''हे चूना फिरी हुई भीत, परमेश्वर तुझे मारेगा। तू व्यवस्था के अनुसार मेरा न्याय करने बैठा है और व्यवस्था के विरुद्ध ही मुझे मारने की आज्ञा देता है?'' पास खड़े लोगों ने उससे कहा, ''क्या तू परमेश्वर के महायाजक को बुरा-भला कहता है?'' पौलुस ने उत्तर दिया, ''हे भाइयो, मैं नहीं जानता था कि यह महायाजक है, क्योंकि लिखा है कि 'अपने लोगों के प्रधान को बुरा न कह'।''

तब पौलुस ने यह जानकर कि एक दल सदूकियों का है और दूसरा फरीसियों का है, सभा में पुकारकर कहा, ''हे भाइयो, मैं फरीसी और फरीसियों के वंश का हूँ। मरे हुओं के पुनरुत्थान के विषय में मेरा मुकद्मा हो रहा है।'' यह सुनकर फरीसी और सदूकी आपस में लड़ने लगे और सभा में फूट पड़ गई। जब झगड़ा बहुत बढ़ गया तो पलटन के सरदार ने इस डर से कि वे पौलुस के टुकड़े-टुकड़े न कर डालें, पलटन को आज्ञा दी कि पौलुस को उनके बीच से निकालकर गढ़ में ले जाएँ। उसी रात प्रभु ने उसके पास खड़े होकर कहा, ''हे पौलुस, ढ़ाढ़स बाँध, क्योंकि जैसी तू ने यरूशलेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम मे भी गवाही देनी होगी।''

अगले दिन 40 यहूदियों ने षड्यन्त्र रचा और शपथ खाई कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें तब तक हम कुछ नहीं खाएँगे। पौलुस के भांजे ने सुना कि यहूदी उसकी घात में हैं, तो गढ़ में जाकर पौलुस को संदेश दिया। पौलुस ने उसे पलटन के सरदार के पास भेज दिया। उसने पलटन के सरदार को यहूदियों के षड्यंत्र के बारे में सब बता दिया। तब पलटन के सरदार ने दो सूबेदारों को बुलाकर कहा, ''दो सौ सैनिक, सत्तर सवार और दो सौ भालैत पहर, रात बीते कैसरिया को जाने के लिए तैयार कर रखो। और पौलुस की सवारी के लिए घोड़े तैयार रखो, कि उसे फेलिक्स हाकिम के पास कुशल से पहुँचा दें।''

आज्ञानुसार सैनिक रातोंरात पौलुस को लेकर अन्तिपत्रिस में आए,

फिर कैसरिया पहुँचकर हाकिम को चिट्ठी दी और पौलुस को उसके सामने खड़ा किया। चिट्ठी पढ़कर उसने कहा, ''जब तेरे मुद्दई आएँगे, तो मैं तेरा मुकद्दमा करूँगा।'' तब उसने उसे हेरोदेस के किले में रखने की आज्ञा दी। पाँच दिन के बाद हनन्याह महायाजक कई पुरनियों और तिरतुल्लुस नाम के वकील को साथ लेकर आया। जब पौलुस बुलाया गया तो तिरतुल्लुस ने उस पर दोष लगाया। हाकिम ने पौलुस को भी उन बातों का उत्तर देने की अनुमति दी। फेलिक्स ने, जो इस पन्थ की बातें ठीक-ठीक जानता था, उन्हें यह कहकर टाल दिया, ''जब पलटन का सरदार लूसियास आएगा, तो तुम्हारी बात का निर्णय करूँगा।'' फिर उसने सूबेदार को आज्ञा दी कि पौलुस को कुछ छूट में रखकर रखवाली करना और उसके मित्रों में से किसी को भी उसकी सेवा करने से न रोकना।

कुछ दिनों के बाद फेलिक्स अपनी पत्नी द्रुसिल्ला को जो यहूदिनी थी, साथ लेकर आया और पौलुस को बुलवाकर उस विश्वास के विषय में जो मसीह यीशु पर है, उसने सुना। जब वह धर्म और संयम और आने वाले न्याय की चर्चा कर रहा था, तो फेलिक्स ने भयभीत होकर उत्तर दिया, ''अभी तो जा, अवसर पाकर मैं तुझे फिर बुलाऊँगा।'' परन्तु जब दो वर्ष बीत गए तो फेलिक्स की जगह पर फेस्तुस आ गया और फेलिक्स यहूदियों को खुश करने के लिए पौलुस को बंदी ही छोड़ गया।

फेस्तुस उस प्रान्त में पहुँचने के तीन दिन बाद कैसरिया से यरूशलेम को गया। तब प्रधान याजकों और यहूदियों के प्रमुख लोगों ने उसके सामने पौलुस की नालिश की और उससे विनती की कि उसे यरूशलेम में बुलवाए क्योंकि वे उसे रास्ते में ही मार डालने की घात में लगे थे। फेस्तुस ने उन्हें उत्तर दिया, ''पौलुस कैसरिया में पहरे में है, मैं आप जल्द ही वहाँ जाऊँगा। तुममें जो अधिकार रखते हैं, वे साथ चलें और यदि उसने कुछ गलत काम किया है तो उस पर दोष लगाएँ।'' वहाँ आठ दिन रहकर वह कैसरिया चला गया और दूसरे दिन न्याय-आसन पर बैठकर पौलुस को लाने की आज्ञा दी। जब वह आया, तो जो यहूदी यरूशलेम से आए थे, उन्होंने उस पर गम्भीर आरोप लगाए जिनका

प्रमाण वे नहीं दे सकते थे। पौलुस ने कहा, ''मैं कैसर के न्याय-आसन के सामने खड़ा हूँ। यदि मैं अपराधी हूँ और मार डाले जाने योग्य कोई काम किया है तो मैं मरने से नहीं मुकरता। परन्तु जिन बातों का ये मुझ पर दोष लगाते हैं, यदि उनमें से कोई भी बात सच न ठहरे तो कोई मुझे उनके हाथ में नहीं सौंप सकता। मैं कैसर की दोहाई देता हूँ।'' रोमी नागरिक होने के कारण पौलुस यह माँग रख सकता था। तब फेस्तुस ने मंत्रियों की सभा के साथ बातें करके उत्तर दिया, ''तू ने कैसर की दोहाई दी है, तू कैसर के ही पास जाएगा।''

कुछ दिन के बाद राजा अग्रिप्पा और उसकी बहिन बिरनीके, फेस्तुस से मिलने कैसरिया में आए। फेस्तुस ने पौलुस के विषय में राजा को बताया। दूसरे दिन जब अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूमधाम से आए और पलटन के सरदारों और नगर के प्रमुख लोगों के साथ दरबार में पहुँचे। तब फेस्तुस ने आज्ञा दी कि वे पौलुस को ले आएँ। अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, ''तुझे अपने विषय में बोलने की आज्ञा है।'' पौलुस की बातें सुनकर फेस्तुस ने उससे कहा, ''हे पौलुस, तू पागल है। बहुत विद्या ने तुझे पागल कर दिया है।'' पौलुस ने उत्तर दिया, ''हे महामहिम फेस्तुस, मैं पागल नहीं परन्तु सच्चाई और बुद्धि की बातें कहता हूँ। राजा भी, जिसके सामने मैं निडर होकर बोल रहा हूँ, ये बातें जानता है। हे राजा अग्रिप्पा, मैं जानता हूँ कि तू भविष्यद्वक्ताओं का विश्वास करता है।'' तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, ''तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है?'' पौलुस ने कहा, ''परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि केवल तू ही नहीं परन्तु जितने लोग आज मेरी सुनते हैं, इन बंधनों को छोड़ वे मेरे समान हो जाएँ।'' तब राजा और हाकिम और बिरनीके उठ खड़े हुए और आपस में कहने लगे, ''यह मनुष्य ऐसा तो कुछ नहीं करता जो मृत्युदण्ड या बंदीगृह में डाले जाने के योग्य हो।'' अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, ''यदि यह मनुष्य कैसर की दोहाई न देता, तो छूट सकता था।'' फेस्तुस ने पौलुस को यूलियुस नामक औगुस्तुस की पलटन के एक सूबेदार के हाथ सौंप दिया। यह निश्चित हो गया था कि पौलुस और कुछ अन्य बन्दी जहाज़ द्वारा इटली जाएँगे। पौलुस के साथ अरिस्तर्खुस

और वैद्य लूका भी जहाज़ यात्रा में गए।

प्रश्न :

1. यरूशलेम पहुँचने पर भाई लोग पौलुस और साथियों से कैसे मिले?
2. पौलुस को मार डालने की योजना का कैसे पता चला?
3. पलटन के सरदार ने कैसे पौलुस की रक्षा की?
4. फेलिक्स और द्रुसिल्ला की पौलुस से मुलाकात का वर्णन करें।
5. पौलुस के विषय में राजा अग्रिप्पा का क्या निर्णय था?

पाठ-28

पौलुस की समुद्री यात्रा

(प्रेरितों अध्याय 27-28)

''परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसे प्रिय जानूँ, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को और उस सेवा को पूरी करूँ जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिए प्रभु यीशु से पाई है।'' (प्रेरितों 20:24)

आसिया के किनारे की जगहों में जाने वाले जहाज़ पर पौलुस और उसके साथी सवार हो गए। दूसरे ही दिन सैदा में लंगर डाला गया। पलटन के सूबेदार यूलियुस ने पौलुस पर कृपा करके उसे मित्रों के यहाँ जाने दिया कि उसका सत्कार किया जाए। वहाँ से जहाज़ खोलकर लूसिया के मूरा में उतरे। वहाँ सूबेदार को सिकन्दरिया का एक जहाज़ इटली जाता हुआ मिला और उसने उन्हें उस जहाज़ पर चढ़ा दिया। जब बहुत दिन बीत गए और जलयात्रा में जोखिम था, तब पौलुस ने उन्हें यह कहकर समझाया, ''हे सज्जनों मुझे ऐसा लगता है कि इस यात्रा में माल और जहाज़ और प्राणों की भी हानि होनेवाली है।'' परन्तु सूबेदार ने जहाज़ के स्वामी और कप्तान की बात मानी जो क्रेते के एक बंदरगाह फीनिक्स पर पहुँचना चाहते थे और जाड़े का समय वहाँ बिताना चाहते थे। अत: उन्होंने अपनी यात्रा जारी रखी परन्तु थोड़ी देर में जमीन की ओर से ''यूरकूलीन'' नाम की एक बड़ी आँधी उठी और जहाज़ पर लगी। जब आँधी से बहुत हिचकोले और धक्के खाए, तो दूसरे दिन वे जहाज़ का माल फेंकने लगे। और तीसरे दिन उन्होंने जहाज़ का साज़-सामान भी फेंक दिया। जब बहुत दिनों तक न सूर्य, न तारे दिखाई दिए और बड़ी आँधी चलती रही, तो अन्त में उनके बचने की आशा जाती रही। जब वे बहुत दिन तक भूखे रह चुके तो पौलुस ने उनके बीच में खड़े होकर कहा, ''हे लोगो, चाहिए था कि तुम मेरी बात मानकर क्रेते में ही रह जाते और आज यह विपत्ति हम पर न आती

और न हम यह हानि उठाते। परन्तु अब मैं तुम्हें समझाता हूँ कि ढ़ाढ़स बाँधो, क्योंकि तुममें से किसी के प्राण की हानि न होगी पर केवल जहाज़ की। क्योंकि परमेश्वर जिसका मैं हूँ और जिसकी सेवा करता हूँ, उसके स्वर्गदूत ने रात को मेरे पास आकर कहा कि 'हे पौलुस, मत डर। तुझे कैसर के सामने खड़ा होना अवश्य है। देख, परमेश्वर ने सबको जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है।' इसलिए हे सज्जनो, ढ़ाढ़स बाँधो, परन्तु हमें किसी टापू पर जा टिकना होगा।'' पौलुस ने सबको भोजन करने के लिए यह कहकर समझाया, ''आज चौदह दिन हुए कि तुम आस देखते-देखते भूखे रहे। इसलिए अब कुछ खा लो क्योंकि तुममें से किसी के सिर का एक बाल भी न गिरेगा।'' यह कहकर उसने रोटी ली और सबके सामने परमेश्वर का धन्यवाद किया और तोड़कर खाने लगा। तब वे सब भी ढ़ाढ़स बाँधकर भोजन करने लगे। सब मिलाकर जहाज़ में दो सौ छिहत्तर जन थे। जब वे भोजन करके तृप्त हुए तो गेहूँ को समुद्र में फेंककर जहाज़ हल्का करने लगे। परन्तु जब दिन निकला तो उनका जहाज़ टूट गया। तब सैनिकों का यह विचार हुआ कि बन्दियों को मार डालें। परन्तु पौलुस को बचाने के लिए सूबेदार ने उन्हें इस विचार से रोका। तब लोग तैरकर और पटरों पर और जहाज़ के अन्य वस्तुओं के सहारे सब लोग भूमि पर पहुँच गए। तब उन्हें पता चला कि यह द्वीप माल्टा कहलाता है।

माल्टा के निवासियों ने उन लोगों पर बड़ी कृपा की। ठण्ड बहुत थी अत: उन्होंने आग सुलगाकर सबको ठहराया। जब पौलुस ने लकड़ियों का गट्ठा बटोरकर आग पर रखा, तो एक साँप आँच पाकर निकला और उसके हाथ से लिपट गया। यह देखकर वहाँ के निवासियों ने आपस में कहा, ''सचमुच यह मनुष्य हत्यारा है, यद्यपि समुद्र से बच गया तौभी न्याय ने जीवित रहने न दिया।'' तब पौलुस ने साँप को आग में झटक दिया और उसे कुछ हानि न पहुँची। परन्तु वे इन्तज़ार कर रहे थे कि वह सूज जाएगा या अचानक मर जाएगा। बहुत देर इन्तज़ार करने पर भी जब पौलुस को कुछ नहीं हुआ, तब उन्होंने अपना विचार बदल कर कहा, ''यह तो कोई देवता है।'' उस जगह के आसपास उस टापू

के प्रधान पुबलियुस की भूमि थी। उसने उन्हें अपने घर ले जाकर तीन दिन मित्रभाव से उनकी पहुनाई की। पुबलियुस का पिता बहुत रोगी पड़ा था। पौलुस ने उसके पास जाकर प्रार्थना की और उस पर हाथ रखकर उसे चंगा किया। तब उस द्वीप के बाकी बीमार लोग भी आए और चंगे किए गए। उन लोगों ने उनका बड़ा आदर किया और वहाँ से जब चलने लगे तो आवश्यक सामग्री को जहाज़ पर रख दिया। तीन महीने के बाद वे सिकंदरिया के एक जहाज़ पर चल निकले जो जाड़े में उस द्वीप पर ठहरा था। जब पुतियुली नाम के स्थान पर पहुँचे तो वहाँ उन्हें भाई लोग मिले और उनके कहने पर वहाँ सात दिन तक रहे। वहाँ से वे रोम को चले और उनका समाचार सुनकर भाई लोग उनसे मिलने अप्पियुस के चौक और तीन-सराए नाम तक आए, जिन्हें देखकर पौलुस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया और ढ़ाढ़स बाँधा।

प्रश्न :

1. जहाज़ में पौलुस के साथ रोम जाने के लिए कौन-कौन गए?
2. कैदी लोग किसके हवाले किए गए थे?
3. सबसे पहले वे किस स्थान पर रुके?
4. पौलुस ने यात्रियों से ढ़ाढ़स के क्या वचन कहे?
5. माल्टा द्वीप पर की घटनाओं का वर्णन करो।

पाठ-29

पौलुस - रोम में

(प्रेरितों 28:16-30)

''मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है। मैंने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं, वरन् उन सबको भी जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।'' (2 तीमु. 4:7-8)

''और प्रभु मुझे हर एक बुरे काम से छुड़ाएगा, और अपने स्वर्गीय राज्य में सुरक्षित पहुँचाएगा। उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन'' (2 तीमु 4:18)

अंततः परमेश्वर ने पौलुस को रोम पहुँचा दिया। रोम पहुँचकर पौलुस को एक सैनिक के साथ जो उसकी रखवाली करता था, अकेले रहने की आज्ञा मिल गई। तीन दिन के बाद उसने यहूदियों के प्रमुख लोगों को बुलाया और जब वे इकट्ठे हुए तो उसने उनसे कहा, ''हे भाइयो, मैं ने अपने लोगों के या बापदादों के व्यवहारों के विरोध में कुछ भी नहीं किया तौभी बंदी बनाकर यरूशलेम से रोमियों के हाथ सौंपा गया। उन्होंने मुझे जाँचा और कोई दोष न पाकर छोड़ देना चाहा। परन्तु जब यहूदी इसके विरोध में बोलने लगे तब मुझे कैसर की दोहाई देनी पड़ी। उन्होंने उससे कहा, ''हमने तेरे विषय में यहूदियों से कोई चिट्ठी नहीं पाई और ना ही भाइयों ने तेरे विषय कुछ बुरा कहा। परन्तु तेरा विचार क्या है? वही हम तुझ से सुनना चाहते हैं।'' तब उन्होंने एक दिन ठहराया और बहुत से लोग उसके यहाँ इकट्ठे हुए और वह व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों से यीशु के विषय में समझा-समझाकर भोर से सांझ तक वर्णन करता रहा। तब कुछ ने विश्वास किया और कुछ लोगों ने विश्वास नहीं किया। तब उसने यशायाह 6:9-10 में लिखे वचन कहे, ''पवित्र आमा ने यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा तुम्हारे बापदादों

से ठीक ही कहा, 'जाकर इन लोगों से कह, कि सुनते तो रहोगे परन्तु न समझोगे, और देखते तो रहोगे परन्तु न बूझोगे, क्योंकि इन लोगों का मन मोटा और उनके कान भारी हो गए हैं। उन्होंने अपनी आँखें बंद की हैं ऐसा न हो कि वे कभी आँखों से देखें और कानों से सुनें और मन से समझें और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूँ।' अतः तुम जानो कि परमेश्वर के इस उद्धार की कथा अन्यजातियों के पास भेजी गई है और वे सुनेंगे।'' उसकी ये बातें सुनकर यहूदी आपस में विवाद करने लगे और वहाँ से चले गए। पौलुस पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा और जो उसके पास आते थे, उन सबसे मिलता रहा और बिना रोक-टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा। यही वह समय था जब पौलुस ने इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन की पत्रियाँ लिखीं। यह माना जाता है कि रोम में दो वर्ष बिताने के बाद उसका मामला नीरो के सामने लाया गया और पौलुस को छोड़ दिया गया। उसके पश्चात् वह अपनी चौथी मिश्नरी यात्रा पर निकल गया और संभवतः कुलुस्से, इफिसुस, मकिदुनिया, क्रेते, कुरिन्थ, मिलेतुस, नीकुपुलिस, स्पेन और त्रोआस आदि शहरों में गया। इसमें लगभग चार वर्ष लगे और यह समय था जब पौलुस ने तीमुथियुस की पत्रियाँ और तीतुस की पत्री लिखी।

ईस्वी सन् 66 में नीकुपुलिस या त्रोआस में पौलुस को आखिरी बार बंदी बनाकर रोम लाया गया। इस बार आदरपूर्वक नहीं परन्तु जंजीरों से बाँधा गया और कठोर कैद में रखा गया। उसके अधिकतर मित्रों ने उसे छोड़ दिया और वह जान गया था कि उसका अन्त निकट है। नीरो के न्याय-आसन के सामने उसकी जाँच हुई और उसे मृत्यु-दंड दिया गया। रोमी नागरिक होने के कारण उसे क्रूस पर नहीं चढ़ाया गया परन्तु उसका सिर काट दिया गया। कहा जाता है कि ईस्वी सन् 67 में पौलुस मार डाला गया।

प्रश्न :

1. घर में कैद होने पर भी पौलुस ने कैसे सुसमाचार सुनाया?

2. सुसमाचार के प्रति रोम के यहूदियों की क्या प्रतिक्रिया थी?
3. उस समय पौलुस ने कौन सी पत्रियाँ लिखीं?
4. अपनी चौथी मिशनरी यात्रा में पौलुस किन स्थानों पर गया?
5. उसके पहले और दूसरे कैद में क्या फर्क था?
6. वह कब शहीद हुआ?

पाठ-30

नए नियम की पत्रियाँ

मुख्य पद :

''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि तुम जो पाप के दास थे, अब मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिसके साँचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।'' (रोमियों 6:17-18)

परिचय :

नए नियम में 21 पत्रियाँ हैं जिनमें 14 पत्रियाँ पौलुस के द्वारा लिखी गई हैं (यदि इब्रानियों की पत्री भी जोड़ी जाए)।

पौलुस की पत्रियाँ :

	पत्री का नाम	**वर्ष (लगभग) ईस्वी सन्**
1.	गलातियों	49
2.	1-2 थिस्सलुनीकियों	51
3.	1-2 कुरिन्थियों	54-55
4.	रोमियों	57
5.	इफिसियों	60-62
6.	कुलुस्सियों	60-62
7.	फिलेमोन	60-62
8.	फिलिप्पियों	60-62
9.	1 तीमुथियुस	64-65
10.	तीतुस	64-65
11.	इब्रानियों	65
12.	2 तीमुथियुस	67

अन्य सात पत्रियाँ

	पत्री का नाम	वर्ष (लगभग) ईस्वी सन्
1.	याकूब	50
2.	1 पतरस	63-64
3.	2 पतरस	66
4.	1 यूहन्ना	90
5.	2 यूहन्ना	90
6.	3 यूहन्ना	90
7.	यहूदा	68

पौलुस की पत्रियों में एक विशिष्टता है। पुराने नियम में क्रूस, पुनरुत्थान, और प्रभु यीशु के दोबारा आगमन की भविष्यवाणियाँ पाई जाती हैं। इसके इतिहास में इस्राएल राष्ट्र और मसीहा के राज्य की भविष्यद्वाणी को विशिष्ट रूप से बताया गया है। तथापि, संसार में से कलीसिया को बुलाए जाने और अलग किए जाने के विषय में परमेश्वर के उद्देश्य को पुराना नियम स्पष्ट नहीं करता है। इस विषय को स्वयं प्रभु यीशु मसीह ने स्पष्ट किया।

अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने के पिछली रात को उन्होंने उसके दो नियम दिए, जो हैं-बपतिस्मा और प्रभु भोज। प्रभु ने कलीसिया को अपना शरीर कहा और स्वयं के साथ उसके संबंध के विषय में सिखाया। कलीसिया के क्रम, विशेषाधिकार, स्थान और उत्तरदायित्वों का पूरा विवरण पत्रियों में दिया गया है। पौलुस की पत्रियों में इन बातों की शिक्षा दी गई है जिनसे कलीसिया की शिक्षाओं का विकास हुआ। सात कलीसियाओं के नाम (जो रोम, कुरिन्थ, गलातिया, इफिसुस, फिलिप्पी, कुलुस्से और थिस्सलुनीके में हैं) लिखे अपनी पत्रियों में पौलुस ने मसीह के शरीर कलीसिया पर ''ये बात प्रकाशित की, कि उस भेद का प्रबंध क्या है, जो सबके सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था'' (इफिसियों 3:9)।

प्रभु यीशु की शिक्षाओं में पाए जाने वाले अनुग्रह की शिक्षाओं का

प्रकटीकरण और स्पष्टीकरण भी पौलुस के द्वारा किया गया। एक विश्वासी की धार्मिकता, पवित्रीकरण और महिमा के विषय का पौलुस विस्तृत वर्णन करते हैं।

पौलुस की अधिकांश पत्रियाँ ईस्वी सन् 49 और 69 के बीच लिखी गई थीं। यह माना जाता है कि गलातिया भी कलीसिया के नाम लिखी पत्री पौलुस की पहली पत्री थी और 2 तीमुथियुस उसकी सबसे प्रिय पत्री थी।

प्रश्न :

1. नए नियम में कुल कितनी पत्रियाँ हैं?
2. पौलुस ने कितनी पत्रियाँ लिखीं?
3. पौलुस की पत्रियों में किन शिक्षाओं का स्पष्टीकरण दिया गया है?
4. पौलुस की अधिकांश पत्रियाँ कब लिखी गई थीं?

पाठ–31

गलातियों, 1, 2 थिस्सलुनीकियों – एक अवलोकन

मुख्य पद : मसीह ने स्वतंत्रता के लिए हमें स्वतंत्र किया है; अतः इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो। (गलातियों 5:1)

मसीही पुस्तकालय में गलातियों की पत्री एक महाधिकार पत्र की तरह है। गलातिया वालों ने अपने मसीही जीवन को विश्वास से आरंभ किया परन्तु भले कामों पर आधारित हो गए। गलातियों की पत्री में कठोर शब्दों में **कार्य** के सुसमाचार का विरोध और **विश्वास** के सुसमाचार का पक्ष बताया गया है।

गलातिया के विश्वासी संभवतः दक्षिणी गलातिया के निवासी थे जो पौलुस की पहली मिश्नरी यात्रा के दौरान प्रभु यीशु पर विश्वास करके मसीही बने थे। लगभग ईस्वी सन् 49 में अन्ताकिया से पौलुस ने उन्हें यह पत्र लिखा था। पहले दो अध्याय व्यक्तिगत हैं जिसमें पौलुस अपनी प्रेरिताई और उस सुसामचार की वैधता की प्रतिरक्षा करते हैं जो वह सुनाते हैं। अध्याय 3 से 4 सैद्धांतिक हैं जो विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के विषय में है। अंतिम दो अध्याय व्यावहारिक हैं जहाँ पौलुस गलातिया के विश्वासियों को प्रोत्साहित करते हैं कि अपनी मसीही स्वतंत्रता का जीवन प्रेम और सेवाभाव की आत्मा के साथ जीएँ।

कलीसिया की स्थापना के कुछ समय बाद कुछ यहूदी मसीही उनमें मिल गए और उन्हें शिक्षा दी कि परमेश्वर की संपूर्ण आशीष प्राप्त करने के लिए उन्हें यहूदी रीति-रिवाज़ों का पालन करना होगा। अन्यजातियों के मंदिरों और यहूदी आराधनालय में उनका कोई स्थान नहीं था अतः अपनी पहचान बनाने के लिए व्यवस्था का पालन करके यहूदियों में मिल जाना सही लगा। विश्वास के द्वारा मसीह से जुड़ जाने से उनका

ध्यान भटक कर यहूदी राष्ट्र के साथ एक हो जाने और व्यवस्था का पालन करने में लग गया। उनके शिक्षकों के विषय में पौलुस कहते हैं ''वह शापित हो'' (पद 1:9) जो यह शिक्षा देते हैं कि यीशु मसीह काफी नहीं हैं।

अनुग्रह के सुसमाचार का समर्थन : (1-2)

पौलुस अपने प्रेरिताई की पुष्टि करता है - ''पौलुस की ओर से-जो यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा प्रेरित है।'' और फिर सुसमाचार सुनाता है-''परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिलती रहे। उसी ने अपने आपको हमारे पापों के लिए दे दिया, ताकि हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए।'' (1-5)।

विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के अपने सच्चे सुसमाचार के लिए पौलुस तर्क पेश करता है (6-10)। यह बताने के द्वारा कि उसे यह संदेश मनुष्यों की ओर से नहीं परंतु सीधे परमेश्वर से प्राप्त हुआ है। (1:11-24)। मसीही स्वतंत्रता की अपनी शिक्षाओं को जब वह प्रेरितों के सामने रखता है तब वे उसके संदेश की वैधता और अधिकार को स्वीकार कर लेते हैं (2:1-10)। व्यवस्था से स्वतंत्रता के विषय में वह पतरस को भी सही शिक्षा देते हैं। (2:11-21)।

अनुग्रह के सुसमाचार की व्याख्या (3-4) :

इस हिस्से में पौलुस विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरने के पक्ष में तर्कसंगत वक्तव्य देते हैं :

* गलातियों ने विश्वास के साथ आरंभ किया था और मसीह में उनकी उन्नति विश्वास के द्वारा ही जारी रहनी चाहिए (3:1-5)।
* विश्वास के कारण ही अब्राहम धर्मी ठहराया गया था, और वही सिद्धान्त आज भी लागू होता है (3:6-9)
* व्यवस्था के श्राप से मसीह ने उन सबको बचाया जो उस पर विश्वास करते हैं (3:10-14)

* अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा व्यवस्था के कारण व्यर्थ नहीं ठहरती। (3:15-18)।
* मनुष्यों को उद्धार देने के लिए नहीं बल्कि विश्वास की तरफ प्रेरित करने के लिए व्यवस्था दी गई थी। (3:19-22)।
* मसीह में विश्वासी लोग परमेश्वर के लेपालक पुत्र हैं और आगे को व्यवस्था के अधीन नहीं हैं। (3:23-4:7)।
* गलातिया के विश्वासी अपनी अस्थिरता को पहचानें और मसीह में अपनी वास्तविक स्वतंत्रता को फिर से प्राप्त करें। (4:8-20)।
* मूसा को दी गई व्यवस्था से अब्राहम को दिए गए वायदे की उच्चता का प्रतीकात्मक वर्णन अब्राहम के दो पुत्रों के द्वारा दिया गया है। (4:21-31)।

अनुग्रह के सुसमाचार को लागू करना (5-6) :

झूठे शिक्षक गलातिया के विश्वासियों को व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के झूठे सुसमाचार की दासता में रखना चाहते थे। पौलुस उन्हें चेतावनी देते हैं कि व्यवस्था और अनुग्रह दो विरोधी सिद्धान्त हैं। (5:1-12)। एक मसीही न केवल व्यवस्था की दासता से बल्कि पाप की दासता से भी छुड़ाया गया है जो हमारे अंदर वास करने वाले पवित्र आत्मा की सामर्थ से हुआ। पौलुस कहते हैं : ''हे भाइयो, तुम स्वतंत्र होने के लिए बुलाए गए हो, परन्तु ऐसा न हो कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिए अवसर बने, वरन् प्रेम से एक दूसरे के दास बनो।'' (5:13)।

अंत में पौलुस कहते हैं : ''हे भाइयो, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे। आमीन।''

मसीह ने हमें स्वतंत्र किया है - हम स्वतंत्र जीवन जीएँ।

A. 1. थिस्सलुनीकियों :

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को जो दो पत्र लिखे वे एक अभिभावक

के प्रेम और सलाह से भरपूर हैं। उनके साथ बिताए हुए समय की अच्छी यादें पौलुस के साथ थीं। सताव आने के बावजूद उनका विश्वास, प्रेम, आशा और लगन अनुकरणीय थे आत्मिक पिता के रूप में पौलुस की मेहनत का प्रतिफल प्राप्त हुआ। पत्र के प्रत्येक वाक्य में उनके प्रति उसका प्रेम प्रकट है।

यहूदी आराधनालय के कुछ यहूदी पौलुस के प्रभाव के कारण ईर्ष्या से भर गए। अत: उन्होंने भीड़ को उसके विरुद्ध उभारा जिन्होंने पौलुस को शहर से निकाल दिया और नए विश्वासी पीछे छूट गए। वहाँ से पौलुस बिरीया और फिर अथेने को गया। अथेने पहुँचकर वह सीलास और तीमुथियुस से मिला और उसने तीमुथियुस को थिस्सलुनीके भेजा। तब फिर पौलुस कुरिन्थ को गया और बेसब्री से तीमुथियुस के संदेश का इंतज़ार किया। अंतत: तीमुथियुस उनकी खबर के साथ पहुँचा। अत: ईस्वी सन् 51 के आसपास पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के लिए अपनी पहली पत्री लिखी।

मुख्य विषय वस्तु :

पौलुस ने अपनी पत्री में बहुत से विषयों की चर्चा की, जिनमें प्रभु यीशु के दोबारा आने का विषय मुख्य है। प्रत्येक अध्याय का अंत उस महिमामय घटना के संकेत के साथ ही होता है। आत्मिक रूप से भी वह हमारे जीवन का केंद्र बिंदु है जो हमें आशा और नैतिक दिशा देती है। निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान दें –

* यह हमें परमेश्वर के न्याय से बचाता है (1:10)
* यह महिमा, प्रतिफल और आनंद का समय होगा–उनके विषय भी जिन्हें हम प्रभु के पास लाए (2:19)
* यह पवित्र जीवन जीने की प्रेरणा है (3:13)
* दु:खी लोगों के लिए यह आशा और आश्वासन का विषय है (4:13–18)
* यह पवित्रीकरण का लक्ष्य है (5:23)

पौलुस पीछे देखता है (अध्याय 1-3)

आरंभिक अध्याय थिस्सलुनीकियों के सांसारिक जीवन से मसीही आशा की ओर संपूर्ण परिवर्तन के लिए धन्यवाद की घोषणा है। विश्वास, प्रेम और आशा इन नए मसीहियों के जीवन की विशेषता है। वह उनकी सेवा के लिए तीमुथियुस को भेजता है और जब तीमुथियुस उन लोगों के प्रेम और विश्वास की स्थिरता का संदेश लाता है तब पौलुस अत्यंत आनंदित होता है। (2:17-3:10)। अत: पौलुस प्रार्थना के साथ इस भाग का अंत करता है कि उनका प्रेम और गहरा हो जाए। (3:11-13)।

पौलुस आगे देखता है (अध्याय 4-5)

लगातार आत्मिक उन्नति करने के लिए पौलुस थिस्सलुनीकियों को प्रोत्साहित करते और निर्देश देते हैं। सामाजिक विषयों पर अपनी दी हुई शिक्षा को स्मरण कराते हैं। (4:1-12)

पौलुस ने उन्हें मसीह के वापस आने की शिक्षा तो दी थी, परन्तु उनमें से कुछ लोगों की मृत्यु से वे दु:खी थे। अध्याय 4:13-18 में पौलुस उन्हें विश्वास के वचनों से आश्वासन देते हैं कि जितने लोग प्रभु में मरे हैं वे प्रभु के आने पर जी उठेंगे। (5:1-11)। पौलुस सुंदर शब्दों में अपने पत्र का अंत करता है। ''शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे, और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे-पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें। तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा।'' (5:23-24)।

B. 2 थिस्सलुनीकियों :

संभवत: यह पत्र पहले पत्र के कुछ ही महीनों के बाद लिखा गया था जब पौलुस, सीलास और तीमुथियुस के साथ कुरिन्थुस में ही थे। (1:1; 18:5)। 1 थिस्सलुनीकियों में पौलुस ने उन्हें प्रभु के दोबारा आगमन और विश्वासियों का प्रभु के पास उठा लिए जाने की शिक्षा दी थी। दुर्भाग्य से यह झूठी खबर फैल गई थी कि प्रभु का दिन आ चुका। सताव के कारण विश्वासियों में भय समा गया कि यह परमेश्वर का

क्रोध है जो पृथ्वी पर आ रहा है। तब 2 थिस्सलुनीकियों की पत्री में पौलुस उन्हें समझाते हैं (अध्याय 1) और सताव में धीरज रखने का प्रोत्साहन देते हैं, (अध्याय 2) प्रभु के दिन के विषय में विस्तृत वर्णन करते हैं और कलीसिया को प्रोत्साहित करते हैं। (अध्याय 3)।

प्रश्न :

1. गलातियों की पत्री का विषय वस्तु क्या है?
2. झूठे शिक्षकों ने क्या शिक्षा दी?
3. विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने को पौलुस ने कैसे समझाया?
4. थिस्सलुनीकियों की दोनों पत्रियाँ किस स्थान से लिखी गईं?
5. उनका मुख्य विषय-वस्तु क्या है?

पाठ-32

1, 2 कुरिन्थियों - एक अवलोकन

A. 1 कुरिन्थियों :

''क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता। यदि कोई इस नींव पर सोना या चाँदी या बहुमूल्य पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखे, तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा, क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिए कि आग के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है।'' (1 कुरि. 3:11-13)

पहला कुरिन्थियों, परमेश्वर के लोगों को एक आशा और एक चुनौती देती है। अपने प्रतिदिन के जीवन में उद्धारकर्ता को प्रकट करने की चुनौती। और एक निश्चित आशा, कि एक दिन हमारे संघर्ष समाप्त हो जाएँगे और हम अपने उद्धारकर्ता की उपस्थित में खड़े होंगे।

पौलुस की पत्री को पढ़ने से पहले हम कुरिन्थुस नगर और वहाँ की कलीसिया के साथ पौलुस के संबंध के विषय में सीखेंगे।

पौलुस के दिनों में कुरिन्थुस एक अत्यंत महत्वपूर्ण शहर हुआ करता था-अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का अड्डा। इसका कारण उसकी भौगोलिक स्थिति थी। वह दो बंदरगाहों के बीच स्थित था अत: जहाज़ों के द्वारा व्यापार का सामान लाना ले जाना आसान था। वहाँ दो वर्ष में एक बार बड़े पैमाने पर खेलों की प्रतिस्पर्धा का आयोजन भी होता था। समृद्धि के साथ साथ अनेकों देवी-देवता और मंदिरों की वहाँ स्थापना हुई जिनमें प्रेम की देवी का मंदिर प्रमुख था।

अपनी दूसरी मिश्नरी यात्रा के दौरान पौलुस कुरिन्थुस में आए थे (संभवत: ईस्वी सन् 51 में)। वहाँ पौलुस अक्विला और प्रिस्किल्ला से मिले थे जिन्होंने ईस्वी सन् 49 में रोम छोड़ा था जब क्लौदियुस ने यहूदियों को देश छोड़ने की आज्ञा दी थी। वे तंबू बनाने का कार्य करते

थे, और पौलुस का भी वही कार्य था। जब सीलास और तीमुथियुस कुरिन्थुस पहुँचे तो फिलिप्पी से उसके लिए दान लेकर आए थे। अतः पौलुस ने अपना पूरा समय सुसमाचार प्रचार के लिए लगा दिया।

अठारह महीनों तक कुरिन्थ में शिक्षा देकर पौलुस यरूशलेम को गए और रास्ते में इफिसुस में रुके। प्रिस्किल्ला और अक्विला पौलुस के साथ आए थे और फिर वे इफिसुस में ही रुक गए।

पौलुस ने कुरिन्थुस की कलीसिया को संभवतः 4 पत्र लिखे थे, परन्तु उनमें से 1 और 2 कुरिन्थियों की पत्रियाँ ही सुरक्षित रह पाई थीं। हम जानते हैं कि पहला कुरिन्थियों पौलुस का उनके नाम पहला पत्र नहीं था क्योंकि उसके पहले के पत्र के विषय में उसमें उल्लेख आया है (1 कुरि. 5:9-11)। ईस्वी सन् 53 में लगभग ढाई वर्षों के लिए पौलुस इफिसुस को चले गए जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में सेवाकार्य कर रहे थे। इफिसुस में अपनी सेवकाई के आरंभिक दिनों में संभवतः पौलुस ने वह पत्र लिखा था जिसका उल्लेख 5:9-11 में किया गया है। उसके विषय में कुरिन्थियों को गलतफहमी थी और बाद में वह खो गया।

खलोए के घराने के लोगों से पौलुस को कुरिन्थुस की कलीसिया में होने वाली समस्याओं का पता चला जिसे सुलझाने के उद्देश्य से पहला कुरिन्थियों संभवतः ईस्वी सन् 54 अथवा 55 में लिखा गया।

पहला कुरिन्थियों की पत्री तीन विषयों पर सुव्यवस्थित उत्तर है- 1. खलोए के घराने के द्वारा दी गई सूचना का उत्तर (अध्याय 1-4)। 2. अनैतिकता की सूचना का उत्तर (अध्याय 5-6)। 3. प्रश्नों के साथ लिखे गए पत्र का उत्तर (अध्याय 7-16)।

I. अध्याय 1-4 :

कुरिन्थुस के विश्वासियों में फूट पड़ गई थी और कोई अपने आपको ''पौलुस का'', कोई ''अपुल्लोस का'', कोई ''कैफा का'' और कोई ''मसीह का'' कहने लगे थे। पौलुस ने उन्हें समझाया कि ''एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो'' जिस सुसमाचार पर उन्होंने विश्वास

किया है वह ''शब्दों के ज्ञान के अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे।'' पद (1:17)।

II. अध्याय 5-6 :

इसके अलावा उनके बीच में अनैतिकता एक बहुत बड़ी समस्या थी। वे अपने उद्धार से पहले की तरह का जीवन व्यतीत कर रहे थे। मसीह यीशु में मिली नई स्वतंत्रता का गलत उपयोग कर रहे थे। पौलुस कहते हैं कि कलीसिया के झगड़ों को इस संसार के न्यायालय में नहीं ले जाना चाहिए। ध्यान देने योग्य पद है - ''क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मंदिर है?'' ''इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।'' (6:19-20)।

III. अध्याय 7-16 :

इस हिस्से में पौलुस ने उन सब विषयों का उत्तर दिया जिन पर कुरिन्थुस के लोगों ने प्रश्न पूछे थे। जैसे-विवाह, बलिदान किए हुए माँस का खाना, आराधना में सुव्यवस्था और पुनरुत्थान। अध्याय 13-15 नए नियम के महान अध्यायों में गिने जाते हैं। अध्याय 13 प्रेम गीत है। अध्याय 15 प्रभु यीशु के और हमारे पुनरुत्थान का महिमामय वर्णन है।

B. 2 कुरिन्थियों :

2 कुरिन्थियों पौलुस की सबसे व्यक्तिगत पत्री है। ईस्वी सन् 55 में पहली पत्री के भेजने के पश्चात् विश्वासियों के इस समूह में नई समस्याएँ उठ खड़ी हुईं। पौलुस ने इफिसुस से पहली पत्री भेजी थी। कुरिन्थुस के विश्वासियों के मतभेद का संदेश तीमुथियुस ने पौलुस को दिया था। उनके नाम लिखे एक पत्र को लेकर तीतुस गया था। उसका परिणाम जानने के लिए पौलुस तीतुस से मिलने मकिदुनिया को गया। मकिदुनिया में रहकर पौलुस ने 2 कुरिन्थियों की पत्री लिखी और तीतुस और एक अन्य भाई के हाथ भेजी। यह समय लगभग ईस्वी सन् 56 था। फिर पौलुस तीसरी बार कुरिन्थुस गए जहाँ से उन्होंने रोमियों के नाम पत्री लिखी।

2 कुरिन्थियों की पत्री के तीन मुख्य भाग हैं - 1. पौलुस की सेवकाई का विवरण (अध्याय 1-7)। 2. साथी-मसीहियों के लिए दान एकत्र करना (अध्याय 8-9)। 3. अपने प्रेरिताई की प्रामाणिकता देना (अध्याय 10-13)।

I. अध्याय 1-7 :

अभिवादन और अपने कष्टों में परमेश्वर से प्राप्त आश्वासन के लिए धन्यवाद देने के पश्चात् पौलुस बताते हैं कि कुरिन्थुस जाने की योजना में देरी क्यों की। प्रेरित चाहते थे कि उन्हें पश्चाताप करने के लिए समय मिल सके। वह उनसे यह कहता है कि अपनी गलती से मन फिराने वाले को वापस संगति में ले लें। वह विश्वासियों को अपवित्रता से बचे रहने के लिए चेतावनी देते हैं और उनके मन परिवर्तन के विषय में तीतुस की खबर पर अपना आनंद प्रकट करते हैं।

II. अध्याय 8-9

ये अध्याय यरूशलेम के निर्धन भाइयों के लिए एकत्र किए दान के विषय में है। आरंभ में कुरिन्थुस के लोगों ने इस कार्य में दिलचस्पी दिखाई, परन्तु बाद में पीछे हट गए। पौलुस उनसे कहता है, ''हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे, न कुढ़ कुढ़ के और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है।'' (9:7)।

III. अध्याय 10-13 :

अंतिम चार अध्यायों में पौलुस अपने प्रेरित होने के पद का प्रमाण देने के साथ-साथ उन लोगों के प्रति असम्मति प्रकट करता है जिन्होंने उसका और मसीह का विरोध किया। उनकी उपस्थिति में उसकी नम्रता किसी भी प्रकार से प्रेरित होने के उसके अधिकार को कम नहीं करती। प्रोत्साहन, अभिवादन और आशीर्वाद के साथ पौलुस पत्र का अंत करते हैं। ''अत: हे भाइयो, आनंदित रहो, सिद्ध बनते जाओ, ढ़ाढ़स रखो, एक ही मन रखो, मेल से रहो। ओर प्रेम और शांति का दाता परमेश्वर तुम्हारे साथ होगा।'' (13:11)। अंत में वह कहते हैं, ''प्रभु यीशु मसीह का

अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सबके साथ होती रहे।" (13:14)।

प्रश्न :

1. कुरिन्थुस कहाँ पर स्थित था?
2. 1 कुरिन्थियों के मुख्य बिंदु क्या हैं?
3. 1 कुरिन्थियों के महान अध्याय कौन से माने जाते हैं?
4. किन-किन विषयों के बारे में कुरिन्थुस के विश्वासियों ने प्रश्न पूछे थे?
5. कुरिन्थुस की कलीसिया में फूट का समाचार पौलुस को किसने दिया?

पाठ-33

रोमियों - एक अवलोकन

''क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिए, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिए, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है। क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिए प्रगट होती है, जैसा लिखा है, 'विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा'।'' (रोमियों 1:16-17)

रोमियों की पत्री, पौलुस के द्वारा दिया गया सुसमाचार का भव्य, विपुल और विस्तृत वक्तव्य है। इसे विश्वासी के लिए संविधान और घोषणा पत्र भी कहा गया है जिसमें मसीही जीवन का सार और आधारभूत तथ्य पाए जाते हैं।

रोमियों की पृष्ठभूमि :

रोमियों की कलीसिया की स्थापना पौलुस ने नहीं की थी और न ही इस पत्र के लिखने तक वहाँ गए। परन्तु उनकी उन्नति और प्रभाव का पौलुस को ज्ञान था। (1:8-13)। संभवत: पिन्तेकुस्त के (प्रेरितों 2) तुरंत बाद ही इस कलीसिया की स्थापना हुई थी। अपने पत्राचार को पौलुस ने एक अवसर जाना ताकि रोमियों को विश्वास के आधारभूत तथ्यों में दृढ़ बना सके ताकि वे समस्त साम्राज्य के लिए एक प्रकाश बन सकें।

परिचय : (1:1-17)

स्वयं को यीशु मसीह का दास कहते हुए पौलुस इस पत्र का आरंभ करते हैं। ''पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है, और प्रेरित होने के लिए बुलाया गया और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिए अलग किया गया है।'' (1:1)। पौलुस स्वयं को, अपने परमेश्वर को और सुसमाचार सुनाने के अपने लक्ष्य को स्पष्ट जानता था। वह कहता है, ''क्योंकि मैं सुसमाचार सुनाने से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर

एक विश्वास करनेवाले के लिए, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिए, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।'' (पद 16)। फिर पौलुस अपने मुख्य विषय के बारे में बताते हैं-''क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिए प्रगट होती है, जैसा लिखा है 'विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा'।'' (पद 17)। इस पुस्तक में 'धार्मिकता' शब्द 35 बार आया है। परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए हमें जिस धार्मिकता की आवश्यकता है, वह स्वयं परमेश्वर से हमें प्राप्त होती है।

बुरी खबर : हम दोषी हैं : (1-18-3:20)

धार्मिकता परमेश्वर का दान क्यों होना चाहिए? क्योंकि समस्त मानव जाति अधर्मी है और पाप के कारण भ्रष्ट है और परमेश्वर के सिद्ध स्तर के अनुसार जीवन व्यतीत करने में असमर्थ है। यद्यपि कुछ लोग अन्य मनुष्यों की अपेक्षा अच्छा जीवन जीते हैं तौभी परमेश्वर के सम्मुख सभी दोषी हैं। ''कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं।'' (3:10)। संपूर्ण मनुष्यजाति परमेश्वर के न्याय के आधीन है।

अच्छी खबर : परमेश्वर ने अपनी धार्मिकता हमें दी है (3:21-5:21)

पापी लोग परमेश्वर के क्रोध से कैसे बच सकते हैं? किसी भी तरह नहीं। अत: स्वयं परमेश्वर ने क्रूस पर अपने पुत्र की मृत्यु के द्वारा एक मार्ग बनाया। यद्यपि हम ''सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (पद 23) ''उसे परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है।'' (पद 25) ''उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।'' (पद 24)। धर्मी ठहराए जाने का अर्थ है कि हम परमेश्वर के साथ संबंध का आनंद उठा सकते हैं। ''इसलिए जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिए जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ। क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।'' (5:18-19)।

और भी अच्छी खबर (अध्याय 6-8)

पौलुस कहते हैं ''तो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो?'' (6:1)। ''कदापि नहीं! हम जब पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उसमें कैसे जीवन बिताएँ?'' (6:2)।

उद्धार हमें पाप करने के लिए नहीं बल्कि पाप न करने के लिए स्वतंत्र करता है। (2-11)। विश्वासी के रूप में हम मसीह और उसकी सामर्थ के साथ जुड़ गए हैं। पाप का अब हम पर कोई अधिकार नहीं है। ''हम परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित हैं (पद 11)। प्रतिदिन मसीह में इस नए जीवन को जीने की प्रक्रिया ''पवित्रीकरण'' कहलाती है। (पद 22)। हम परमेश्वर की ओर से धर्मी ठहराए जाते हैं और उस धार्मिकता में प्रतिदिन जीने से हम पवित्रता में बढ़ते हैं।

एक मसीही के रूप में अब हम उस व्यवस्था के अधीन नहीं हैं जिसने हमें पाप से अवगत कराया और हमें दोषी ठहराया। परन्तु जब हम आत्मा में जीते हैं जो हमें मसीह से प्रेम करने और सेवा करने के लिए स्वतंत्र करता है। ''क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हो, परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं।'' (पद 15)। और ''हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं, अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है, उन्हें पहले से ठहराया भी है, कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे। फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है, और जिन्हें धर्मी ठहराया उन्हें महिमा भी दी है।'' (पद 28-30)।

इस्राएल का भविष्य : (अध्याय 9-11)

पौलुस इस बात से दु:खी होता है कि उसके अपने लोग, संगी यहूदी जिन्हें वाचा दी गई थी, उन सबको उद्धार प्राप्त नहीं हुआ, बहुतों ने सुसमाचार का विरोध किया। परन्तु परमेश्वर ने उन्हें पूर्ण रूप से

त्याग नहीं दिया। ''और इस रीति से सारा इस्राएल उद्धार पाएगा।'' (पद 11:26)। अत: पौलुस परमेश्वर की स्तुति करते हुए कहते हैं, ''आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर हैं! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!'' (पद 11:33)।

हमें कैसे जीना है? (12:1-15:13)

पौलुस कहते हैं- ''इसलिए हे भाइयो, मैं तुमसे परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।'' (12:1)। नए जीवन के विषय में पौलुस कहते हैं कि ''इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली और भावती सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो'' (12:2)। स्वयं को प्रसन्न करना मसीही जीवन का उद्देश्य नहीं है। हमें किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए उसका वर्णन पौलुस 12-15:13 तक में किया है।

निष्कर्ष : पौलुस पत्र का अंत व्यक्तिगत अभिवादन के साथ करते हैं। (अध्याय-16)। और अंत में कहते हैं, ''उसी एकमात्र बुद्धिमान परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग महिमा होती रहे। आमीन।'' (16:27)।

संभवत: ईस्वी सन् 67 में पौलुस दूसरी बार रोम गए थे। सम्राट नीरो ने उन्हें मृत्युदंड की आज्ञा दी। इस प्रकार पौलुस शहीद हो गए परन्तु उनकी पत्रियाँ बोलती हैं।

प्रश्न :

1. रोमियों की पत्री किसने और कब लिखी?
2. इस पत्र को पहुँचाने वाला कौन था?
3. इस पत्र का मुख्य विषय-वस्तु क्या है?
4. ''बुरी खबर'' क्या है?
5. ''अच्छी खबर' क्या है?
6. एक विश्वासी को कैसा जीवन जीना चाहिए?

पाठ-34

इफिसियों और कुलुस्सियों - एक अवलोकन

A. इफिसियों :

''जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है) और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।'' (2:5-7)

प्रेरित पौलुस यह बताते हुए इस पत्र का आरंभ करते हैं कि एक मसीही के स्वर्गीय खाते में क्या-क्या हैं-लेपालक पुत्र बनाया, स्वीकार किया, छुटकारा दिया, क्षमा दी, ज्ञान दिया, मीरास दी, पवित्र आत्मा की छाप दी, जीवन दिया, अनुग्रह दिया और नागरिकता दी। हर एक आत्मिक आशीषें दीं, पौलुस बताते हैं कि मसीह के शरीर के रूप में हमारी बुलाहट का उद्देश्य क्या है।

लगभग ईस्वी सन् 61 में, रोम में एक कैदी बनकर रहते समय पौलुस ने यह पत्र लिखा। सैनिकों की निगरानी में रहते हुए भी पौलुस को सुसमाचार सुनाने की, अतिथियों को अपने घर में स्वीकार करने की और कलीसियाओं को पत्र लिखने की स्वतंत्रता थी। उस दौरान पौलुस ने इफिसियों के अलावा फिलिप्पयों, कुलुस्सियों और फिलेमोन की पत्रियाँ भी लिखीं।

पौलुस की दूसरी मिश्नरी यात्रा के दौरान कुरिन्थुस नगर से गुज़रते हुए उसकी मुलाकात अक्विला और प्रिस्किल्ला से हुई जो तंबू बनाने का कार्य करते थे। वहाँ से वे पौलुस के साथ इफिसुस को गए। उन्हें इफिसुस में छोड़कर पौलुस अन्ताकिया को चले गए। अपनी तीसरी मिश्नरी यात्रा के दौरान पौलुस वापस इफिसुस में आए और लगभग तीन

वर्ष तक विश्वासियों को शिक्षा देते हुए उनके साथ रहे। इफिसियों को अच्छी तरह जानने के बाद पौलुस ने उन्हें यह पत्र लिखा। इसे हम दो मुख्य भागों में बाँट सकते हैं-सिद्धान्त और उन्हें कार्यान्वित करना। अध्याय 1-3 बताते हैं कि मसीह ने अपनी मृत्यु-पुनरुत्थान और महिमा में उठाए जाने के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारा मेल करा दिया और यहूदियों और अन्यजातियों को एक शरीर में जोड़ दिया जिसका सिर स्वयं प्रभु यीशु मसीह हैं। यह सिद्धान्त है जो हमें सिखाता है कि मसीह में हमारा स्थान क्या है। अध्याय 4-6 हमें सिखाते हैं कि मसीह में प्राप्त हमारी इस नई पहचान में हमें कैसे जीवन बिताना है। पौलुस सात-सात बिंदुओं के तीन समूहों के विषय में भी बताते हैं। 1. मसीह में **सात** आत्मिक आशीषें (अध्याय 1) 2. मसीह के शरीर की **सात** एकताएँ (अध्याय 4) 3. आत्मिक युद्ध के **सात** हथियार (अध्याय 6)।

मसीह के साथ हमारी एकता :

मसीह ने हमारे लिए क्या किया? अध्याय 1:4-14 में पौलुस उन आत्मिक आशीषों की सूची बताते हैं :

1. पवित्र और निर्दोष होने के लिए जगत की उत्पत्ति से पहले हम **चुन लिए गए।** (पद 4)
2. हम उसके **लेपालक पुत्र बनाए गए** (पद 5)
3. हमें **अपराधों की क्षमा मिली है** (पद 7)
4. हमें **छुटकारा मिला है** (पद 7)
5. हमें परमेश्वर की **इच्छा का भेद बताया गया है** (पद 9)
6. हम **मीरास बने हैं** (पद 11)
7. हम पर **पवित्र आत्मा की छाप लगी है** (पद 13)

आपसी एकता :

यह मेल के बंधन में आत्मा की एकता है। क्योंकि एक ही देह है, और एक ही आत्मा, एक ही आशा, एक ही प्रभु, एक ही विश्वास,

एक ही बपतिस्मा और एक ही परमेश्वर और पिता है। (पद 3-6)।

अध्याय 6 में पौलुस हमारे सात हथियारों के विषय में बताते हैं- 1. सत्य 2. धार्मिकता 3. मेल 4. विश्वास 5. उद्धार 6. आत्मा की तलवार- वचन 7. प्रार्थना । (6:10-18)।

पौलुस अपने पत्र का अंत इन शब्दों से करते हैं : ''परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह की ओर से भाइयों को शांति और विश्वास सहित प्रेम मिले। जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से सच्चा प्रेम रखते हैं, उन सब पर अनुग्रह होता रहे।'' (6:23-24)।

B. कुलुस्सियों :

इफिसुस के पूर्व की ओर लगभग सौ मील की दूरी पर बसा हुआ नगर कुलुस्से कभी सम्पन्न हुआ करता था। बाद में उनका व्यापार कम हो गया और पौलुस के समय में वह एक मामूली नगर रह गया था। परन्तु वहाँ पर स्थित कलीसिया उन्नति कर रही थी जिसकी स्थापना इपफ्रास ने की थी। यह संभवतः तब हुआ जब पौलुस तीन वर्ष तक इफिसुस में रहे थे। बाद में जब पौलुस रोम में गृह-कैद में थे तब इपफ्रास पौलुस को यह समाचार देते हैं कि कलीसियाओं में गलत शिक्षा फैल रही है। झूठे शिक्षक यह सिखा रहे थे कि उद्धार के लिए प्रभु यीशु पर विश्वास करना मात्र काफी नहीं है बल्कि उसके लिए यहूदी रीति-रिवाज़ों का पालन करना भी आवश्यक है।

इस पत्री में दो मुख्य विषय हैं-मसीह के विषय में सत्य और उस सत्य के प्रति हमारा प्रत्युत्तर। पहले दो अध्यायों में पौलुस मसीह की सर्वोच्चता और उनके बलिदान की पर्याप्तता के विषय में बताते हैं। यहाँ प्रभु यीशु के व्यक्तित्व और कार्य पर ज़ोर दिया गया है। अंतिम दो अध्यायों में पौलुस प्रभु यीशु की शांति और उपस्थिति पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ''अब मैं उन दु:खों के कारण आनंद करता हूँ, जो तुम्हारे लिए उठाता हूँ, और मसीह के क्लेशों की घटी उसकी देह के लिए अर्थात् कलीसिया के लिए अपने शरीर में पूरी करता हूँ। जिसका मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार सेवक बना जो तुम्हारे लिए मुझे

सौंपा गया ताकि मैं परमेश्वर के वचन को पूरा-पूरा प्रचार करूँ। अर्थात् उस भेद को जो समयों और पीढ़ियों से गुप्त रहा, परन्तु अब उसके उन पवित्र लोगों पर प्रगट हुआ है। जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है, और वह यह है कि *मसीह जो महिमा की आशा है, तुम में रहता है।''* (1:24-27)। जिन अन्यजातियों ने उद्धार पाया था और जिन्हें पौलुस ने नहीं देखा था उनके प्रति पौलुस की तीव्र इच्छा थी कि ''वे प्रेम से आपस में गठे रहें और वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें और परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात् मसीह को पहचान लें जिसमें बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं।'' (2:2-3)।

पौलुस चेतावनी देते हुए बताते हैं कि मसीह में एक विश्वासी की क्या स्थिति है। ''चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अपना अहेर न बना ले जो मनुष्य की परम्पराओं और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार तो है, पर मसीह के अनुसार नहीं। क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।'' (2:8-10)।

प्रश्न :

1. इफिसियों की पत्री का लेखक कौन है?
2. लेखक इफिसुस में कितने समय तक रहे?
3. इस पत्री के मुख्य बिंदु क्या हैं?
4. हमारे आत्मिक हथियार क्या हैं?
5. कुलुस्से में कौन सी झूठी शिक्षा फैल रही थी?
6. कुलुस्सियों की पत्री के दो मुख्य विषय कौन से हैं?

पाठ–35

फिलेमोन और फिलिप्पियों – एक अवलोकन

मुख्य पद : ''यदि उसने तेरी कुछ हानि की है, या उस पर तेरा कुछ आता है, तो मेरे नाम पर लिख ले।'' (फिलेमोन 18)

A. फिलेमोन :

अनुग्रह और क्षमा के लिए याचना :

पौलुस के द्वारा लिखी गई चौदह पत्रियों में फिलेमोन सबसे छोटा है – मात्र पच्चीस पद। पौलुस ने रोम से अपने मित्र फिलेमोन के नाम एक पत्र लिखा। जिसमें उसने फिलेमोन से विनती की कि वह उनेसिमुस को स्वीकार कर ले। उनेसिमुस फिलेमोन का दास था और घर से भाग गया था परन्तु पौलुस के सेवाकार्य के द्वारा एक मसीही बन गया था।

इस क्षमा याचना के पत्र में सबके लिए एक संदेश है– एक और अवसर देने और दया दिखाने के विषय में। सामाजिक सीमाओं से परे, मसीह में सबकी समानता और सुसमाचार की सामर्थ के विषय में। सबसे ऊपर है अनुग्रह का संदेश।

पृष्ठभूमि :

कैसर के सम्मुख पेश किए जाने की प्रतीक्षा करते हुए पौलुस रोम में गृह–कैद में रह रहे थे। जंजीरों से जकड़े होने के बावजूद पौलुस को उन लोगों से मिलने की स्वतंत्रता थी जो उस घर में आते थे।

उनेसिमुस अपने स्वामी फिलेमोन के यहाँ चोरी करके भागा था। परमेश्वर की योजनानुसार उसकी मुलाकात पौलुस से हुई, जिसके द्वारा उसने प्रभु यीशु पर विश्वास किया। प्रभु से क्षमा प्राप्त करने पर अब उसे अपने स्वामी फिलेमोन के पास वापस जाना था। उसके वापस जाने

पर दो मुख्य विषय थे जिनसे उसे निपटना था। पहला–यह कि वह कुछ चुराकर भागा था और उसे उसकी भरपाई करना था। दूसरा–प्रभु यीशु से उसे क्षमा प्राप्त हो गई थी, परन्तु क्या उसका स्वामी फिलेमोन उसे क्षमा करेगा? क्या उसका मसीही स्वामी उसे मसीह में एक भाई की तरह स्वीकार करेगा? क्या यह सामाजिक सीमाओं को तोड़ने के लिए मसीही संगति और सुसमाचार के सामर्थ की परीक्षा थी?

इन दो बातों को ध्यान में रखते हुए पौलुस ने उनेसिमुस के हाथ फिलेमोन के लिए यह पत्र भेजा। इस पत्र को हम चार भागों में बाँट सकते हैं : अभिवादन, सराहना, विनती और एक वायदा।

अभिवादन : पद 1-3

यहाँ पौलुस स्वयं को प्रेरित न कहकर ''मसीह यीशु का कैदी'' कहते हैं। फिलेमोन ने पौलुस के द्वारा प्रभु यीशु पर विश्वास किया था और वह कुलुस्से में रहता था। उसका घर इतना बड़ा था कि वहाँ पर कलीसिया एकत्र होती थी। अफफिया (संभवतः उसकी पत्नी) और अरखिप्पुस (संभवतः उसका पुत्र) उसके साथ सेवाकार्य में लगे हुए थे। ''हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और शांति तुम्हें मिलती रहे।'' (पद 3)।

सराहना : पद 4-7

अपनी विनती से पहले पौलुस फिलेमोन के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। और सराहना करते हैं, ''मैं अपनी प्रार्थनाओं में भी तुझे स्मरण करता हूँ क्योंकि मैं तेरे उस प्रेम और विश्वास की चर्चा सुनता हूँ, तो सब पवित्र लोगों के साथ और प्रभु यीशु पर है।'' (पद 5)।

विनती : पद 8-17

उनेसिमुस नाम का अर्थ है–उपयोगी/लाभदायक। इस अर्थ के आधार पर पौलुस फिलेमोन से विनती करते हैं, ''मैं अपने बच्चे उनेसिमुस के लिए, जो मुझ से मेरी कैद में जन्मा है, तुझ से विनती करता हूँ। वह तो

पहले तेरे कुछ काम का न था, पर अब तेरे और मेरे दोनों के **बड़े काम का है।**'' (पद 10-11)।

वायदा : पद 18-25

पौलुस जानते थे कि फिलेमोन पौलुस की बात मान लेंगे और उसके अनुसार उनेसिमुस से व्यवहार करेंगे (पद 21)। अतः पौलुस उससे कहते हैं, ''यदि उसने तेरी कुछ हानि की है या उस पर तेरा कुछ आता है तो मेरे नाम पर लिख ले। मैं पौलुस अपने हाथ से लिखता हूँ कि मैं आप भर दूँगा।'' (पद 18-19)। इस पत्र का अंत करते हुए पौलुस कहते हैं, ''हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा पर होता रहे। आमीन।'' (पद 25)।

B. फिलिप्पियों :

पौलुस फिलिप्पियों को उनकी सहायता के लिए धन्यवाद का एक पत्र लिखते हैं और साथ ही कुछ निर्देश भी देते हैं। उनके कष्टों में उन्हें प्रोत्साहन देते हुए पौलुस कहते हैं, ''स्थिर रहो'' और ''आनंदित रहो''। कलीसिया में घुस आए शत्रुओं के विषय में भी पौलुस उन्हें चेतावनी देते हैं। इस पत्र को लिखने का एक कारण कलीसिया की एकता को मज़बूत करना भी था।

फिलिप्पियों का हर अध्याय मसीह के विभिन्न पहलुओं का दर्शाता है। अध्याय 1 में ''मसीह मेरा जीवन है''। अध्याय 2 में ''मसीह मेरा नमूना है''। अध्याय 3 में ''मसीह मेरा उद्देश्य है।'' अध्याय 4 में ''मसीह मेरी संतुष्टि है।'' रोम में गृह-कैद में रहते हुए पौलुस ने यह पत्री लिखी थी। (प्रेरितों. 28:16; 30; 1:12-14)।

सिकंदर महान के पिता मकिदुनिया के राजा फिलिप ने 358 ई.पू. में इस शहर पर कब्जा करके उसका विस्तार किया और उसे नया नाम दिया-फिलिप्पी। बाद में रोमी लोगों ने उस पर कब्जा कर लिया और उसे अपना शहर बना लिया। वहाँ के नागरिकों को विशेषाधिकार दिए गए और वे रोमी नागरिक कहलाने लगे। अपनी दूसरी मिश्नरी यात्रा के

दौरान पौलुस फिलिप्पी में आए तब लुदिया और अन्य लोगों ने उद्धार पाया था। पौलुस और सीलास के बंदी बनाए जाने के द्वारा बंदीगृह के दारोगा और परिवार ने उद्धार पाया था। अपनी तीसरी मिश्नरी यात्रा के दौरान भी पौलुस फिलिप्पी गए थे। (प्रेरितों 20:1, 6)। जब फिलिप्पी के विश्वासियों ने सुना कि पौलुस रोम में कैद में हैं तब उन्होंने इपफ्रुदीतुस के हाथ से पौलुस के लिए दान भेजे। (4:18)। उसी के हाथ से पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया के नाम यह पत्र भेजा।

पुस्तक का अवलोकन :

1. मसीह के लिए जीने का आनंद (अध्याय 1)

पहले अध्याय में पौलुस अपने कैद के अनुभव का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि कठिन परिस्थितियों में भी मसीह में आनंदित रहना संभव है। मसीह के लिए जीना ही इस आनंद का रहस्य है। पौलुस लिखते हैं, ''जीवित रहना मेरे लिए मसीह और मर जाना लाभ है''।

2. एकता के साथ मसीह की सेवा करने में आनंद (अध्याय 2)

अध्याय 2 में पौलुस विनती करते हैं कि दूसरे विश्वासियों के साथ एकता रखने में आनंदित रहो। ''एक मन रहो, और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो। दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित ही नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करो।'' (पद 2-4)।

मसीह को पहिचानने में आनंद (अध्याय 3)

अध्याय 3 में पौलुस गवाही देते हैं कि जीवन का महानतम आनंद मसीह को जानना है। ''मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूँ।'' (पद 8)। क्योंकि ''हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है, और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने की बाट जोह रहे हैं।'' (पद 20)।

मसीह में विश्राम पाने में आनंद (अध्याय 4)

अध्याय 4 में पौलुस बताते हैं कि आनंदित रहने के लिए हमें मसीह

में विश्राम पाना सीखना चाहिए। ''तब परमेश्वर की शांति जो सारी समझ से परे है, तम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।'' (पद 7)। इस पत्री के अंत पौलुस कहते हैं, ''हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे। (पद 23)।

प्रश्न :

1. फिलेमोन कौन था और कहाँ का रहनेवाला था?
2. उनेसिमुस नाम का क्या अर्थ है?
3. फिलेमोन की पत्री लिखे जाने का मुख्य उद्देश्य क्या था?
4. फिलिप्पियों की पत्री मसीह के किन विभिन्न पहलुओं को दर्शाती है?
5. फिलिप्पी नगर का नाम किस प्रकार रखा गया?

पाठ-36

1-2 तीमुथियुस व तीतुस - एक अवलोकन

"यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले कि परमेश्वर के घराने में जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है और जो सत्य का खंभा और नींव है, कैसा बर्ताव करना चाहिए। इसमें संदेह नहीं कि भक्ति का भेद गंभीर है, अर्थात् वह जो शरीर में प्रगट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया।" (1 तीमु. 3:15-16)

A. 1 तीमुथियुस :

ऐसा माना जाता है कि ईस्वी सन् 63-65 में अपनी पहली और दूसरी कैद के बीच के समय में पौलुस ने मकिदुनिया से यह पत्री लिखी। इस दौरान पौलुस निम्नलिखित स्थानों पर गए जिसे हम पौलुस की चौथी मिश्नरी यात्रा का नाम दे सकते हैं।

1. कुलुस्से और इफिसुस (फिलेमोन 22)
2. मकिदुनिया (1 तीमु. 1:3; फिलि. 1:25; 2:24)
3. इफिसुस (1 तीमु. 3:14)
4. स्पेन (रोमियों 15:24)
5. क्रेते (तीतुस 1:5)
6. कुरिन्थ (2 तीमु. 4:20)
7. मिलेतुस (2 तीमु. 4:20)
8. नीकुपुलिस (तीतुस 3:12)
9. त्रोआस (2 तीमु. 4:13)

तीमुथियुस का पिता यूनानी और माता यहूदिनी थी। (प्रेरितों 16:1)। यह नहीं पता कि उसका पिता मसीही था या नहीं, परन्तु उसकी माता यूनीके और नानी लोइस अपने सच्चे विश्वास के लिए जानी जाती थी। (2 तीमु. 1:5)। तीमुथियुस लुस्त्रा में रहता था जब पौलुस अपने पहले मिश्नरी यात्रा के दौरान वहाँ गए थे। (प्रेरितों 12:6; 16:1)। तीमुथियुस ने पौलुस के द्वारा प्रभु यीशु पर विश्वास किया था, अत: पौलुस उसके आत्मिक पिता बने। (1 तीमु. 1:2; 2 तीमु 1:2; फिलि. 2:22)। पौलुस उसे अपना सहयात्री बनाकर अपने साथ ले गए (प्रेरितों 16:3, 4)। और वह पौलुस का विश्वस्त सहकर्मी बन गया (रोमियों 16:21; 1 थिस्स. 3:2, 6)। पौलुस अपनी छ: पत्रियों के अभिवादन में तीमुथियुस का नाम भी जोड़ते हैं। पौलुस की यह इच्छा थी कि उसके जीवन के अंतिम दिनों में विश्वास में उसका पुत्र तीमुथियुस उसके साथ रहे। (2 तीमु. 1:4; 4:9; 21)।

पौलुस अपने पहले रोमी कैद से छूटने के पश्चात् (प्रेरितों 28) तीमुथियुस के साथ जब कुछ कलीसियाओं में गए तब इफिसुस में भी गए। इफिसुस से पौलुस संभवत: मकिदुनिया गए थे और तीमुथियुस को वहीं छोड़ गए ताकि वो कलीसिया की अगुआई कर सके। पौलुस शीघ्र वापस आना चाह रहे थे, परन्तु देरी होने के कारण उन्होंने तीमुथियुस को एक पत्र लिखा जो 1 तीमुथियुस कहलाता है।

सिद्धान्त के विषय में पौलुस का आदेश (अध्याय 1) :

अभिवादन के बाद पौलुस झूठी शिक्षाओं के विषय में तीमुथियुस को चेतावनी देते हैं ''विश्वास और उस अच्छे विवेक को थामे रह'' (पद 19)।

सार्वजनिक आराधना के विषय में पौलुस का आदेश (अध्याय 2-3) :

इन अध्यायों में पौलुस कलीसिया में आराधना एवं अगुवाई के विषयों पर निर्देश देते हैं। पुरुषों और स्त्रियों की भूमिका और प्राचीनों की योग्यता के विषय में भी पौलुस बताते हैं।

झूठे शिक्षकों के विषय में पौलुस का आदेश (अध्याय 4) :

इस भाग में पौलुस तीमुथियुस के व्यक्तिगत जीवन के विषय में ध्यान केंद्रित करते हैं और उसे झूठी शिक्षाओं के प्रति सतर्क रहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ''इन बातों की आज्ञा दे और सिखाता रह। कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए, पर वचन और चाल-चलन और प्रेम और विश्वास और पवित्रता में विश्वासियों के लिए आदर्श बन जा।'' (पद 11-12)

कलीसिया के अनुशासन के विषय में पौलुस का आदेश (अध्याय 5) :

व्यावहारिक निर्देश देते हुए पौलुस कहते हैं कि कलीसिया को एक परिवार की तरह मानो और व्यवहार करो। प्राचीनों और विधवाओं के विषय में भी पौलुस विस्तृत निर्देश देते हैं।

व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा और सिद्धान्त के विषय में पौलुस का आदेश (अध्याय 6) :

सिद्धान्त में सत्यनिष्ठा के साथ ही व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा भी होनी चाहिए। धार्मिक अगुओं को सांसारिक दौलत और लालच के पीछे भागना नहीं चाहिए। ''क्योंकि रुपए का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है'' (पद 10)। पौलुस के अंतिम शब्द भी सिद्धान्त के महत्व को बताते हैं ''हे तीमुथियुस, इस धरोहर की रखवाली कर, और जिस ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है, उसके अशुद्ध बकवाद और विरोध की बातों से परे रह। कितने इस ज्ञान का अंगीकार करके विश्वास से भटक गए हैं। तुम पर अनुग्रह होता रहे।'' (पद 20-21)।

B. तीतुस :

तीतुस एक यूनानी था (गलातियों 2:3)। व पौलुस प्रेरित के द्वारा प्रभु के पास आया (तीतुस 1:4)। वह पौलुस का सबसे प्रिय और विश्वस्त सहकर्मी था। उसने स्वयं को एक योग्य और विश्वासयोग्य सेवक के रूप में सिद्ध किया। अत: तीमुथियुस की तरह उसे भी महत्वपूर्ण सेवाकार्य सौंपा गया। तीतुस को अपने आत्मिक पिता की

अगुआई और सलाह की आवश्यकता हुई क्योंकि उसकी सेवकाई में अनेक चुनौतियाँ और समस्याएँ थीं। अतः पौलुस ने ईस्वी सन् 64 में उसे यह पत्र लिखा।

प्राचीनों को नियुक्त करो (अध्याय 1) :

अभिवादन में पौलुस स्वयं को एक प्रेरित और परमेश्वर का दास कहते हैं। और तीतुस को "विश्वास की सहभागिता के विचार से अपना सच्चा पुत्र" कहते हैं। फिर पौलुस तीतुस को क्रेते में उसके उत्तरदायित्वों को स्मरण दिलाते हैं। (1:6-9)। झूठे शिक्षकों के द्वारा भरमाए जाने की संभावना के कारण यह और भी आवश्यक था। (पद 14)।

सुव्यवस्था और मसीही चाल-चलन (अध्याय 2-3) :

खरे उपदेश के आचरण की शिक्षा देने में तीतुस की भूमिका के विषय में पौलुस वर्णन करते हैं। कलीसिया के बूढ़े पुरुष, बूढ़ी स्त्रियाँ, जवान स्त्रियाँ, जवान पुरुष और दास आदि सभी के जीवन में मसीह का ज्ञान परिवर्तन लाए और वे "सब बातों में हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर के उपदेश की शोभा बढ़ाएँ।" (पद 10)। पौलुस कहते हैं, "पूरे अधिकार के साथ ये बातें कह, और समझा और सिखाता रह।" (पद 15)। पत्र के अंत में पौलुस "अच्छे कामों" के बारे में कहते हैं और इन शब्दों के साथ अंत करते हैं, "तुम सब पर अनुग्रह होता रहे"।

C. 2 तीमुथियुस :

क्या कैद से लिखा गया पत्र प्रोत्साहन देने वाला हो सकता है? पौलुस का तीमुथियुस के लिए लिखा गया दूसरा पत्र ऐसा ही था। रोमी सम्राट नीरो मसीहियों पर अत्याचार कर रहा था और ईस्वी सन् 64 में आधा रोमी राज्य आग में नष्ट हो चुका था जिसका दोषी उसने मसीहियों को ठहराया। अतः अब मसीही राज्य की सरकार के शत्रु माने जाने लगे और वे सार्वजनिक रूप से सताए जाने और मार डाले जाने लगे। पौलुस जब आसिया में आए तो उन्हें भी कैद कर लिया गया। तब उन्होंने तीमुथियुस के नाम यह पत्र लिखा।

''धरोहर की रखवाली कर! दु:ख उठा!'' (अध्याय 1-2)

अपने ''प्रिय पुत्र'' (1:2) का अभिवादन करने के बाद पौलुस तीमुथियुस के ''निष्कपट विश्वास के लिए'' (1:5) परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। फिर पौलुस उसे प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं, ''जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे, जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।'' (2:2)।

''सुसमाचार प्रचार का काम कर'' (अध्याय 3-4)

पौलुस जानते थे कि वह समय आएगा जब लोग धर्मत्याग और दुष्टता के कारण गलत शिक्षाओं में पड़ जाएँगे। अत: वह कहते हैं, ''पर तू उन बातों पर जो तूने सीखी हैं, और विश्वास किया है, यह जानकर दृढ़ बना रह कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा है'' (3:14)। ''क्योंकि मैं अर्घ के समान उंडेला जाता हूँ, और मेरे कूच का समय आ पहुँचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है।'' (4:7)।

अंतिम शब्द : ''मेरे पास शीघ्र आने का प्रयत्न कर। जब तू आए तो मेरा बागा और पुस्तकें, विशेष करके चर्मपत्रों को लेते आना। मरकुस को लेकर चला आ, क्योंकि सेवा के लिए वह मेरे बहुत काम का है।'' (4:9-13)।

प्रश्न :

1. तीमुथियुस के परिवार के विषय में बताइए।
2. अपने चौथे मिश्नरी यात्रा के दौरान पौलुस किन-किन स्थानों पर गए?
3. 1 तीमुथियुस की रूपरेखा बताइए।
4. तीतुस कौन था? उसका आत्मिक पिता कौन था?
5. 2 तीमुथियुस पौलुस ने कहाँ से लिखा?
6. 2 तीमुथियुस में पौलुस तीमुथियुस से कौन सी दो मुख्य बातें करने के लिए कहते हैं?

पाठ-37

1-2 पतरस - एक अवलोकन

A. 1 पतरस :

1 पतरस को ''विदेश के राजदूतों के लिए लिखी गई पुस्तिका'' कहा जाता है। ईस्वी सन् 63 के लगभग प्रेरित पतरस ने यह पत्र लिखा। 1:1 के अनुसार यह पत्र उन परदेशियों के नाम लिखा गया जो पुन्तुस, गलातिया, कप्पदुकिया, आसिया और बिथुनिया में तितर-बितर होकर रहते हैं। ध्यान देने योग्य है कि पतरस उन्हें ''परदेशी'' और ''तितर-बितर'' कहते हैं। पतरस के इन शब्दों में हम उसके एक मुख्य विषय-वस्तु को देखते हैं कि मसीही इस संसार में ''परदेशी'' हैं और एक बेहतर देश के नागरिक हैं। ऐसा देश जो हमारे लिए प्रभु यीशु के बलिदान का दान देकर खोला गया है। इस वर्तमान संसार की शक्तियाँ परमेश्वर के राज्य के विरुद्ध कार्य करती हैं। अत: पतरस कहते हैं, ''यद्यपि अवश्य है कि अभी कुछ दिन के लिए नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दु:ख में हो, और यह इसलिए है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशवान सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर का कारण ठहरे।'' (1:6-7)।

अभिवादन :

आरंभ से ही पतरस विश्वासी की नई पहचान को स्थापित करते हुए कहते हैं, जो ''परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार, आत्मा के पवित्र करने के द्वारा आज्ञा मानने और यीशु मसीह के लहू के छिड़के जाने के लिए चुने हुए हैं'' ''तुम्हें अनुग्रह और शांति बहुतायत से मिलती रहे।'' (1:2)।

जीवित आशा और पवित्र जीवन (1:3-2:12)

इस हिस्से में पतरस उद्धार रूपी धन के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद

हो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिए जन्म दिया, अर्थात् एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिए जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी है।'' (1:3-4)। इस संसार में हम क्रूस के मार्ग पर चलते हैं जो कष्टों का प्रतीक है। परन्तु क्रूस मसीह के जीवन का अंत नहीं था अत: वह हमारा अंत भी नहीं है। हमारे प्रभु ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की और नए जीवन में जी उठने के द्वारा हमें जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया। मसीह यीशु के बहुमूल्य रक्त के द्वारा हमारा छुटकारा हुआ अत: हमें इस बात को हमेशा स्मरण रखना चाहिए और प्रभु का आदर करना चाहिए। पतरस कहते हैं- ''उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया, परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ और बहुमूल्य जीवता पत्थर है, तुम भी आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं।'' (2:4-5)।

अधीनता (2:13-3:7)

यहाँ पतरस कहते हैं, ''प्रभु के लिए अधीन रहो।'' परमेश्वर से हमें प्राप्त हुई स्वतंत्रता का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। कष्ट उठाकर भी अधीन रहना पड़े तो भी हमें अपने आदर्श प्रभु यीशु की ओर देखना है, ''क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दु:ख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके पद-चिह्नों पर चलो।'' (2:21)।

कष्ट उठाना :

मसीहियत के विरुद्ध बढ़ते हुए विरोध को देखकर पतरस विश्वासियों को प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं कि ''यदि तुम धर्म के कारण दु:ख भी उठाओ तो धन्य हो।'' (3:14)। पतरस इस बात पर भी ज़ोर देते हैं कि हमें दीन और नम्र होना चाहिए। ''वरन् तुम सबके सब एक दूसरे की सेवा के लिए दीनता से कमर बाँधे रहो, क्योंकि परमेश्वर दीनों पर अनुग्रह करता है। इसलिए परमेश्वर ने बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से

रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।'' (5:5-6)

निष्कर्ष : अंत में पतरस लिखते हैं- ''मैं ने संक्षेप में लिखकर तुम्हें समझाया है कि परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह यही है, इसी में स्थिर रहो।'' (5:12)। ''तुम सबको जो मसीह में हो, शांति मिलती रहे।'' (5:14)।

B. 2 पतरस :

सिद्धान्तों को नुकसान पहुँचाने वाले झूठे शिक्षकों के विषय में चेतावनी देने के लिए पतरस ने यह दूसरा पत्र लिखा। 1 पतरस में मसीहियों ने जो कष्ट उठाए वो बाहर से उन पर आए थे परन्तु 2 पतरस में हम जो समस्याएँ देखते हैं वे अंदरूनी थीं। पतरस की दूसरी पत्री को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं-

(1) आत्मिक परिपक्वता के लिए प्रोत्साहन (अध्याय 1)

(2) झूठे शिक्षकों का कड़ा विरोध (अध्याय 2)

(3) प्रभु की वापसी की प्रतीक्षा करने के लिए प्रोत्साहन (अध्याय 3)

1. आत्मिक परिपक्वता के लिए प्रोत्साहन : (अध्याय 1)

अभिवादन के शब्दों के पश्चात् पतरस विश्वासियों को याद दिलाते हैं कि ''उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएँ दी हैं; ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ।'' (1:4)।

पतरस जानते थे कि उनका अंतिम समय निकट है इसलिए वे फिर से उन बातों को स्मरण दिलाते हैं, ''यद्यपि तुम इन बातों को जानते हो और जो सत्य वचन तुम्हें मिला हैं उसमें बने रहते हो, तौभी मैं तुम्हें इन बातों की सुधि दिलाने को सर्वदा तैयार रहूँगा, कि मेरे कूच करने के बाद तुम इन सब बातों को सर्वदा स्मरण कर सको। (1:12, 15)।

2. झूठे शिक्षकों का कड़ा विरोध : (अध्याय 2)

इस अध्याय में पतरस झूठे उपदेशकों का कड़ा विरोध करते हुए

कहते हैं, ''तुममें भी झूठे उपदेशक होंगे, जो नाश करने वाले पाखण्ड का उद्घाटन छिप छिपकर करेंगे। बहुत से उनके समान लुचपन करेंगे, जिनके कारण सत्य के मार्ग की निन्दा की जाएगी।'' (2:1-2)। ''उन पर यह कहावत ठीक बैठती है कि कुत्ता अपनी छाँट की ओर और नहलाई हुई सूअरनी कीचड़ में लोटने के लिए फिर चली जाती है'' (2:22)।

3. प्रभु की वापसी की प्रतीक्षा करने के लिए प्रोत्साहन : (अध्याय 3)

पतरस विश्वासियों से विनती करते हैं कि वे सत्य में दृढ़ बने रहें और फिर उन ठट्ठा करने वालों से सावधान रहने की चेतावनी देते हैं जो यह कहकर उनका मन परिवर्तन करने का प्रयत्न करेंगे कि प्रभु यीशु दोबारा नहीं आएँगे। ''और कहेंगे, कि उसके आने की प्रतिज्ञा कहाँ गई? क्योंकि जब से बापदादे सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है जैसा सृष्टि के आरम्भ से था। परन्तु पतरस याद दिलाते हैं कि यह सच नहीं है। नूह के समय में परमेश्वर ने जल से पृथ्वी को नष्ट किया था और अब पृथ्वी आग से नष्ट होगी। ''प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं, पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सबको मन फिराव का अवसर मिले।'' (3:9)। ''परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आ जाएगा। उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएँगे और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएँगे। जबकि ये सब वस्तुएँ इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए। और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए, और उसके जल्द आने के लिए कैसा यत्न करना चाहिए, जिसके कारण आकाश आग से पिघल जाएँगे और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएँगे। पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी।'' (3:10-13) अत: पतरस विश्वासियों से कहते हैं कि वे तैयार रहें। ''इसलिए हे

प्रियो, जबकि तुम इन बातों की बाट जोहते हो, तो यत्न करो कि तुम शांति से उसके सामने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो, और हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार समझो।'' (3:14-15)

''इसलिए हे प्रियो, तुम लोग पहले ही से इन बातों को जानकर चौकस रहो, ताकि अधर्मियों के भ्रम में फँसकर अपनी स्थिरता को कहीं हाथ से खो न दो। पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अब भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।'' (3:17-18)।

प्रश्न :

1. पतरस ने कितने पत्र लिखे और किसके लिए लिखे?
2. 1 पतरस की पत्री का विषय वस्तु क्या है?
3. कष्ट उठाने के विषय में पतरस क्या कहते हैं?
4. 2 पतरस के कौन से मुख्य विषय हैं?
5. 2 पतरस के अनुसार कलीसिया के सामने कौन सी समस्या थी?
6. प्रभु का आगमन निकट है अत: पतरस विश्वासियों को क्या सलाह देते हैं?

पाठ-38

याकूब और यहूदा - एक अवलोकन

A. याकूब :

लेखक - नए नियम में चार लोगों का नाम याकूब था : 1. जब्दी के पुत्रों में से एक याकूब जो यूहन्ना का भाई था। (मरकुस 1:19) 2. हलफई का पुत्र याकूब (मरकुस 3:18) 3. यहूदा (इस्करियोती नहीं) का पिता याकूब (लूका 6:16) 4. प्रभु यीशु का भाई याकूब (गला. 2:9)। प्रभु यीशु के सेवाकाल के दौरान उनके भाइयों में से किसी ने भी प्रभु पर विश्वास नहीं किया (यूहन्ना 7:5)। संभवत: प्रभु के जी उठने के पश्चात् प्रभु के भाई याकूब ने उन पर विश्वास किया (1 कुरि. 15:7)। बाद में याकूब को कलीसिया के खम्भों में गिना जाने लगा (गला. 2:9)। बाइबल के अधिकतर विद्वान यह मानते हैं कि याकूब ने यह पत्री ईस्वी सन् 45 और 49 के मध्यकाल में लिखी। अत: यह नए नियम की पुस्तकों में पहले लिखी गई पुस्तक है। फिर भी यह हमारे लिए भी उतनी ही लागू होती है जिनता उनके लिए थी। इस पत्री को हम तीन मुख्य भागों में बाँट सकते हैं। 1. विश्वास की परख (1:1-18) 2. विश्वास के विशिष्ट लक्षण (1:19-5:6) 3. विश्वास की जीत (5:7-20)।

1. विश्वास की परख : (1:1-18)

पत्री के आरंभ में ही याकूब परीक्षा के समय में खरे विश्वास के गुणों के बारे में बताते हैं। ये परीक्षाएँ हमें प्रभु पर निर्भर होना सिखाती हैं। ''धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों से की है।'' (पद 12)। याकूब आगे कहते हैं, ''हे मेरे प्रिय भाइयो, धोख न खाओ। क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता

है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल-बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।'' (पद 17)। बुराई करने के लिए आई परीक्षा को आरंभ में ही रोका जाना चाहिए। अन्यथा उसके परिणाम भयंकर हो सकते हैं।

2. विश्वास के विशिष्ट लक्षण (1:9-5:6)

विश्वास के विशिष्ट लक्षणों के विषय में याकूब एक महत्वपूर्ण बात कहते हैं, ''हे मेरे प्रिय भाइयो, यह बात तुम जान लो : हर एक मनुष्य सुनने के लिए तत्पर और बोलने में धीर और क्रोध में धीमा हो।'' (पद 19)। सच्चा विश्वास कार्यकारी होना चाहिए। विश्वास के अनेक उदाहरणों के द्वारा समझाने के पश्चात् याकूब पूरी पुस्तक का मूल विषय बताते हैं। ''हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है, पर वह कर्म न करता हो, तो इससे क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है?'' (2:14)। अब्राहम और राहाब के जीवन का उदाहरण देकर याकूब ने इस बात को सिद्ध कर दिया।

कर्मों से कार्यों की ओर बढ़ते हुए याकूब बताते हैं कि कैसे जीवता विश्वास जीभ को काबू में कर सकता है। जीभ एक छोटा सा अंग है, परन्तु वह बड़ी तबाही ला सकता है। कार्यकारी विश्वास के द्वारा परमेश्वर की सामर्थ को लागू करने के द्वारा जीभ को काबू में किया जा सकता है। (3:1-12)। अध्याय 4 में भी याकूब विश्वास के विशिष्ट लक्षणों का विस्तार से वर्णन करते हैं।

3. विश्वास की जीत (5:7-20) :

याकूब अपने पाठकों को दु:ख में धीरज रखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ''इसलिए हे भाइयो, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो। देखो, किसान पृथ्वी की बहुमूल्य फसल की आशा रखता हुआ प्रथम और अंतिम वर्षा होने तक धीरज धरता है। तुम भी धीरज धरो, और अपने हृदय को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का आगमन निकट है। जिन भविष्यद्वक्ताओं ने प्रभु के नाम से बातें कीं, उनको दु:ख उठाने और धीरज धरने का एक आदर्श समझो।'' (5:7, 8, 10)।

B. यहूदा :

यहूदा अपनी पत्री में अपने पाठकों को प्रोत्साहित करता है कि ''उस विश्वास के लिए पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था।'' (1:3) क्योंकि कलीसिया में ही झूठी शिक्षा फैल रही थी अत: यहूदा विश्वासियों को उसके विरुद्ध चेतावनी देते हैं।

लेखक : यहूदा स्वयं को ''यीशु मसीह का दास और याकूब का भाई'' कहता है। (1:1)। इसी याकूब ने ''याकूब की पत्री'' लिखी और यह दोनों प्रभु यीशु के भाई थे। (मत्ती 13:55; मरकुस 6:4)। इस पत्र को हम चार भागों में बाँट सकते हैं-1. यहूदा का उद्देश्य (पद 1-4) 2. झूठे शिक्षकों का विवरण (पद 5-16) 3. झूठे शिक्षकों से सुरक्षा (पद 17-23) 4. आशीर्वाद (पद 24-25)।

1. यहूदा का उद्देश्य (1-4) :

यहूदा यह पत्र उन विश्वासियों के नाम लिखता है जो ''बुलाए हुए'', ''परमेश्वर पिता में प्रिय'' और ''मसीह में सुरक्षित'' हैं। और उनके लिए यहूदा की प्रार्थना है कि उन्हें दया और शांति और प्रेम बहुतायत से प्राप्त होता रहे। (पद 1-2) पत्र लिखने का कारण यहूदा कहते हैं कि ''हे प्रियो, जब मैं तुम्हें उस उद्धार के विषय में लिखने में अत्यंत परिश्रम से प्रयत्न कर रहा था जिसमें हम सब सहभागी हैं, तो मैं ने तुम्हें यह समझाना आवश्यक समझा कि उस विश्वास के लिए पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था। क्योंकि कितने ऐसे मनुष्य चुपके से हम में आ मिले हैं, जिनके इस दण्ड का वर्णन पुराने समय में पहले ही से लिखा गया था : ये भक्तिहीन हैं, और हमारे परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल डालते हैं, और हमारे एकमात्र स्वामी और प्रभु यीशु मसीह का इन्कार करते हैं।'' (पद 3-4)। विश्वास के शत्रु चुपके से कलीसिया में घुस आए थे और मसीही विश्वासियों को सत्य के मार्ग से भटका रहे थे। अत: यहूदा उनसे कहते हैं कि ''विश्वास के लिए पूरा यत्न करो।''

2. झूठे शिक्षकों का विवरण (पद 5-16)

इस हिस्से में यहूदा झूठे शिक्षकों के बारे में कुछ स्पष्ट बातें कहते हैं—

a. वे परमेश्वर के न्याय के अधीन हैं (5-7) : इन झूठे शिक्षकों पर परमेश्वर का दंड आएगा जिस प्रकार विश्वास न करने वाले इस्राएलियों पर, स्वर्ग से गिराए गए स्वर्गदूतों पर और सदोम और अमोरा के लोगों पर आया था।

b. वे ईश्वर-निंदक हैं (8-10) : ''ये स्वप्नदर्शी भी अपने-अपने शरीर को अशुद्ध करते, और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं, और ऊँचे पदवालों को बुरा भला कहते हैं।'' (पद 8)।

c. वे आत्मिक रूप से शून्य हैं (पद 11-13) :

यहूदा इन झूठे शिक्षकों की तुलना तीन विद्रोह करने वालों के साथ करते हैं—कैन, बिलाम और कोरह जिन पर परमेश्वर का दण्ड आया। उनके चरित्र की तुलना यहूदा सृष्टि की पाँच स्वाभाविक बातों से करता है 1. समुद्र में छिपी हुई चट्टान, 2. निर्जल बादल, 3. निष्फल पेड़, 4. समुद्र के प्रचण्ड हिलकोरे 5. डाँवाडोल तारे।

d. उनके मार्ग भक्तिहीन हैं (पद 14-16) :

सब भक्तिहीनों को उनके अभक्ति के सब कामों के विषय में जो उन्होंने भक्तिहीन होकर किए हैं, उन सब का न्याय प्रभु करेंगे।

3. झूठे शिक्षकों से सुरक्षा (पद 17-23) :

शत्रुओं के बारे में विस्तृत विवरण देने के पश्चात् यहूदा अपने पाठकों से कहते हैं, ''पर हे प्रियो, तुम उन बातों को स्मरण रखो जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरित पहले ही कह चुके हैं।'' (पद 17)। उनकी आत्मिक सुरक्षा के लिए यहूदा आगे कहते हैं कि ''पर हे प्रियो, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए, अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो; और अनन्त जीवन के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की बाट

जोहते रहो।'' (पद 20-21)। जब वे अपने विश्वास में दृढ़ रहेंगे तब दूसरों की सहायता कर सकेंगे। ''उन पर जो शंका में हैं दया करो, और बहुतों को आग में से झपटकर निकालो, और बहुतों पर भय के साथ दया करो।'' (22-23)।

4. यहूदा का आशीर्वचन (पद 24-25) :

परमेश्वर की अचूक सुरक्षा का बयान करने वाले शब्दों से यहूदा पत्र के अंत में आशीर्वचन कहते हैं : ''अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के सामने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है, उस एकमात्र परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता की महिमा और गौरव और पराक्रम और अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी हो और युगानुयुग रहे। आमीन।'' (पद 24-25)।

प्रश्न :

1. पत्री का लेखक याकूब कौन था?
2. याकूब की पत्री का मुख्य विषय क्या है?
3. इस पत्री को किन भागों में बाँटा गया है?
4. जीभ के विषय में याकूब क्या कहते हैं?
5. पत्री का लेखक यहूदा कौन था?
6. यहूदा की पत्री का क्या उद्देश्य था?
7. झूठे शिक्षकों का विवरण दें।
8. झूठे शिक्षकों से हम अपना बचाव कैसे कर सकते हैं?
9. यहूदा के आशीर्वचन याद करें।

पाठ–39

1, 2, 3 यूहन्ना – एक अवलोकन

1 यूहन्ना :

यूहन्ना ने आसिया की कलीसियाओं में सेवा कार्य करते हुए लगभग ईस्वी सन् 90 में इफिसुस से यह पत्री लिखी। सताने वालों के हाथों पतरस और पौलुस की मृत्यु हो चुकी थी। अंतिम जीवित प्रेरित यूहन्ना थे। यूहन्ना की पहली पत्री यूहन्ना रचित सुसमाचार पर ही आधारित है। ''परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।'' (यूहन्ना 20:31)। यूहन्ना ने पहली पत्री लिखी ताकि जो विश्वास करते हैं, उन्हें अनंत जीवन के विषय में निश्चय हो। ''मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।'' (1 यूहन्ना 5:13)। यह निश्चय ही हमें उन झूठी शिक्षाओं से बचाएगा जो हमें परमेश्वर से दूर कर सकती हैं।

परमेश्वर ज्योति हैं : परमेश्वर प्रेम हैं : परमेश्वर जीवन हैं :

यूहन्ना परमेश्वर के साथ एक सुखद संगति का आनंद उठा रहे थे और चाहते थे कि उनकी आत्मिक संतानों को भी उस संगति का आनंद प्राप्त हो।

परमेश्वर ज्योति हैं :

''पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।

परमेश्वर प्रेम हैं :

परमेश्वर प्रेम हैं अतः हमें भी प्रेम में चलना चाहिए। यूहन्ना कहते

हैं कि यदि हम प्रेम नहीं करते तो हम परमेश्वर को नहीं जानते। हमारा प्रेम शब्दों से नहीं बल्कि व्यावहारिक होना चाहिए। बाइबल जो प्रेम सिखाता है वह शर्त रहित प्रेम है।

परमेश्वर जीवन हैं :

परमेश्वर से संगति करनेवालों में परमेश्वर से प्राप्त जीवन के गुण होने चाहिए। आत्मिक जन्म के साथ ही आत्मिक जीवन का आरंभ होता है। प्रभु यीशु पर किया हुआ विश्वास हमें अनंत जीवन देता है। अतः जो परमेश्वर के साथ संगति में रहेगा वह परमेश्वर की ज्योति, प्रेम और जीवन में चलेगा।

यूहन्ना कहते हैं, ''जिसका यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, और जो कोई उत्पन्न करने वाले से प्रेम रखता है, वह उससे भी प्रेम रखेगा जो उससे उत्पन्न हुआ है। जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम जानते हैं कि हम परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम रखते हैं।'' (5:1-2)। इस विश्वास का परिणाम होता है-संसार पर विजय प्राप्त करना। (पद 4-5)। हमारे विश्वास की गवाही आत्मा देता है। (पद 7)। तब हम परमेश्वर के अनंत वायदों के विषय में पढ़ते हैं (पद 11-13) जो हमें प्रार्थना करने के लिए हियाव देता है (पद-14-15)। दूसरों को पाप में से निकालने में हमारी सहायता करता है (पद 16-17), उस दुष्ट के विरुद्ध बचाव (पद 18), संसार पर विजय (पद 19) और परमेश्वर के साथ हमारे संबंध का निश्चय देता है। (पद 20)। पत्र का अंत एक चेतावनी के साथ है। ''हे बालको अपने आप को मूरतों से बचाए रखो।'' (पद 21)। यूहन्ना यहाँ किन मूरतों की बात कह रहे हैं? अपने जीवन में जिस भी व्यक्ति या वस्तु को हम परमेश्वर से पहले स्थान देते हैं वह हमारे जीवन की मूरत है। यह धन, संपत्ति, दौलत, शक्ति, लोग या प्रतिष्ठा कुछ भी हो सकता है। इन सबके दाता परमेश्वर को हमें अपने जीवन में सबसे मुख्य स्थान देना चाहिए।

2. यूहन्ना :

यूहन्ना की दूसरी पत्री में काफी कुछ पहली पत्री का ही विषय वस्तु है। यूहन्ना झूठे शिक्षकों के विरुद्ध चेतावनी देते हैं और अपने पाठकों को प्रेम में चलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यह पत्र यूहन्ना ने ''चुनी हुई महिला और उसके बच्चों'' के नाम लिखा था।

इस पत्री को चार भागों में बाँटा जा सकता है। परिचय (2 यूहन्ना 1-3), सत्य और प्रेम में चलने के लिए प्रोत्साहन (4-6), झूठे सिद्धान्तों के विरुद्ध खड़े होने के लिए निर्देश (पद 7-11) और उपसंहार (12-13)।

परिचय (2 यूहन्ना 1-3) :

यूहन्ना अपने पाठकों के प्रति गहरी भावनाएँ प्रकट करते हैं। उनके लिए उसका प्रेम ''सत्य'' पर आधारित है। ''वह सत्य जो हम में स्थिर रहता है, और सर्वदा हमारे साथ अटल रहेगा।'' (पद 2)। फिर यूहन्ना अपने पाठकों को आशीर्वाद देते हैं- ''परमेश्वर पिता, और पिता के पुत्र यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और दया और शांति, सत्य और प्रेम सहित हमारे साथ रहेंगे।'' (पद 3)।

सत्य और प्रेम में चलने के लिए प्रोत्साहन (पद 4-6) :

यूहन्ना इस बात से खुश है कि कुछ लोग सत्य पर चल रहे हैं। इस बात से पता चलता है कि इन कुछ को छोड़ अन्य लोग उस मार्ग पर नहीं चल रहे। अत: पद 5-6 में कहते हैं-''मैं तुझे कोई नई आज्ञा नहीं देता पर वही जो आरम्भ से हमारे पास है, लिखता हूँ और तुझ से विनती करता हूँ कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें। और प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलें। यह वही आज्ञा है जो तुम ने आरम्भ से सुनी है और तुम्हें इस पर चलना भी चाहिए।''

झूठे सिद्धान्तों के विरुद्ध खड़े होने के लिए निर्देश (7-11) :

यद्यपि झूठे शिक्षक प्रभु यीशु के विषय में आदरपूर्वक बात करते थे तौभी वे प्रभु के विषय में सत्य का इंकार करते थे। प्रभु की शिक्षाओं में

अपनी बातें जोड़कर सिखाते थे। अतः यूहन्ना कहते हैं–''बहुत से ऐसे भरमाने वाले जगत में निकल आए हैं, जो यह नहीं मानते कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया। भरमाने वाला और मसीह विरोधी यही है। अपने विषय में चौकस रहो कि जो परिश्रम हमने किया है उसको तुम गवाँ न दो, वरन् उसका पूरा प्रतिफल पाओ।'' (पद 7-8)।

यूहन्ना कहते हैं कि जो कोई सत्य की शिक्षा से भटक जाता है और ''उसमें बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं, जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है उसके पास पिता भी है और पुत्र भी। (पद 9)। ऐसे लोगों को अपने घर में आने देना या उनको नमस्कार करना उसके बुरे कामों में हमें साझीदार बनाता है।'' (पद 11)।

उपसंहार (पद 12-13) :

बड़े आनंद और उनसे मिलने की आशा के साथ यूहन्ना अपने पत्र का अंत करते हैं–''आशा है कि मैं तुम्हारे पास आऊँगा और आमने-सामने बातचीत करूँगा, जिस से तुम्हारा आनंद पूरा हो।'' (पद 12)।

3 यूहन्ना :

यूहन्ना की दूसरी और तीसरी पत्री में काफी समानताएँ हैं। दोनों ही लगभग एक ही समय में लिखी गई थीं। दोनों पत्रों के विषय-वस्तु लगभग एक ही समान है जो सत्य और प्रेम पर आधारित है। 2 यूहन्ना झूठे शिक्षकों को स्वीकारने के बारे में चेतावनी देता है और 3 यूहन्ना सच्चे मसीहियों को स्वीकार न करने के विषय में चेतावनी देता है। 2 यूहन्ना में प्रेम को संतुलित करने के लिए सत्य की आवश्यकता थी और 3 यूहन्ना में सत्य को संतुलित करने के लिए प्रेम की आवश्यकता बताई गई है।

यूहन्ना की तीसरी पत्री तीन पुरुषों पर केंद्रित की गई है। पहला, गयुस जो यूहन्ना का मित्र था और यह पत्र उसी के नाम लिखा गया था। गयुस प्रेम करने वाला, दानी और दयालु था और सहायता करने के लिए हमेशा तैयार रहता था। दूसरा व्यक्ति दियुत्रिफेस था, जो समस्या

उत्पन्न कर रहा था। यद्यपि वह अच्छे परिवार से था, परन्तु वह घमंडी, असत्कारी और अलग-थलग रहने वाला व्यक्ति था।

तीसरा व्यक्ति दिमेत्रियुस था। संभवतः इसी के हाथ से यूहन्ना ने यह पत्र भेजा था।

गयुस की प्रशंसा (पद 1-8) :

यूहन्ना चार बार गयुस को ''प्रिय'' कहके संबोधित करते हैं। गयुस के साथ यूहन्ना की मित्रता ''सत्य'' पर आधारित थी, अर्थात् सुसमाचार का सत्य जो मसीह के विश्वासियों में एकता उत्पन्न करता है। यूहन्ना कहते हैं-''हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है कि जैसे तू आत्मिक उन्नति कर रहा है, वैसे ही तू सब बातों में उन्नति करे और भला चंगा रहे।'' (पद 2)। यूहन्ना के शब्दों के द्वारा हम गयुस के अच्छे स्वभाव के बारे में जान सकते हैं-''उन्होंने कलीसिया के सामने तेरे प्रेम की गवाही दी है।'' (पद 6)। वह सत्य में विश्वासयोग्य था। अपने अच्छे गुणों के कारण वह अन्य लोगों की ईमानदारी को पहचानता था। फिर प्रेम के साथ उनकी सहायता करता था, ''जिस प्रकार परमेश्वर के लोगों के लिए उचित है''। (पद 6)। यूहन्ना कहते हैं, ''हमें ऐसों का स्वागत करना चाहिए, जिससे हम भी सत्य के पक्ष में उनके सहकर्मी हों।''

दियुत्रिफेस का सामना (पद 9-11) :

गयुस के स्वभाव के विपरीत, दियुत्रिफेस परमेश्वर के कार्य की नहीं, बल्कि अपनी ही बड़ाई चाहता था। ''दियुत्रिफेस, जो उनमें बड़ा बनना चाहता है, हमें ग्रहण नहीं करता। इसलिए जब मैं आऊँगा तो उसके कामों को जो वह कर रहा है, सुधि दिलाऊँगा, कि वह हमारे विषय में बुरी-बुरी बातें बकता है, और इस पर भी सन्तोष न करके आप ही भाइयों को ग्रहण नहीं करता, और उन्हें, जो ग्रहण करना चाहते हैं मना करता है और कलीसिया से निकाल देता है।'' (पद 10)।

दिमेत्रियुस की सराहना (पद 12) :

संभवतः वह दिमेत्रियुस ही था जिसके साथ दियुत्रिफेस ने दुर्व्यवहार

किया था। परन्तु यूहन्ना उसका अनुमोदन करते हुए कहते हैं–''दिमेत्रियुस के विषय में सबने, वरन् सत्य ने भी आप ही गवाही दी, और हम भी गवाही देते हैं, और तू जानता है कि हमारी गवाही सच्ची है।'' (पद 12)।

अन्तिम अभिवादन (पद 13-14) :

अपने पत्र के अन्त में यूहन्ना गयुस से मिलने की इच्छा प्रकट करते हुए कहते हैं, ''मुझे तुझ को बहुत कुछ लिखना तो था, परन्तु स्याही और कलम से लिखना नहीं चाहता। पर मुझे आशा है कि तुझ से शीघ्र भेंट करूँगा, तब हम आमने-सामने बातचीत करेंगे।'' (पद 13)। यूहन्ना पत्र के अन्त में कहते हैं, ''तुझे शांति मिलती रहे।'' (पद 15)।

प्रश्न :

1. यूहन्ना के पत्रों के विशिष्ट गुण क्या हैं?
2. उसके पत्रों का विषय-वस्तु और उद्देश्य क्या हैं?
3. नए नियम में ''मूरत'' की परिभाषा क्या है?
4. यूहन्ना ने अपनी पत्रियों में कौन-कौन सी चेतावनियाँ दी हैं?

पाठ-40

इब्रानियों - एक अवलोकन

लेखक :

इस पत्र के लेखक ने अपना नाम नहीं बताया है। अनेक लेखकों का नाम इस पत्री से जोड़ा जाता है जिनमें सर्वप्रथम पौलुस प्रेरित का नाम आता है। लेखक की शैली से कुछ लोग अंदाज लगाते हैं कि पौलुस ने यह पत्री इब्रानी भाषा में लिखी और लूका ने उसका यूनानी भाषा में अनुवाद किया। परन्तु इस बात पर भी संदेह उठता है क्योंकि इब्रानी भाषा में लिखी गई पत्री कभी भी पाई नहीं गई।

संभावना इस बात की है कि नीरो सम्राट के समय में विश्वासियों पर जब सताव हो रहा था उस समय उन्हें यह पत्री प्राप्त हुई थी। संभवत: यह पत्री उस समय लिखी गई जब यरूशलेम का मंदिर नष्ट नहीं हुआ था (इब्रा. 10:11) रोमी लोगों ने ईस्वी सन् 70 में यरूशलेम और मंदिर को नाश किया था। अत: यह पत्री लगभग ईस्वी सन् 65 में लिखी गई थी।

पत्र का उद्देश्य :

इब्रानी मसीही लोग अक्सर स्वयं से यह प्रश्न पूछते थे-''मसीही विश्वास में मंदिर, बलिदान, याजकपद आदि का क्या महत्व है। क्या हम उन्हें सदा के लिए समाप्त कर सकते हैं? आखिर वह सब भी परमेश्वर की व्यवस्था का भाग है। तब फिर हम क्या करें?'' अत: इस पत्री का लेखक इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से देता है।

मुख्य विषय-वस्तु :

यद्यपि इस पत्री की तारीख और लेखक एक रहस्य ही है, तौभी इस पत्र का संदेश सुस्पष्ट है। इब्रानियों का मुख्य विषय-वस्तु ''उत्तम'' शब्द के उपयोग में हम पाते हैं। (1:4; 6:9; 7:7; 19, 22; 8:6; 9:23; 10:34; 11:16, 35, 40; 12:24)। मसीह के व्यक्तित्व और कार्य की उत्तमता का वर्णन करने के लिए ''सिद्ध'' और ''स्वर्गीय'' का भी

काफी उपयोग किया गया है। जो हमें एक ''उत्तम'' प्रकटीकरण, स्थान, याजकपद, वाचा, बलिदान और सामर्थ देता है। दूसरे शब्दों में - लेखक अपने पाठकों को परछाई के लिए वास्तविक वस्तु को छोड़ देने और पुराने यहूदी रीति-रिवाज़ के लिए मसीहियत को छोड़ देने से रोकता है।

मसीह की श्रेष्ठता के विषय-वस्तु को मानते हुए हम इस पत्री को इस तरह क्रमबद्ध कर सकते हैं—एक व्यक्ति के रूप में मसीह की श्रेष्ठता (1:1-4:13); हमारे महायाजक के रूप में मसीह की श्रेष्ठता (4:14-10:18); मसीही जीवन जीने के लिए एक आदर्श के रूप मे मसीह की श्रेष्ठता (10:19-13:25)।

यीशु मसीह : श्रेष्ठ व्यक्ति (1:1-4:13) :

भविष्यद्वक्ताओं से श्रेष्ठ :

लेखक बिना किसी अभिवादन या परिचय के, सीधे अपने विषय पर आता है। भविष्यद्वक्ता दिव्य प्रेरणा के द्वारा परमेश्वर के संवाददाता थे। फिर भी उनकी सेवकाई टुकड़ों में बंटी हुई और अधूरी थी। उनमें से हर एक को एक सीमा तक प्रकटीकरण दिया गया, परन्तु वह अधूरा था। उदाहरण के लिए-यशायाह पर यह प्रकट किया गया कि प्रभु यीशु एक कुँवारी से जन्म लेंगे (यशायाह 7:14)। परन्तु जन्म का स्थान मीका पर प्रकट किया गया। (मीका 5:2)। प्रभु की मृत्यु का तरीका दाऊद पर प्रकट किया गया (भजन 22:16)। भविष्यद्वक्ता परमेश्वर की वाणी को लोगों को बताते थे, परन्तु वे उस वचन के उद्घोषक थे ''जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है।'' (1:2)। यद्यपि उन्होंने परमेश्वर विषय में बातें की, परन्तु मसीह स्वयं ''उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है।'' (पद 3)। अतः वह हर प्रकार से भविष्यद्वक्ताओं से श्रेष्ठ है।

स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ :

''प्रभु यीशु पापों को धोकर ऊँचे स्थानों पर महामहिमन् के दाहिने

जा बैठा।'' (पद 3) यह कार्य मात्र प्रभु यीशु ही कर सकते थे। ''और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उसने उनसे बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया।'' (पद 4)। प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र हैं। अत: वह कहते हैं-''परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत् करें।'' (पद 6)। स्वर्गदूतों के विषय में कहा गया है, ''क्या वे सब सेवा टहल करने वाली आत्माएँ नहीं जो उद्धार पाने वालों के लिए सेवा करने को भेजी जाती हैं?'' (पद 14)। सर्वशक्तिमान राजा उद्धारकर्ता प्रभु यीशु सब स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ हैं।

मूसा से श्रेष्ठ :

लेखक मूसा और प्रभु यीशु की तुलना करता है। ''मूसा परमेश्वर के सारे घर में विश्वासयोग्य था।'' (पद 3)। परन्तु यीशु मूसा से इतना बढ़कर महिमा के योग्य समझा गया है, जितना कि घर का बनाने वाला घर से बढ़कर आदर रखता है।'' परन्तु मूसा के विषय में कहता है-''मूसा तो परमेश्वर के सारे घर में **सेवक** के समान विश्वासयोग्य रहा कि जिन बातों का वर्णन होनेवाला था, उनकी गवाही दे। परन्तु मसीह **पुत्र** के समान परमेश्वर के घर का अधिकारी है, और उसका घर हम हैं।'' (पद 5-6)। उस पर विश्वास करके यदि हम उसके मार्गों पर चलें (पद 7-19) तब हम उसके विश्राम में प्रवेश करेंगे जो है अनंत जीवन। (अध्याय 4)।

यीशु मसीह : श्रेष्ठ महायाजक (4:14-10:18) :

प्रभु यीशु महान महायाजक हैं जो हमारे लिए विनती करते हैं। प्रभु यीशु के बिचवई के कार्य का लेखक विस्तारपूर्वक वर्णन करता है। सांसारिक याजकों की सेवकाई अस्थायी थी, परन्तु हमारे प्रभु यीशु अनंतकाल के लिए पिता के सम्मुख हमारे लिए बिचवई का कार्य करते हैं। प्रभु की वाचा नई और उत्तम है। प्रभु का बलिदान पवित्र, सिद्ध और सदाकाल का है। पुराने नियम के याजक जो हारून के वंशज थे, परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के लिए तंबू के परमपवित्र स्थान में जाते थे। परन्तु प्रभु यीशु, जो हमारा महायाजक है, ''स्वर्गों से होकर गया है'' (4:14)।

''क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दु:खी न हो सके, वरन् वह सब बातों में परखा तो गया तौभी निष्पाप निकला। इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बाँधकर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएँ जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।'' (पद 15-16)। लेखक अपने पाठकों को आश्वासन देता है कि वे भी अब्राहम की तरह अपने आत्मिक जीवन में आगे बढ़ सकते हैं, और परमेश्वर के वायदों पर विश्वास कर सकते हैं क्योंकि ''वह आशा हमारे प्राण के लिए ऐसा लंगर है, जो स्थिर और दृढ़ है, और परदे के भीतर तक पहुँचता है; जहाँ यीशु ने मलिकिसिदक की रीति पर सदाकाल का महायाजक बनकर, हमारे लिए अगुआ के रूप में प्रवेश किया है।'' (पद 19-20)। इसका अर्थ यह है कि यीशु मसीह हारून के क्रम में नहीं, बल्कि मलिकिसदक के क्रम में याजक है। (भजन 110:4)।

कौन है यह मलिकिसिदक जिसकी तुलना प्रभु यीशु से की गई है? उसके नाम का अर्थ है ''धार्मिकता का राजा''। वह शालेम का राजा था, जिसने अब्राहम को आशीष दी और अब्राहम से दसवाँ अंश लिया। (उत्पत्ति 14:18-20)। मलिकिसिदक के पूर्वजों के बारे में वचन कुछ नहीं कहता। लेखक का उद्देश्य भी यही था। इस राजा और याजक ने अपना पद वंशावली के आधार पर नहीं, परन्तु दिव्य नियुक्ति के आधार पर प्राप्त किया था।

यही बात प्रभु यीशु मसीह के विषय में भी सत्य ठहरती है। प्रभु यीशु लेवी के गोत्र के याजक क्रम में नहीं, बल्कि यहूदा के गोत्र में उत्पन्न हुए थे। यह प्रभु के याजक पद के दिव्य स्वभाव की ओर इंगित करता है और उस वाचा के बारे में बताता है जो नई और उत्तम है।

मसीह का बलिदान पुराने नियम के बलिदानों से श्रेष्ठ है :

''हर एक याजक तो खड़े होकर प्रतिदिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी भी दूर नहीं कर सकते, बार-बार चढ़ाता है। परन्तु प्रभु यीशु तो पापों के बदले एक ही बलिदान

सर्वदा के लिए चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा।'' (10:11-12)। जो लोग मसीह में हैं वे व्यवस्था से बेहतर एक नए और उत्तम वाचा के भागी हैं। ''मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिए एक बार बलिदान हुआ, और जो लोग उसकी बाट जोहते हैं, उनके उद्धार के लिए दूसरी बार बिना पाप उठाए हुए दिखाई देगा।'' (9:28)।

अध्याय 8-10 में लेखक इस बात का उदाहरण देते हैं कि पुराने नियम का याजकीय क्रम वास्तविकता की परछाई मात्र थी। ''उस पहली वाचा में सेवा के नियम थे, और परदे के पीछे वह तम्बू था, जो परमपवित्र स्थान था जो इस जगत का था।'' (पद 9:1) ''परन्तु जब मसीह आनेवाली अच्छी-अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया, तो उसने और भी बड़े, और सिद्ध तम्बू से होकर जो हाथ का बनाया हुआ नहीं अर्थात् इस सृष्टि का नहीं, और बकरों और बछड़ों के लहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लहू के द्वारा, एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया।'' (9:11-12)।

यीशु मसीह : जीवन का श्रेष्ठ स्रोत (10:19-13:25) :

लेखक ने जिन सत्यों का वर्णन किया उनके आधार पर पद 19 को शब्द ''इसलिए'' से आरंभ करके कहता है-''इसलिए हे भाइयो, जब हमें यीशु के लहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है, जो उसने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर, हमारे लिए अभिषेक किया है।'' (10:19)। ''तो आओ, हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर ''परमेश्वर के समीप'' जाएँ। (पद 22)। क्योंकि परमेश्वर ''सच्चा'' है। (पद 23)। पिछले दिनों के बारे में लेखक कहता है-'परन्तु उन पिछले दिनों को स्मरण करो, जिनमें तुम ज्योति पाकर दु:खों के बड़े संघर्ष में स्थिर रहे।'' (पद 32)। अत: अब उन्हें दृढ़ता से खड़े रहना है और यहूदी मत में वापस नहीं जाना है।

सच्चे विश्वास के परिणाम का उदाहरण देते हुए लेखक ने अध्याय

11 में नए एवं पुराने नियम के अनेक विश्वासियों का वर्णन किया है। क्योंकि ''विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।'' (11:1)। इसलिए हमें क्या करना चाहिए यह लेखक 12:1 में बताते हैं-''इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमको घेरे हुए हैं, तो आओ, हर एक रोकने वाली वस्तु और उलझाने वाले पाप को दूर करके, वह दौड़, जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें; और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिसने उस आनंद के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दु:ख सहा और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा।'' (12:1-2)।

अपने पत्र के अन्त में लेखक कहते हैं ''भाइचारे की प्रीति बनी रहे।'' (13:1)। अनजान लोगों का अतिथि-सत्कार करके कैदियों की सुधि लेके, वैवाहिक संबंधों का आदर करके, और जीवन में संतोष करके वे मसीह के प्रेम को प्रकट करते हैं। (1-6)।

अंतिम अभिवादन में लेखक कहते हैं-''अपने सब अगुवों और सब पवित्र लोगों को नमस्कार कहो। तुम सब पर अनुग्रह होता रहे। आमीन।'' (13:24-25)।

प्रश्न :

1. इब्रानियों के लेखक के विषय में आप क्या जानते हैं?
2. इस पत्री को सर्वप्रथम किन लोगों ने पढ़ा?
3. इसे लिखने में लेखक का उद्देश्य क्या था?
4. मसीह यीशु भविष्यद्वक्ताओं से और याजकों से श्रेष्ठ हैं-इसकी व्याख्या करें।
5. विश्वास की परिभाषा दीजिए।